आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आयरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं ॥

एसो पंच णमोक्कारो,

सव्व-पावप्पणासणो,

मंगलाणं च सव्वेसिं,

पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 3

15 मार्च, 2006 फाल्गुन 2062

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुध्दता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ॲन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर की उपलब्धता

जलगावमें विशेष निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 ***संरक्षक***

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 ***संस्थापक***

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 ***प्रकाशक***

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182–183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141–2575997, फैक्स–0141–2570753

卐 ***सम्पादक***

डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24–25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291–2730081

卐 ***सह-सम्पादक***

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 ***भारत सरकार द्वारा प्रदत्त***

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 ***सदस्यता***

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/– संरक्षक सदस्यता-रू.5000/–
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/– त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/–
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/–
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू 10/–

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

से नूणं मए पुव्वं
कम्माणाणफला कडा
जेणाऽहं नाभिजाणामि,
पुट्ठो केणइ कण्हुई।।

- उत्तराध्ययन सूत्र २.४०

निश्चय ही मैंने कर्म किये हैं,
ज्ञाननिरोधक, दुःखकारी।
पूछा जाने पर कहीं किसी से,
मैं जान न पाता हितकारी।।४०।।

मार्च २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
फाल्गुन २०६२

वर्ष : ६३ *अंक* : ०३

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	७
प्रवचन-	स्वहित-परहित : दान में दोनों निहित	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	८
अध्यात्म-चिन्तन-	वीतरागता का लक्ष्य	-श्री सम्पतराज डोसी	१७
	लक्ष्मीपति बनें, लक्ष्मीदास नहीं	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	२५
	सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(३)	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	२९
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (२६)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	२१
तत्त्वज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (२८)	- श्री धर्मचन्द जैन	३४
	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(६)	- संकलित	४९
प्रेरक-प्रसंग-	लक्ष्यविहीन जीवन	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	२८
युवा-स्तम्भ-	सम्यक् मनन	- श्री गौतम प्रदीप	३७
नारी-स्तम्भ-	गर्भस्थ शिशु के प्रति मातृशक्ति के कर्त्तव्य	- श्री जसराज चौपड़ा	३९
बाल-स्तम्भ-	भूल की भयंकरता	-उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.	४५
कविता/गीत-	जय गजेन्द्र गुरु हीरा मान	- श्री प्रकाश कर्णावट	२०
	जीवन और मृत्यु	-डॉ. सागरमल जैन	२७
	गुरु महिमा	- श्री श्रीकान्त जैन	३३
	कुछ क्षणिकाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	४४
	चेतावनी	-श्री अनराज बोथरा	७१
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		३
युवक परिषद्-	त्रैमासिक प्रतियोगिता (९) का परिणाम		५१
बोर्ड परिणाम-	वरीयता सूची एवं परिणाम		५३
प्रतियोगिता-	दशवैकालिक सूत्र प्रतियोगिता परिणाम(२)		६१
स्वाध्यायी परिचय-	श्री प्रकाशचन्द जी कांकरिया, जलगाँव	-श्रीमती मोहनकौर जैन	७०
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		७२
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		७३
	बधाई/चुनाव		८०
	श्रद्धांजलि		८१
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		८५

सम्पादकीय

जैन पत्रकारिता की दिशा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

दिल्ली में १८-१९ मार्च २००६ को जैन पत्रकार सम्मेलन आयोजित है। पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ माना जाता है। इसमें वह शक्ति है जो जनता को जागरूक, सचेष्ट एवं ज्ञानवान बना सकती है। व्यक्ति एवं समाज को दिशा देने में पत्रकारिता की अपनी महती भूमिका है। आज दैनिक समाचार पत्रों में जहाँ राजनीतिक समाचारों को प्राथमिकता दी जाती है वहाँ देश-विदेश की प्रमुख घटनाओं, आर्थिक उत्थान-पतन, खेल, शिक्षा-संस्थान, स्वास्थ्य-विज्ञान आदि के समाचारों को भी स्थान मिलता है। किन्तु लूटपाट, हिंसा, बलात्कार आदि की घटनाओं को अधिक प्रमुखता से छापा जाता है। समाचार-पत्रों में आदर्श को कम एवं व्यवसाय को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। अखबारों में उन घटनाओं एवं विज्ञापनों को स्थान दिया जाता है, जो लोगों को पसन्द हों, भले ही वे उनके सोच को विकृत बनाते हों। जैन पत्रकारिता को इस सरणि का अनुकरण नहीं करना चाहिए। इसका उद्देश्य उच्च जीवन मूल्यों की स्थापना एवं व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक जीवन के सम्यक् मार्गदर्शन से जुड़ा हुआ होना चाहिए।

जैन पत्रकारिता का प्रारम्भ आज से १२६ वर्ष पूर्व सन् १८८० में प्रयाग से प्रकाशित 'जैन पत्रिका' से हुआ। इसके अनन्तर अजमेर से 'जैन प्रभाकर' एवं 'जैन गजट', मुरादाबाद से 'जैन हितैषी', मुम्बई से 'जैन हितेच्छु', 'जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस हेराल्ड', आरा से 'जैन सिद्धान्त भास्कर' आदि पत्र-प्रकाश में आए। 'जैन प्रकाश' हिन्दी एवं गुजराती भाषा में १९१३ में साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित हुआ। १९२९ में पं. जुगलकिशोर मुख्तार ने 'अनेकान्त' का सम्पादन प्रारम्भ किया। समाज सुधार की दृष्टि से सन् १९३४ में आगरा से प्रारम्भ 'ओसवाल सुधारक संगठन' का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा, जो शनैः शनैः 'ओसवाल सुधारक' एवं फिर 'ओसवाल' के नाम से प्रकाशित हुआ। इस पत्रिका का नारा था-

मंत्र फूंक संगठन शक्ति का, कुमति कुरीति निवारेगा।
सत्य समर्थक सजग सुधारक, सद्यः समाज सुधरेगा॥

'जैन हितैषी' के भीतरी पृष्ठ पर निम्नांकित छन्द प्रकाशित होता था-

सारे ही संघ स्नेह के सूत सों, संयुत हों, न रहे कोऊ द्वेषी,
प्रेमसों पाले स्वधर्म सभी, रहें सत्य के साँचे स्वरूप गवेषी।
बैर विरोध न हो मतभेदतें, हों सबके सब बन्धु शुभैषी,

भारत के हित को समझें सब, चाहत है यह जैन हितैषी।।

जनवरी, १९४३ में प्रारम्भ हुई 'जिनवाणी' पत्रिका ने जनवरी १९७१ में अपना लक्ष्य इस प्रकार अभिव्यक्त किया था- "मानव-मन की अन्तश्चेतना को ऊर्ध्वमुखीं बनाना उसकी महाप्रज्ञा को जाग्रत करना और भौतिक-विकास से उत्पन्न समस्याओं से संत्रस्त मानवता को नव आध्यात्मिक चेतना की ऊर्जा से आलोकित कर परम आनन्द की अनुभूति कराना इसका मूल लक्ष्य रहा है।"

आज जैन समाज पत्र-पत्रिकाओं की संख्या की दृष्टि से समृद्ध समाज है। जैन पत्रकारिता ने १२६ वर्षों की लम्बी यात्रा में आध्यात्मिक, नैतिक और धार्मिक मूल्यों की स्थापना के साथ समाज-सुधार और राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा में भी अपना योगदान किया है। इस समय देश-विदेश में ४०० से भी अधिक जैन पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। इनमें अधिकतर पत्रिकाएँ मासिक हैं, कुछ साप्ताहिक, पाक्षिक, त्रैमासिक और वार्षिक हैं। पत्र-पत्रिकाओं का संचालन सरल नहीं होता है। कुछ पत्रिकाएँ नई प्रारम्भ होती हैं तो कुछ बीच में ही दम तोड़ देती हैं।

पत्रिकाओं के माध्यम से ज्ञान-वृद्धि तो होती ही है, अंधविश्वास और कुरीतियों की भी चूलें हिलने लगती हैं। पारस्परिक समझ और व्यवहार का परिष्कार जैन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से संभव है। संदेह एवं किंकर्त्तव्यविमूढ़ दशा में ये पत्र-पत्रिकाएँ आगमों और संतों की वाणी के माध्यम से ज्योति-स्तम्भ का कार्य करती हैं। उच्च जीवन-मूल्यों की स्थापना में भी इनकी अपनी भूमिका है। किन्तु यह तभी संभव होता है जब जीवन की समस्याओं के साथ उनके निराकरण के रूप में सामग्री का प्रकाशन हो। प्रवचन, शोधालेख, तत्त्वज्ञान, समाज-सुधार, कविता, प्रेरक-प्रसंग तथा विचार-कण आदि के माध्यम से किस पाठक को क्या प्रेरणा मिल जाए, यह पाठक स्वयं ही जान सकता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि समाज में पहले की अपेक्षा पठन की प्रवृत्ति बढ़ी है। एक युग था जब शास्त्रों को श्रावक नहीं पढ़ा करते थे। वे शास्त्र मुनियों तक सीमित थे। श्रावक-श्राविका संतों के प्रवचनों के माध्यम से और उनके सान्निध्य से सीखते-सीखते अच्छे तत्त्वज्ञ श्रावक बन जाते थे। पहले मुद्रण की व्यवस्था न होने से भी शास्त्र सुलभ नहीं थे। लिपिकार एक शास्त्र की अन्य प्रतियाँ बनाने में व्यस्त रहते थे। किन्तु आज मुद्रण की व्यवस्था होने से शास्त्र भी सुलभ हैं, उनके अनुवाद भी उपलब्ध हैं। विदेशी विद्वानों ने भी जर्मन, अंग्रेजी आदि भाषाओं में अनुवाद किए हैं।

शिक्षा का भी पूर्वापेक्षा प्रसार हुआ है। पहले गिनती की जैन महिलाएँ पढ़ी-लिखी होती थीं। पुरुष भी व्यापार के लिए आवश्यकतानुसार पढ़ाई करते थे।

कठिन हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत आदि के ग्रन्थ समझना उनके लिए सरल नहीं था। किन्तु आज जैन समाज में शिक्षा का भी स्तर बढ़ा है, महिलाएँ भी शिक्षा के क्षेत्र में कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं। कुछ जैन परिवारों में तो पुरुषों से भी अधिक महिलाएँ शिक्षा पा रही हैं। शहर के लगभग प्रत्येक जैन परिवार में प्रतिदिन अखबार पढ़ा जाता है। इसी प्रकार पत्र-पत्रिकाओं के स्वाध्याय का भी प्रचलन बढ़ा है। अल्पसंख्यक जैन समाज में लगभग ४०० पत्रिकाएँ इसका प्रमाण हैं। कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट के आ जाने पर भी पत्र-पत्रिकाओं की महत्ता कम होने के आसार अभी प्रतीत नहीं होते।

पत्र-पत्रिकाओं के विभिन्न स्वरूप हैं। कतिपय पत्र-पत्रिकाएँ मात्र शोधालेखों से युक्त होती हैं। जैन विद्या के शोधार्थियों और विशिष्ट जिज्ञासुओं के लिए इनकी विशेष उपयोगिता है। जैन विद्या की महत्ता की स्थापना में तथा अन्य धर्म-दर्शनों से तुलना के संदर्भ में इन पत्रिकाओं की विशिष्ट महत्ता होती है। कुछ पत्र-पत्रिकाएँ जैन समाज की घटनाओं को प्रकाशित करने में ही रुचि रखती हैं। उन घटनाओं का यथोचित रूप में प्रकाशन होने से दूर-दूर तक सम्प्रेषण हो जाता है।

कुछ पत्र-पत्रिकाएँ किसी विशिष्ट संघ से संबंध रखती हैं, कुछ स्वतन्त्र संस्थाओं से प्रकाशित हैं तो कुछ व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकाएँ भी हैं। सब पत्र-पत्रिकाओं के संचालन की अपनी नीतियाँ होती हैं। जो पत्र-पत्रिकाएँ संघ-विशेष से प्रकाशित होती हैं, उनमें अपने संघ-सम्प्रदाय का पोषण नीति का प्रमुख अंग होता है, स्वतंत्र संस्थाओं से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ क्रान्तिकारी कदम उठाने में सक्षम होती हैं, बशर्ते उनका उद्देश्य एवं अनुशासन स्पष्ट हो। व्यक्तिगत पत्र-पत्रिकाओं में आर्थिक सम्बल की चाह होने के कारण वे समष्टि हित के समाचारों को प्रकाशित करके भी कहीं क्षुद्र स्वार्थ में भटक जाती हैं। समस्या तब होती है जब पत्रकार का लक्ष्य किसी घटना को उछाल कर अर्थार्जन करना होता है अथवा सौदेबाजी करके उसको न छापना या मोड़ देना होता है। निजी व्यवसाय के रूप में पनपी कुछ पत्रिकाएँ समाज को सूचनाएँ तो चटपटे रूप में प्रकाशित करती हैं, किन्तु वे समाज का भला नहीं करती। जो पत्र-पत्रिकाएँ व्यक्ति के जीवन-निर्माण और सम्यक् सोच को बढ़ावा देती हैं उनकी उपयोगिता सभी लोगों के लिए सदैव रहती है।

पत्रकारिता की अपनी गरिमा होती है। प्रकाश्य सामग्री का सही चयन सम्पादक का प्रमुख कर्त्तव्य होता है। आपत्तिजनक और दिग्भ्रमित करने वाली सामग्री का प्रकाशन पत्रिका में न हो इसका सम्पादक को सदैव ध्यान रखना होता है। समाज के जहरीले पक्ष को द्वेषभाव से बार-बार उभारने से जहर समाप्त नहीं होता,

अपितु वैर-विरोध बढ़ता है। उस जहर के निवारण का उपाय हितभाव से सुझाते रहने एवं जहर को जहर के रूप में प्रतीत कराने से उसके दूर होने की संभावना बढ़ती है। इसी प्रकार पत्रिका में व्यक्ति सुधार की सामान्य रूप से चर्चा की जाती है। सम्बद्ध व्यक्ति उससे प्रभावित भी हो सकता है। आज जैन पत्रकारों में भी कभी-कभी गरिमा का अभाव देखा जाता है। दूसरों के लिए क्षुद्र शब्दों का प्रयोग गरिमाशाली व्यक्ति को शोभा नहीं देता।

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में दूसरा दोष है- जैन समाज का विभक्तीकरण। जैन एकता में पत्रकारिता की महती भूमिका है। विभिन्न संघ, सम्प्रदाय और साध्वाचार में भेद होने पर भी जैन समाज के ऐसे अनेक बिन्दु हैं जिन पर सब पत्रिकाओं को समवेत स्वर में आवाज उठानी चाहिए। जैन समाज की अपनी एक प्रभावक पहचान बननी चाहिए। इसकी कमी का अनुभव समाज के चिन्तनशील बुद्धिजीवी व्यक्तियों को होता है। समाज को गुमराह करने वाले साधुओं को पत्रकारों के द्वारा किसी प्रकार का बढ़ावा नहीं मिलना चाहिए। वे यदि साध्वाचार के विरोधी व्यवहार करते हैं तथा समाज में परस्पर कलह और द्वन्द्व को बढ़ाने के साथ श्रावकों को मिथ्या सीख देकर भ्रमित करते हैं तो ऐसे 'साधु' समाज के लिए किसी भी प्रकार से हितकारी नहीं हो सकते।

जैन पत्र-पत्रिकाओं में आधुनिक युग के अनुसार चिन्तनपूर्ण एवं सुगम सामग्री का प्रकाशन होना चाहिए जो युवकों और विज्ञान के छात्रों को भी धर्म के महत्त्व का बोध करा सके। धर्म का महत्त्व तब आसानी से समझ में आता है जब उसे वर्तमान जीवन के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाए। धर्म को भय एवं प्रलोभन के आधार पर नहीं, अपितु जीवन के सच्चे कल्याणकारी मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया जाना पत्रकार का लक्ष्य होना चाहिए।

परिवार में सत्संस्कारों का संचार भी जैन पत्रकार का प्रमुख लक्ष्य होता है। वह करुणा, दया, मैत्री, सहिष्णुता, क्षमा, सहकार, त्याग आदि जीवन मूल्यों को प्रस्तुत एवं पुष्ट करने का प्रयास करता है।

जैन पत्रकारिता के क्षेत्र में बालकों एवं युवकों के लिए अभी पर्याप्त सामग्री का प्रकाशन नहीं हो रहा है। उन्हें अच्छी पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने की प्रेरणा भी नहीं दी जाती है,जिसकी आज महती आवश्यकता है। समाज के सम्यक् निर्माण एवं जीवन मूल्यों की स्थापना के साथ जैनाचार का महत्त्व भी जैन पत्रकारिता का लक्ष्य होना चाहिए। एकता, समरसता एवं गरिमा के साथ जैन समाज अन्य समाजों के लिए प्रेरक बने, इस दृष्टि से भी पत्रकारों का चिन्तन चलना चाहिए।

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- यह सत्य है कि मन अत्यन्त चपल है, हठीला है और शीघ्र काबू में नहीं आता। किन्तु उस पर काबू पाना असंभव नहीं है। बार-बार प्रयत्न करने से अन्ततः उस पर काबू पाया जा सकता है।
- किसी उच्च स्थान पर पहुँचने के लिए एक-एक कदम ही आगे बढ़ाना पड़ता है।
- धर्म-शिक्षा/अभ्यास एवं वैराग्य के द्वारा मन को वशीभूत किया जा सकता है।
- जो शरीर के प्रति ममतावान् है, उसे शरीर के प्रतिकूल आचरण करने पर रोष उत्पन्न होता है। किन्तु जिसने शरीर को पर-पदार्थ समझ लिया है और जिसे उसके प्रति किंचित् भी ममता नहीं रह गई है, वह शरीर पर घोर से घोर आघात लगने पर भी रुष्ट नहीं होता।
- ज्ञान अपने आप में अत्यन्त उपयोगी सद्गुण है, किन्तु उसकी उपयोगिता विरतिभाव प्राप्त करने में है।
- जो विवेकशील साधक विरतिभाव के बाधक कारणों से बचता है, वही साधना में अग्रसर हो सकता है।
- सम्यग्दर्शन आदि भाव-रत्न आत्मा की निज सम्पत्ति हैं। इनसे आत्मा को हित और सुख की प्राप्ति होती है।
- जो मनुष्य भोगोपभोग में संयम नहीं रखता, वह प्रलोभनों का सामना नहीं कर सकता।
- जिस बुराई को मिटाना चाहते हो उसी का आश्रय लेते हो, यह तो उस बुराई को मिटाना नहीं, बल्कि उसकी परम्परा को चालू रखना है।
- समभाव की साधना की विशेषता यह है कि इससे व्यक्तिगत जीवन अत्यन्त उच्च, उदार, शान्त और सात्त्विक बनता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

स्वहित-परहित : दान में दोनों निहित

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर ने दान के विभिन्न आयाम प्रस्तुत किये हैं, जिनमें स्वहित और परहित कारक दान को जीवन में जीवन्त बनाने की प्रभावी प्रेरणा की है। पर्वाधिराज पर्युषण में 'दान-दिवस' के दिन विस्तृत विवेचना के साथ आचार्यप्रवर ने जोधपुर चातुर्मास में ६ सितम्बर १९९४ को यह प्रवचन फरमाया था। प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक नौरतन जी मेहता ने किया है। -सम्पादक

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का आज पाँचवा दिन है। सहज गति से चलने वाले ये परम पवित्र दिन कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष की ओर बढ़ रहे हैं। इन पावन दिनों का संदेश है- मानव! तू कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष की ओर कदम बढ़ा। अज्ञान से हटकर ज्ञान का प्रकाश कर। अश्रद्धा से हटकर आत्म-तत्त्व पर विश्वास कर। चारित्र में चरण बढ़ाकर कर्मों के बन्धन को तोड़। संचित कर्मों को अनशन से, विनय से, वैय्यावृत्त्य से, स्वाध्याय से, ध्यान से खपाने की कोशिश कर।

मानव-जीवन बचपन से लेकर अंतिम समय तक दान के सहारे ही आगे बढ़ता आया है। जन्म लेने के साथ माता का स्नेहदान मिलता है तो आगे चलकर परिवार का प्रेमदान, अड़ौसी-पड़ौसी का सहयोगदान, विद्यागुरु का ज्ञानदान, हुनर सिखाने वाले का इल्मदान इस तरह जीवन के अंत तक मानव-जीवन का दूसरों के सहयोग से विकास होता है। मोक्ष-मार्ग में जिन चार उपायों का कथन किया गया है, उनमें दान सबसे पहले है-

दानं सुपात्रं सुभगं च शीलं, तपो विचित्रं शुभ भावना च।
भवार्णवोत्तारणयानपात्रं, धर्मं चतुर्धा मुनयो वदन्ति॥

दान संसार-सागर से पार होने के लिए नौका या जहाज की तरह है। चार धर्मों में पहला दान-धर्म है। चार धर्म हैं- दान, शील, तप और भावना। इन चार धर्मों का जो भी आराधन करते हैं, वे लाभ प्राप्त करते हैं, किन्तु दान की महिमा निराली है। आपने उपवास किया, बेला-तेला-अठाई या मासखमण

किया, अनशन ही नहीं ऊनोदरी, रस-परित्याग आदि तप किए तो उसका लाभ स्वयं को मिलेगा। इसी प्रकार शील का लाभ भी स्वयं को मिलता है। शील पालने वाला स्वयं की शक्ति का वर्द्धन करता है, स्वयं के विकारों को घटाता है, स्वयं की बुद्धि निर्मल करता है। मतलब शील-पालन का खुद को लाभ मिलता है, दूसरों को लाभ नहीं होता। भावना भव नाशिनी है, भवों के बन्धन काटने वाली है। शुभ भावना का लाभ भी स्वयं को मिलता है। भावना वाला अपने हृदय को पवित्र बनाता है, स्वयं वैराग्य की ओर बढ़ सकता है, संसार की अनित्यता समझ सकता है और भावना से केवलज्ञान की प्राप्ति भी कर सकता है ऐसी प्रभावशाली भावना का स्वयं को लाभ है, दूसरों को नहीं। शील हो, तप हो या भावना हो इन सबसे स्वयं को लाभ मिलता है, लेकिन दान स्वयं के लिए तो लाभप्रद है ही और साथ में जिसे दिया जा रहा है उसको भी लाभान्वित करने वाला है।

दान जहाँ स्वयं की ममता-मूर्च्छा घटाता है, वहीं दूसरों के लिए भी उपयोगी होने से उभय लाभदायी है। अधर्म में देने के बजाय जो लोग सुपात्रदान में देकर अपने द्रव्य को पवित्र करते हैं तो वे पुण्य का उपार्जन भी करते हैं। दान स्वयं के लिए निर्जरा और पुण्य का कारण है तो सामने वाले के लिए तर्पण का काम करता है। दान स्वयं तक सीमित नहीं रहता, वह तिर्यंच या मानव जिन्हें भी दिया जाता है उन्हें भी लाभ पहुँचाता है। मानव ही क्या देव, देवेन्द्र, महेन्द्र भी हों, दान स्वयं को उपकृत करता है तो दूसरों के लिए भी उपकार रूप है। जहाँ दान के लिए शास्त्र में कथन है वहाँ आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी महाराज) ने भी श्रावक के आवश्यक कर्त्तव्यों में दान का वर्णन करते हुए अपनी भाषा में कहा-

सुपात्र दान के तीन भेद कर लेना।
साधु, श्रावक समदृष्टि को देना।
ज्ञान और अभयदान रस लीजे।
पात्र दान के भूषण ध्यान धरीजे॥
चित्त-वित्त अरु पात्र की महिमा गाई।
षट् कर्मो रा धन री करो कमाई॥
कहे मुनीश्वर सुनो बाई और भाई।

षट् कर्मों रा धन री करो कमाई॥

भारत की संस्कृति दान-प्रधान है। यहाँ शूरों, वीरों, तपस्वियों और जपियों के पहले दानियों का स्मरण किया जाता है। आपने शायद कहावत सुनी होगी- पहली प्रहर राजा कर्ण की। राजा कर्ण का स्मरण क्यों? क्योंकि वह दानी था।

भारत में अनेक दानी हुए हैं, जिन्होंने धन दिया, सम्पत्ति दी और जरूरत पड़ी तो घर के भण्डार खोल दिये। इससे अधिक क्या कहूँ इस देश के ऋषियों ने अपनी हड्डियाँ तक दान कर दीं। जिसके सहारे जीवन चल रहा है, उसे माँग लिया तो कवच और कुण्डल दान कर दिये। माँगने पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले दानी इस देश में हुए हैं।

दानी को यह कहने की जरूरत नहीं है कि तुम दान करो। सूर्य को कौन कहता है कि प्रकाश करो? नदियों को कौन कहता है बहती रहो? वृक्ष को कौन कहता है छाया दो? सूर्य बिना माँगे प्रकाश देता है, नदी स्वतः प्रवाहित होती है, वृक्ष सहज रूप से छाया देता है इसी तरह दानी पुरुष पाई हुई लक्ष्मी का सदुपयोग करता है तथा इसे अपना कर्त्तव्य समझता है।

दान क्या? दान की कई परिभाषाएँ हैं, अनेक भेद हैं। तीर्थंकर महावीर ने ठाणांग सूत्र के दसवें ठाणे में दस प्रकार के दान कहे हैं। गीताकार श्रीकृष्ण ने दान के तीन भेद करते हुए-तामस दान, राजस दान और सात्त्विक दान बताये हैं। इन्हीं को अधर्मीदान, व्यवहार दान और करुणा दान के नाम से भी कहा जा सकता है। अहं की पुष्टि और नाम की भावना से दिया गया दान अधर्मदान में गिना जाता है। नट-नटनियों को देना, व्यसन-सेवन करने वालों को देना, स्वयं नशा करके देना तामस दान या अधर्म दान है। लोक व्यवहार से भी दान दिया जाता है। जिसने कभी आपको दिया उसे बदले में देना व्यवहार दान में सम्मिलित होता है। बच्चे के विवाह में लड़की अपने साथ लेकर आई अथवा अपनी लड़की का विवाह हो तो साथ में कुछ देकर भेजना भी व्यवहार दान है। आप किसी के यहाँ भोजन करके आए, आपके यहाँ कभी उसका आगमन हुआ तो उसे भोजन कराना आदि भी परस्पर व्यवहार दान है। दूसरों के दुःख को दूर करने के लिए दिया गया दान करुणा दान है। नीति का कथन है- मार्ग में भटकने

वाले व्यक्ति को यदि आँख वाला सज्जन रास्ता नहीं बताता, तैरना जानते हुए भी डूबने वाले का हाथ पकड़ कर यदि कोई बाहर नहीं निकालता, अपने पास बुद्धि और ज्ञान होते हुए भी दूसरों को सत्पथ नहीं दिखाता तो वह कृतज्ञ के बजाय कृतघ्न कहलाता है। आपने पाया है तो दें। जो देने का कर्त्तव्य अदा नहीं करता वह एक तरह से अपराधी है, पापी है, उसमें करुणा नहीं।

दातव्यमिति यद्दानं, दीयतेऽनुपकारिणे।

देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्त्विकं स्मृतं॥ -भगवद् गीता १७.२०

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा- जो अपनी ममता उतार कर देता है वह सात्त्विक दान है। जो देकर लिया जाता है वह व्यवहार है, दान नहीं। आज हजारों-लाखों रुपयों के दान करने वाले कई लोग हैं। वे मुक्तहस्त से देते हैं, लेकिन देने के साथ उनकी भावना रहती है कि हमारे नाम का शिलालेख लगे, हमारे नाम का कमरा और हॉल बने। नामवरी के लिए देने वाले बहुत हैं। मंदिर हो या उपाश्रय अथवा सार्वजनिक कोई भवन हो, प्रायः अधिकांश भवनों पर दानदाताओं की नामावली से दीवारें भरी हैं। लोग नाम के लिए, प्रतिष्ठा के लिए, कीर्ति और सौरभ के लिए उदारता से देने में आगे रहते हैं, लेकिन ऐसा दान सात्त्विक दान नहीं कहा जा सकता। आप उसे व्यवहार दान तो कह सकते हैं।

जो दिया जाता है, वह दान है। दिया किसे जाय? देने के लिए देश, काल और पात्र को समझना जरूरी है। एक है 'अभयदान', दूसरा है 'सुपात्र दान', तीसरा है 'ज्ञान दान'। अभयदान, सुपात्रदान और ज्ञानदान से निर्जरा होती है। षट्काय के जीवों को अभय देना अभयदान है। ये कर्म क्षय करने वाले दान हैं। सुपात्र कौन? इसके लिए कहा है कि जो स्वयं आरम्भ-समारम्भ नहीं करते। जो न बनाते हैं, न पकाते हैं। वे अपने लिए बनाया हुआ या खरीदा हुआ भी नहीं लेते। ऐसे जो लेने वाले हैं उन्हें देना सुपात्र दान है। ऐसे लेने वाले साधक मात्र ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना के लिए लेते हैं। संयम-यात्रा के निर्वहन के लिए, स्वयं तिरने और दूसरों को तारने के लिए लेते हैं। सुपात्र दान के भी तीन भेद हैं- उत्कृष्ट, मध्यम और जघन्य।

उत्कृष्ट सुपात्र दान में तप साधक अणगार जो दीर्घ तपस्या करते हैं वे

माह, दो माह, चार माह के तप के पश्चात् जब भी आवश्यकता अनुभव करते हैं, भिक्षाचरी के लिए निकलते हैं। कोई तपस्वी मुनिराज एक दिन आहार लेकर फिर से तप-साधना में लग जाते हैं। ऐसे तपस्वी अणगार को देना उत्कृष्ट सुपात्र दान है। मध्यम सुपात्र दान है साधु-साध्वी की संयम-यात्रा के निर्वहन के लिए देना। सुपात्र दान का तीसरा भेद है- जो श्रमणोपासक संसार में रहते हुए धर्म को प्रधानता देते हैं, उनको देना। श्रावक को दिया गया दान भी सुपात्र दान में शामिल है। श्रावक धर्म के कार्य को प्रधानता देने का लक्ष्य रखता है। संघ-समाज में काम करने वाले, संस्थाओं को जीवन समर्पित करने वाले अपना घर-बार छोड़कर रहते हैं, उनकी सहायता भी सुपात्र दान में सम्मिलित है। एक सम्यक् दृष्टि व्यक्ति जो देव अरिहन्त-गुरु निर्ग्रन्थ और दयामय धर्म की श्रद्धा रखता है, वह कमजोर स्थिति में है, उसकी सहायता भी सुपात्र दान की श्रेणी में है।

सुपात्र दान देकर जन्म-मरण का अन्त किया जा सकता है। शास्त्र में सुपात्रदान के अनेक दृष्टान्त हैं। राख का धोवन पानी देकर तीर्थंकर नाम कर्म बाँधने का दृष्टान्त आपने सुना होगा। उड़द के बाकुले देकर बंधन काटने का दृष्टान्त है, वहीं शालिभद्र की बात आपने कई बार सुनी है। संगम को जीवन में पहली बार खीर खाने का मौका मिला, उसे भी वह सुपात्र दान में देता है। आज कई हैं जिनको बढ़िया चीज खाने को मिलती है तो वे कमरे का दरवाजा बंद करके खाते हैं। दूसरों को क्या दें, घरवालों को देना पसंद नहीं, इसलिये कुछ होटलों में जाकर खाते हैं, खोमचों पर खड़े-खड़े खाते हैं, घर से बाहर खाते हैं। दूसरी ओर संगम को पहली बार खीर मिली, जिसे भी वह संत-मुनिराज को बहराता है। सुपात्रदान के प्रति शुभ-भावना के कारण उसे शालिभद्र का भव मिला जिसमें अकूत रिद्धि एवं वैराग्य की प्राप्ति हुई।

ज्ञानदान की बात कहूँ तो यह एक उत्कृष्ट दान है। ज्ञानदान करने वाले स्वयं अपनी निर्जरा तो करते ही हैं, दूसरों में रहा अज्ञान-अंधकार भी नष्ट करते हैं। दान स्वयं के लिए लाभप्रद है वहीं दूसरों को ज्ञान-दान देकर नरक-निगोद से बचाकर उन्हें सत्पथ पर लगाया जा सकता है। ज्ञान-दान स्वयं का तर्पण करता है तो दूसरों के लिए भी तर्पण का निमित्त बनता है।

दान सद्गुण है। चार गुण सहज आते हैं उसके लिए सीख देने की जरूरत नहीं होती। दान देना सद्गुण है, मीठा बोलना सद्गुण है। शूरता सद्गुण है तो चतुराई भी सद्गुण है। कुछ व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो स्वयं व्यस्त हैं, पर माँगने वाले को देखते ही काम छोड़कर उसे देते हैं। कुछ तो ऐसे भी हो सकते हैं जो खेल को छोड़कर आगत को संतुष्ट कर भेजते हैं। यह देने का गुण बड़ों में ही नहीं, कई बच्चों में भी मिलता है। द्वार पर कोई याचक आया, बच्चा रोटी देने के लिए मचल उठता है, स्वयं खाना छोड़कर देता है।

दान सहज है। सहज रूप में देने वाले भी कई हैं, जिन्होंने सब कुछ दिया है। **'बिना कहे देवे पुरुष पूरे मन की आस'** यह कहावत कई दानदाताओं पर चरितार्थ होती है। मैंने पूज्य गुरुदेव (आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी महाराज) के मुखारविन्द से सुना है कि रिंया वाले जीवणदास जी मुणोत के २७ स्थलों पर सदाव्रत चलते थे। उनके सदाव्रत में कोई भूखा आ जाये तो उसका न नाम पूछा जाता था, न जाति और न अपना-पराया ही देखा जाता था। सदाव्रत में प्रत्येक आगत को सम्मान के साथ भोजन करवाया जाता था। मुणोत जी के झाँसी, ग्वालियर, दिल्ली, पटना, पेशावर आदि अनेक नगरों में सदाव्रत चलते थे।

आपमें से कइयों के मुँह से सुना है कि मद्रास में चोरडिया-गेलड़ा आदि परिवार मारवाड़ से आने वाले जैन भाइयों के लिए चौका चलाते हैं। आगत जैन भाई के लिए उनका कथन है कि जब तक नौकरी नहीं मिलती या काम-धंधा शुरु नहीं होता आप यहाँ रहें, सामायिक करें और चौके में भोजन करें। आने वाला भाई जैन है, स्वधर्मी है, गाँव से आया है इसलिये उसे सहयोग किया जाय। नए आदमी को पाँवों पर खड़ा करने के लिए वे रहने का और खाने का इन्तजाम तो करते ही, धंधा शुरु करने के लिए मदद भी करते। उनके चिंतन में स्वधर्मी भाई के लिए मदद की बात रहती। वे सोचते कि हमारे सहयोग से हमारा कोई जैन भाई आगे बढ़ता है तो उसे सहयोग दिया जाय।

अलवर के एक भामाशाह थे लाला काशीराम जी। देश-रक्षा के लिए कोई जवान शहीद हो जाता तो लालाजी उसके घर की परवरिश करते। एक बार लालाजी किसी घर के आगे रास्ते से जा रहे थे। उनके कानों में बुढ़िया का रुदन

सुनाई दिया। बुढ़िया का पति शहीद हो गया था, बेटा जेल में था और घर पर कमाने वाला कोई नहीं रहा, इस कारण बुढ़िया का रुदन चल रहा था। लालाजी बुढ़िया के मकान के पिछवाड़े गये और नोहरे में जाकर जवाहरात की एक पोटली जमीन में गाड़ दी। कुछ समय पश्चात् वे बुढ़िया के पास आए और पूछा- "माँजी! आपको क्या कष्ट है?" बुढ़िया ने कहा- "बेटा! मेरा पति शहीद हो गया, बेटा जेल में है, मेरे को भी मौका मिले तो मैं भी देश के लिए कुर्बान हो जाना चाहती हूँ अन्यथा घर-गृहस्थी की गाड़ी चलाना मेरे वश की बात नहीं है।"

लालाजी ने कहा-"माँ! देश के लिए कुर्बान होने के लिए कई सपूत मौजूद हैं। मैं तो आपके पास इसलिए आया कि मुझे कल किसी ने सपने में कहा कि आपके पिछवाड़े में धन गड़ा है। लालाजी के कहने पर नोहरे में खुदाई की गई जिसमें जवाहरात की पोटली निकली। मदद कैसे दी जाय लालाजी ने उदाहरण प्रस्तुत किया।

आपने एक सूक्ति सुनी होगी- **सौ हाथों से सींचिये, हजार हाथों से देते जाइये।** बीकानेर में शंकर के भक्त थे, नाम था- रामरतन जी डागा। घर आने वाला कोई भी क्यों न हो, शंकर भक्त किसी को निराश नहीं करता था। डागा जी के यहाँ संयोगवश एक ब्राह्मण पहुँचा। डागा जी बाड़े में एक पत्थर पर बैठे नहा रहे थे। ब्राह्मण ने कहा- यजमान की जय।

डागा जी ने पूछा- ब्राह्मण देवता क्या बात है?

ब्राह्मण ने कहा- सेठ! मेरी पुत्री बड़ी हो गई है, मेरे पास कुछ नहीं है, शादी कैसे हो?

सेठ के पास कागज-कलम तो थी नहीं, पर पास में एक फूटे मटके का टुकड़ा पड़ा था। कोयला भी दिख पड़ा। सेठ ने कोयले से मटकी के टुकडे पर कुछ लिखा और कहा- जाओ, मुनीम से ले लो।

मुनीम साहब का मन कच्चा था। मुनीम ने दो आने निकाल कर देने का प्रयास किया तो ब्राह्मण ठीकरी लेकर सेठ के पास पहुँचा। सेठ से बात कही तो सेठ ने एक बिन्दी बढ़ा कर दे दी। ब्राह्मण फिर से मुनीम के पास गया। मुनीम आदत से लाचार था अतः फिर लौटा दिया। ब्राह्मण फिर सेठ के पास पहुँचा,

सेठ ने एक बिन्दी और बढ़ा दी। यह बात उस जमाने की कह रहा हूँ जब एक पाई में पेट भरता था। उस समय के हजार रुपये आज करोड़ रुपये के बराबर हैं कह दूँ तो उसमें कोई अतिशयोक्ति जैसी बात नहीं होगी। सेठ ने कहा- इस बार मुनीम मना कर दे तो तुम वहीं बैठ जाना, मैं आता ही हूँ। ब्राह्मण मुनीम के पास बैठ गया। सेठ के आते ही मुनीम घबराया। सेठ ने एक हजार रुपये निकाल कर ब्राह्मण को दे दिए। मुनीम को घबराहट थी, सेठ को देखकर वह धूजने लगा कि मेरे कारण से एक रुपये की राशि एक हज़ार तक पहुँच गई। सेठ ने कहा- मुनीम जी, आपको घबराने की जरूरत नहीं, महादेव का ऐसा ही हुक्म था। ब्राह्मण के भाग्य में हजार रुपये लिखे थे, इससे आपको अपनी शक्ल बिगाड़ने की जरूरत नहीं।

देने वालों के नामों में ऐसे कई नाम हैं। उदयपुर के महाराणा जगतसिंह जी देने में माहिर थे। उन्होंने पच्चीस साल तक राज्य किया। उनके चरणों में एक व्यक्ति पहुँचा। महाराणा जगतसिंह जी गृहीता के माता-पिता का नाम नहीं जानते पर जो आता उसे जरूर देते थे।

राजा भोज की बात आपने सुनी होगी। नीति का कथन है-

अनुकूले विधौ देयं, यतः पूरयिता हरिः।
प्रतिकूले विधौ देयं, यतः सर्वं विनश्यति॥

मानव! अगर तेरे भाग्य चमक रहे हैं, दूसरे शब्दों में कहूँ- तेरी अन्तराय टूट रही है तो दिये जा। देते रहने से धन घटता नहीं, बढ़ता ही है। अनुकूलता में दे उसका क्या, भाग्य की प्रतिकूलता में भी देते जा। भाग्य की प्रतिकूलता में सम्पदा वैसे ही नष्ट हो जाएगी। सम्पदा जा रही है तो देते हुए भी जायेगी और नहीं देगा तो भी रहने वाली नहीं है। मारवाड़ी कहावत है- **"खाओगे दुर्गन्ध आयेगी, खिलाओगे सुगन्ध आयेगी।"** चार आदमियों के बीच आप अकेले हलवा खाओ तो लड़ाई होगी, देकर खाओगे तो प्रेम बढ़ेगा।

आप दान की बात सुन रहे हैं। सुनना अच्छा है, पर आप सुनकर ही नहीं रहें, सुनने के साथ देने का लक्ष्य रखकर चलें तो आपको लाभ प्राप्त हो सकेगा। तीन दानों की बात मैं कह गया, दान के अनेक भेद किए जा सकते हैं। समय का भोग देना भी कर्त्तव्यदान है। ज्ञान देना भी दान है। संघसेवी सुश्रावक

समय का भोग देकर संघ की प्रवृत्तियों को आगे बढ़ाते हैं, कर्त्तव्यभावना से समय का भोग 'दान' है। सेवा के बलबूते पर संघ संगठित रहता है, प्रगति करता है। ज्ञानदान की महिमा आपको ज्ञात ही है।

जैन परम्परा की तरह अन्यान्य परम्पराओं में भी दान की महिमा है। संतोषी परम्परा में कुछ उंछभोजी कहलाते हैं। खेती पक जाने पर जब धान को किसान घर पर ले आता है तब वहाँ रहा-सहा अनाज इकट्ठा करके पेट भरने वाले उंछभोजी होते हैं। यह एक वृत्ति है। आहार से जीविका चलती है। जो आहार फेंकने लायक है उसे भी काम लेने वाले होते हैं। धन्ना अणगार कैसा आहार करते थे, शायद आपने कभी सुना होगा। वे आहार को २१ बार धोकर प्रयोग में लेते। उंछवृत्ति वाले खेत में फसल कटने के बाद पड़े अनाज के दाने एकत्रित कर जीविका चला लेते। एक उंछभोजी फसल कटने के बाद खेत से दाने चुग रहा था। उधर से घोड़े पर सवार नरेश निकले। नरेश ने देखा तो मन में सम्मान के बजाय घृणा के भाव जगे।

जननी ऐसा मत जणो भोय पड्यो कण खाय।

मतलब, माँ! ऐसा पुत्र मत जन्मना जो पेट नहीं भर सके।

वह फक्कड़ प्रवृत्ति वाला था। जवाब दिया-

छता जोग दुःख ना हरे ऐसो ना जाणियो माय।

जवाब देने वाले ने कह दिया माँ! ऐसा कंजूस पूत भी मत जन्मना जो हजारों को खिलाने की ताकत रखता है, पर खिलाता किसी को नहीं।

नरेश को यह खयाल नहीं था कि सेर को कभी सवासेर भी मिल जाता है। आज हर व्यक्ति कुछ-न-कुछ दे सकता है। आप तन से, मन से, धन से दे सकते हैं। किसी के पास भले साग-रोटी नहीं है तो भी वह ज्ञानदान कर सकता है। आपने आज जो कुछ भी सुना उसे सम्पर्क में आने वाले को सुनाने का प्रयास करना। आप किसी को सुनायेंगे, समझायेंगे, प्रेरणा करेंगे यह भी दान की श्रेणी में हो सकेगा। आज हजारों-लाखों पशु कट रहे हैं, आप अपनी बात रखें, अनेकानेक संस्थाएँ अपना पक्ष रखें तो अभयदान की दिशा में कुछ हो सकता है। आपने जो कुछ भी पाया है, दीजिये। जो देगा वह मोक्ष-मार्ग की ओर चरण बढ़ायेगा।

वीतरागता का लक्ष्य

श्री सम्पतराज डोसी

श्रमण भगवान् महावीर अथवा जैन धर्म के बारे में अधिकांश लेखों व प्रवचनों में प्रायः तीन विशेषताओं का वर्णन ही देखने व सुनने को मिलता है। वे तीन विशेषताएँ हैं- १. अहिंसा २. अनेकान्त और ३. अपरिग्रह।

हिंसा-अहिंसा की चर्चा तो बहुत की जाती है, फिर भी वह अधूरी ही रहती है। हिंसा का अर्थ किया जाता है- किसी जीव को मारना अथवा किसी भी प्रकार से उसे दुःख देना अर्थात् स्वयं ऐसी हिंसक क्रिया करना, कराना, अनुमोदन करना- मनसा, वाचा, कर्मणा आदि।

गहराई से चिन्तन करने पर यह ज्ञात होता है कि हिंसा पहले 'स्व' की होती है फिर 'पर' की। दूसरे जीव की हिंसा करने अथवा किसी भी प्रकार से उसको दुःख पहुँचाने की भावना को 'द्वेष' कहते हैं और द्वेष करने वाला व्यक्ति पहले स्वयं तनाव ग्रस्त होता है अर्थात् अशान्त होता है। यह तनाव ग्रस्त होना स्वयं की हिंसा है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति जब क्रोध करता है चाहे दूसरे जीव पर करे अथवा अजीव वस्तु पर ही क्यों न करे तब भी बिना तनाव में आये कोई क्रोध कर नहीं सकता। ठीक इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति किसी वस्तु या व्यक्ति पर द्वेष करता है तो भी पहले उसको स्वयं तनावग्रस्त होना ही पड़ता है।

हमें प्रायः ऐसा अनुभव होता है कि व्यक्ति जब किसी वस्तु या दूसरे व्यक्ति पर राग करता है तब वह बाहर से भले ही उसका भला सोचता हो, किन्तु भीतर से अपना स्वार्थ पुष्ट करता है। राग की जड़ में स्वार्थ छुपा हुआ होता है। स्वार्थ का अर्थ यह है कि व्यवहार में ऊपर से तो वह पत्नी या पुत्र आदि का बाहरी भला कर रहा है, पर अन्तरंग में वह भविष्य में उससे किसी भी प्रकार का प्रतिफल चाहता है। चाहे वह धन, चाहे सेवा अथवा मात्र अहं का पोषण ही क्यों न हो, कोई न कोई स्वार्थ तो रखता ही है। अगर तीन प्रकार के स्वार्थों में से एक भी प्रकार का स्वार्थ नहीं हो तो फिर वह राग 'राग' न कहलाकर प्रेम कहलायेगा। परन्तु प्रायः करके ९९ प्रतिशत तो रागवश ही

सहयोग किया जाता है। क्योंकि स्वार्थ में थोड़ी सी भी अगर कसर पड़ जाय तो राग 'द्वेष' में बदल जाता है।

वीतरागता में अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह सबका समावेश हो जाता है। वीतरागता के बिना अहिंसा पूर्ण अहिंसा नहीं हो सकती, क्योंकि राग अथवा द्वेष दोनों से 'स्व' की हिंसा होती ही है। वीतराग ही पूर्ण अहिंसक या अनेकान्तवादी हो सकता है। वादों का मुख्य कारण भी अहं आदि राग ही होते हैं। इसी प्रकार परिग्रह में 'भाव-परिग्रह' मुख्य है। मम एवं अहं भी सबसे बड़े परिग्रह हैं।

स्थूल हिंसा सबसे स्थूल पाप है, इसलिये प्रायः सभी धर्मों में हिंसा को पाप और अहिंसा को धर्म माना जाता है। परन्तु राग-द्वेष आदि की जितनी सूक्ष्म व्याख्या जैनदर्शन में मिलती है उतनी अन्य किसी भी धर्म या दर्शन में नहीं मिलती। इसी प्रकार अहिंसा का भी जैसा और जितना बारीकी का कथन जैनदर्शन एवं धर्म में मिलता है उतना अन्यत्र नहीं। परन्तु आज हम जैनी स्वयं ही अहिंसा एवं वीतरागता के सूक्ष्म एवं तलस्पर्शी ज्ञान से प्रायः अनभिज्ञ हैं और हमने वीतरागता से बढ़ कर अहिंसा को प्रधानता तो दी, परन्तु न तो सच्ची एवं पूरी अहिंसा को समझ सके या आचरण में ला सके और न वीतरागता के मुख्य अंग ध्यान एवं कायोत्सर्ग को ही जीवन में स्थान दे सके। ध्यान एवं कायोत्सर्ग तप के भेद हैं, जिनका नामोल्लेख मात्र ही रह गया है, दोनों भेदों की जीवनपरक साधना तो मानों छूट ही गई।

वीतरागता जैन दर्शन एवं धर्म की आत्मा व प्राण के समान है जिसको हम सैद्धान्तिक तौर पर ही नहीं, बल्कि आचरण के पक्ष में भी प्रायः भूल से गये हैं। आज का श्रावक या साधु जितना महत्त्व प्रथम अणुव्रत या महाव्रत को देता है उतना सम्यग्दर्शन को नहीं जो वीतरागता की नींव या जड़ के समान है। प्रायः मानसिकता यह बनी हुई है कि जैन होने के नाते सम्यग्दर्शन तो हममें है ही, किन्तु यह मान्यता समीचीन नहीं है।

जैनदर्शन में अहिंसा, अनेकान्त व अपरिग्रह से भी अधिक और प्रथम वीतरागता का महत्त्व है। इसके अनेक आगमिक और पुष्ट प्रमाण हैं जो जैन धर्म के चारों सम्प्रदायों- दिगम्बर, श्वेताम्बर (मूर्तिपूजक), स्थानकवासी एवं तेरापंथी सभी को मान्य हैं, उनमें से कुछ निम्न प्रकार हैं-

१. 'जिन' अर्थात् राग-द्वेष को नष्ट करने वाले या जीतने वाले 'जिन' के उपासकों को 'जैन' कहते हैं।

२. जैन धर्म में सभी शास्त्रों, आगमों, यहाँ तक कि चौदह पूर्वो का सार जिसे माना जाता है उस नमस्कार महामंत्र के प्रथम पद 'नमो अरिहंताणं' या 'नमो अरहंताण' में भी चाहे तीर्थंकर हों या सामान्य केवली, राग-द्वेष के विजेता ही शामिल होते हैं। नमस्कार सूत्र या नमस्कार महामंत्र चारों पंथों को मान्य है।

३. अठारह पापों में सबसे बड़ा पाप 'मिथ्यादर्शन शल्य' को माना जाता है। 'मिथ्यादर्शन शल्य' के छूटने पर ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति होती है, जो वीतरागता की नींव है। अगर 'प्राणातिपात' (हिंसा) को बड़ा माना जाता तो 'अहिंसा परमो धर्मः' कथन हो सकता था। वास्तव में 'अहिंसा परमो धर्मः' का नारा लिखा हुआ भले ही जैन स्थानकों या देवालयों आदि में मिलेगा, पर मूलतः यह नारा महाभारत का है। जैनधर्म के अनुसार तो 'वीतरागता परमो धर्मः' नारा अपेक्षित है।

४. जैन धर्म में साधना का लक्ष्य या सार मोक्ष की प्राप्ति मानी जाती है। उसका क्रम है पहले सम्यक्त्व की प्राप्ति, फिर श्रमणत्व अर्थात् साधुपन, फिर वीतरागता, फिर केवलित्व और उसके बाद 'सिद्धत्व' की प्राप्ति। दूसरे शब्दों में मोक्षप्राप्ति के लिये १४ गुणस्थानों का आरोहण सभी को मान्य है। गुणस्थान क्रम सारा वीतरागता या मोक्ष-प्राप्ति की दृष्टि से है। इसमें किसी का कोई मतभेद भी नहीं है।

५. मोक्ष शब्द का अर्थ है- मोह का क्षय। राग-द्वेष मोह के ही दो भेद या दो रूप माने गये हैं। अतः राग-द्वेष को जीतना या नष्ट करना ही वीतरागता है।

६. १. सम्यग्दर्शन २. सम्यग्ज्ञान ३. सम्यक् चारित्र ४. सम्यक् तप, इन चारों को मिलाकर मोक्ष मार्ग कहा गया है। चारों की सम्यक् आराधना से ही मोक्ष मार्ग फलित होता है इसमें जैन धर्म की विभिन्न सम्प्रदायों में कोई मतभेद नहीं है। इसमें सर्वप्रथम सम्यग्दर्शन तो वीतरागता की नींव है। वीतराग बने बिना कोई मोक्ष जाता ही नहीं।

७. पाप बंध का मुख्य कारण राग-द्वेष एवं चार कषाय हैं। कषाय के अभाव में

हिंसा का होना भले चालू रहे पर पाप का बंध नहीं होता। ये भी सभी पंथों में मान्य है।

८. पूर्ण अहिंसक बनने से पहले पूर्ण वीतराग बनना आवश्यक माना गया है।

९. हिंसा करने के भावों अर्थात् राग एवं द्वेष को पाप का कारण माना गया है न कि हिंसा का होना। वीतरागियों से, केवलियों से हिंसादि हो जाने पर भी पाप का बंध नहीं माना गया है। परन्तु कषाय के होने पर दृष्ट हिंसा न होने के बावजूद पाप लग जाता है। कषाय के उदय भाव अर्थात् १०वें गुणस्थान तक पाप का बंध होना सभी पंथों में मान्य है।

१०. हिंसा चाहे कोई करे या न भी करे, किन्तु राग भाव से पाप का होना सबको मान्य है।

११. सम्पूर्ण हिंसा से बचने वाले तो सिद्ध ही हो सकते हैं।

१२. श्वास तो केवली भी लेते हैं, इस कारण उनसे भी हिंसा का होना रुक नहीं सकता। पर इस हिंसा के होने से पाप का लगना नहीं माना गया है।

१३. "कषायमुक्ति किल मुक्तिरेव" की मान्यता जैनों के चारों फिरकों को मान्य है।

-मैसर्स संगीता साड़ी, डागा बाजार, जोधपुर

जय गजेन्द्र गुरु हीरा मान

श्री प्रकाश कर्णावट, इजरायल

(१)

कथनी-करणी का सार, गुरु हस्ती का द्वार,
ज्ञान-क्रिया की मस्ती, गुरु हस्ती की भक्ति।
सामायिक-स्वाध्याय, गुरु हस्ती अध्याय,
व्यसन-मुक्ति की ऋद्धि, पाए गुरु हीरा हस्ती।।

(२)

रहते प्रमाद से दूर, गुरु हीरा से संयम-शूर,
जागरूक निस्पृह बनकर ये, करते कर्मों को चकचूर।
दृढ़ता रखते वीरमार्ग पर, पाते संयम में सम्मान,
हस्ती गुरु हीरा मान महान्, करते ज्ञान-क्रिया का दान।।

धारावाहिक (क्रमशः२६)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः-'श्राद्ध के मूल में भ्रम और मिथ्यात्व है' इसकी पुष्टि महिषदत्त के घटना-प्रसंग से होती है। जम्बूकुमार के तर्क सम्मत ऐसे अनेक विचारों को सुनकर प्रभव के मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह स्वकृत पापकृत्यों के प्रक्षालन हेतु प्रातः जम्बूकुमार के साथ अणगार धर्म को अपनाने के लिए उद्यत हो गया।

प्रभव जम्बूकुमार को दीक्षा न लेने का आग्रह कर रहा था तब कुमार की पत्नियों ने समझा कि हमारे अहोभाग्य से यह मानो देवदूत आ पहुँचा है। अब तक वे बड़ी ही उत्सुकता से उनकी बातचीत सुन रही थीं और यह आशा लगाए बैठी थीं कि हम जिस उद्देश्य में सफल नहीं हो रही हैं, उसमें शायद प्रभव समर्थ हो सके। वे सब प्रभव को एक सहायक के रूप में देख रही थीं, परन्तु जब उस पर भी जम्बूकुमार का वैराग्य रंग चढ़ गया और वह भी उनके साथ दीक्षा लेने को तैयार हो गया तो उनके दुःख की सीमा न रही। वे जिस धरती पर ठहरी थीं वही मानो खिसकने लगी। उनकी वेदना का अन्त न रहा। जम्बूकुमार की धर्मपत्नी समुद्रश्री को तो प्रभव पर इतना क्रोध आया कि वह आँखें निकाल कर कहने लगी- ''दुष्ट प्रभव! तूने जिन्दगी भर लोगों को लूटा-खसोटा है, फिर भी तेरा पेट नहीं भरा जो अब हमें लूटने आया है। 'हमारा सुख, हमारा सर्वस्व, हमारा देवता लूट कर क्या तू सुख से रह सकेगा ? लुटेरे! तू साधु बनने चला है, फिर भी हमारा सौभाग्य-लूटे बिना न रहेगा? तू ने अब तक न जाने कितनी सुहागनों के सुहाग छीने हैं, न जाने कितने बालकों को अनाथ बना दिया है और न मालूम कितने ही श्रीमानों को दर-दर का भिखारी बना डाला है। पापी! अब भी तेरी प्यास नहीं बुझी जो हम पर हाथ साफ करने चला है। हमने समझा था तू हमारा हितैषी भाई बन कर आया है, पर तू तो भयंकर साँप निकला। हमें डसने को तैयार हो गया है, तेरा हृदय पत्थर से भी ज्यादा कठोर है। तू उन्हें समझाते-समझाते उल्टी उत्तेजना दे रहा है। 'नौ सौ चूहा खाय बिलाड़ी हज करने

निकली।' की कहावत चरितार्थ करने वाले ढोंगी। हट! जा यहाँ से।"

प्रभव इन वाग्बाणों से रंच मात्र भी उत्तेजित न हुआ। उसने सोचा- जिसके स्वार्थ में बाधा पड़ती है वह क्रुद्ध होता ही है। यह क्रोध करके अपना ही बिगाड़ कर रही है, इसमें मेरा क्या बिगड़ना है? वास्तव में मेरे पूर्व कृत्य ऐसे ही निर्दयतापूर्ण हैं कि उनकी शतमुख से निन्दा की जाय तो भी निन्दा पूरी न हो पाय। मैं कर भी क्या सकता हूँ? मैंने आरम्भ में कुमार को समझाने का प्रयत्न किया, मगर अन्त में उन्होंने मुझे समझा दिया। जब वस्तुस्थिति यही है तब उसे अस्वीकार करने से कल्याण नहीं हो सकता। मैं स्वीकार न करूँ तो भी कुमार मानने वाला नहीं है। मैं दीक्षा न लूँगा तो इससे इन स्त्रियों का कुछ लाभ न हो सकेगा।

यह सोच कर प्रभव ने कहा- "बहिनजी! कुमार को मैं समझा रहा था पर उन्होंने मुझे समझा दिया है। सत्य को स्वीकार करना यदि मेरा अपराध हो तो मैं आप से क्षमा चाहता हूँ। मैं कुमार को न समझा सका अब आप ही अपनी शक्ति की परीक्षा कर देखिए। शायद आप कुमार के मजबूत मन को जीत सकें। मैं, आपके रास्ते का फूल बन कर आया था पर शूल बन गया हूँ। लीजिए अब एक शब्द भी न बोलूँगा।'

इतना कहकर प्रभव चुप हो गया और एक किनारे बैठ गया।

पति-पत्नी संवाद

समुद्रश्री जम्बूकुमार को लक्ष्य करके कहने लगी-"प्राणनाथ! आप दयावान् बनने चले हैं, पर आपकी दया का जो रूप हमारे सामने है, वही यदि वास्तविक दया है तो उसे धर्म कैसे माना जा सकता है? किसी के हृदय में दुःख की भीषण ज्वाला सुलगा कर, कलेजे में वियोग की कटार भोंक कर, किसी का सर्वस्व छीन कर और उसे दुःखों के दावानल में जलने को फेंका जाना, यही क्या दया है? दया तो देवी है, मंगलमयी है, करुणामूर्ति है, किन्तु आप जिसकी आराधना कर रहे हैं वह विकराल दानवी है, अमंगलजननी है और निष्ठुर है। आप इस राक्षसी के भ्रम में पड़ कर अपना और हमारा अनिष्ट क्यों कर रहे हैं? जिन्होंने आपको अपनी आशाओं का केन्द्र बनाया है, अपने सुख का आधार

और जीवन का सर्वस्व बनाया है, भला उनके ही ऊपर प्रहार करके आप किस धर्म का आराधन करेंगे?

जो सुख प्राप्त हैं उन्हें लात मार कर कल्पना लोक के सुखों की कामना करना दीर्घदर्शी विचारशील पुरुष का कर्त्तव्य नहीं है। गोद के लड़के को त्याग कर पेट के लड़के पर आशा रखना बुद्धिमत्ता नहीं है। यह तो दुराशामात्र है। बग किसान के समान मूढ़ता है।

मारवाड़ में सुवरी नामक गाँव में एक किसान रहता था। वह अपने खेत में मोठ-बाजरी बोकर अपने ससुराल गया। ससुराल में इक्षु बहुत होते थे। इक्षु रस का ताजा गुड़ निकलवा कर जमाई के लिए बढ़िया स्वादिष्ट मालपुए बनावाए गए। उसने कभी मालपुओं के दर्शन तक नहीं किए थे। मालपुओं में उसे अद्भुत मिठास का अनुभव हुआ और वह एक-एक कौर में एक-एक मालपुआ निगलने लगा। जमाई की यह करतूत सासू और उसकी साली ने देख कर आपस में सोचा- कोई दूसरा देखेगा तो जमाईजी को कंगला और भुखमरा समझेगा। इससे उनकी बदनामी होगी और अपनी भी नाक कटेगी। अच्छा हो, हम उन्हें इशारा करके समझा दें कि एक मालपुए के कम से कम दो टुकडे करके खाएँ। यह सोच कर साली ने दो अंगुलियों का इशारा किया। जमाई जी इस इशारे को देखकर समझे कि एक कौर में एक नहीं दो मालपुए खाने चाहिए। उन्होंने एक साथ दो-दो मालपुए मुँह में घुसेड़ना शुरू किया। जब वह दो एक साथ मुँह में डालता था तो उसके गाल फूल जाते थे और ऐसा लगता था जैसे बन्दर का मुँह हो। यह देख कर लोगों की हँसी का पार न रहा। सब ने उसकी भरपेट हँसी उड़ाई।

बग जब जीम कर उठा तो उसने मालपुआ बनाने की विधि पूछी। ससुराल वालों ने अपने खेत पर ले जाकर उसे इक्षु दिखाए और रस निकालने, गुड़ बनाने तथा मालपुआ तैयार करने का क्रम सिखलाया।

बग अपने साथ इक्षु का बीज लेता आया। जब वह लौट कर आया तो मोठ-बाजरी पकने में कुछ ही दिनों की देरी थी, पर इक्षु की मिठास ने उसे अधीर बना दिया और उसने मोठ-बाजरी उखाड़ फेंके। इक्षु बो दिए गए।

घरवालों और पड़ोस वालों ने ऐसी नादानी न करने के लिए उसे बहुत समझाया, पर उसने किसी की नहीं सुनी और अपनी मनमानी की। वह नादान बग मोठ-बाजरी से हाथ धो ही चुका था, इधर मारवाड़ में जल के अभाव के कारण इक्षु भी न हुए। घर में जो थोड़ी-बहुत पूँजी थी वह कुआ खुदवाने में लगा दी, पर पानी का पता भी न लगा। वह न इधर का रहा न उधर का।

पतिदेव! आप भी बग के मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं। आप गुरुवर रूप श्वसुर के यहाँ से मुक्ति रूप मालपुए की मधुरता सुनकर मोठ-बाजरी के समान हमें त्याग रहे हैं। पर स्मरण रखिए, मोक्ष का कहीं अता-पता नहीं है अतएव उसकी प्राप्ति होना कल्पना मात्र है। इसके लिए हमारे और सांसारिक सुखों के त्याग से, इधर से भी हाथ धोने पड़ेंगे। अतएव आपसे हमारी नम्रतापूर्ण प्रार्थना है कि आप मुक्ति के सुख के फेर में न पड़कर लोक में स्वतः प्राप्त सुखों का उपभोग करें।

इसके अतिरिक्त प्रभव जैसे कठोर शरीर वाले लोग तो साधु अवस्था की तकलीफों को सरलता से सहन कर सकते हैं, पर आप का शरीर अत्यन्त कोमल है। आपने न कभी गर्मी सही है, न सर्दी। जमीन पर कभी पैर नहीं रखा। आप उन कष्टों को, जो साधु को अनिवार्य रूप से सहने पड़ते हैं, कदापि न सह सकेंगे। क्या आप झोली, पात्र आदि लाद कर पैदल चल सकेंगे? वह भी कड़ी धूप में, नंगे सिर, नंगे पैर और धीरे-धीरे। इसलिए हे प्रियतम! हमारी दीन प्रार्थना स्वीकार कर गृहस्थधर्म का पालन कीजिए और हमारी विनति स्वीकार कीजिए।'

(क्रमशः)

(जम्बूकुमार समुद्रश्री को क्या उत्तर देते हैं, इसका वर्णन अगले अंक में)

प्यास लगने पर जो प्यास बुझावे वह पानी है।
जिज्ञासु को संशय होने पर जो शंका मिटावे वह ज्ञानी है।
दान देकर जो मान-सम्मान की भूख नहीं रखे वह दानी है।
विकार-वासित मन इन्द्रियों का निग्रह करे वह मुनि है।

अध्यात्म-चिन्तन

लक्ष्मीपति बनें, लक्ष्मीदास नहीं

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

लक्ष्मी की प्राप्ति कोई बुरी बात नहीं। बुरी बात है लक्ष्मी का दास होना, लक्ष्मी को पूजना और लक्ष्मी को महत्त्व देना। जो लक्ष्मी का संग्रह करता है, लक्ष्मी का संरक्षण (चौकीदारी) करता है, लक्ष्मी के सहारे जीता है, उसकी कृपा से अपना मूल्यांकन करता है, उससे सुख पाने की आशा रखता है, उसके पीछे दौड़ता है, वह लक्ष्मी का दास है। परन्तु जो प्राप्त लक्ष्मी का सदुपयोग करता है, जिनको उसकी आवश्यकता है उनकी सेवा में भेजता है, जो लक्ष्मी के सहारे (आश्रय) की अपेक्षा नहीं रखता है अर्थात् जिसके जीवन में अभाव नहीं है वह लक्ष्मीपति है। अभाव का अनुभव जीवन में उसी को नहीं होता है जिसके जीवन में लेशमात्र भी कामना नहीं रहती है। अभाव का अभाव हो जाना ही सच्ची समृद्धि है, लक्ष्मीपति सच्ची समृद्धि का, अनन्त ऐश्वर्य का स्वामी होता है। लक्ष्मी का दास कामनाग्रस्त रहने से अभावत्रस्त रहता है। जो अभावत्रस्त है वह गरीब है, दीन है, दरिद्र है। लक्ष्मी का दास दरिद्र होता है, भले ही अरबपति हो या खरबपति। जितना उसके पास धन बढ़ता जाता है उतनी ही उसके धन की भूख बढ़ती जाती है, जिसकी पूर्ति कभी नहीं होती। यह नियम है कि भूखा व्यक्ति अपनी भूख मिटाने के लिए पर से अपेक्षा करता है, पर की ओर ताकता है, अर्थात् भिखारी होता है। अतः लक्ष्मी के दास की भूख कभी नहीं मिटती, भूख मिटाने के लिए पर की ओर देखना देश-विदेश में भटकना (तन से नहीं तो मन से ही सही) अभाव, दरिद्रता, भिखारीपन के दुःख से ग्रस्त रहना है। परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि उस घोर पराधीनता, दासता, दुःख में वह उसी तरह सुख अनुभव करता है जैसे कुत्ता हड्डी चबाकर अपने मसूड़े से निकले रक्त के स्वाद में सुख अनुभव करता है और उस सुख को हड्डी से प्राप्त मानता है। यह उसकी भयंकर भूल है।

लक्ष्मीपति वह है जो लक्ष्मी का सदुपयोग करता है। लक्ष्मी से अपने सुख का भोग करना उसकी दासता में आबद्ध होना है, परन्तु लक्ष्मी को दूसरों के हित में व्यय करना, लक्ष्मी के दासत्व से मुक्त होना है, लक्ष्मीपति

होना है। लक्ष्मी का दूसरों के हित में व्यय करना सेवा है। सेवा से जो प्रेम का प्रादुर्भाव होता है और उस प्रेम से जो रस मिलता है वह अक्षय होता है। उसका नाश नहीं होता है। जब भी उसकी स्मृति उदित होती है हृदय को प्रमुदित कर देती है। जबकि लक्ष्मी से भोगे हुए विषय-सुख की स्मृति आती है तो उस सुख को पुनः भोगने की कामना उत्पन्न होती है जो चित्त की शांति का अपहरण कर लेती है, सुख पाने के लिए चिंतित करती है। इस प्रकार लक्ष्मी का व्यय अपने सुख के भोग में करना अपना अहित करना है, दुःख को निमंत्रण देना है और लक्ष्मी का व्यय सेवा में करना प्रेम के सुख को हृदय में बसाना है। प्रेम प्रभु का स्वरूप है। अतः लक्ष्मी को सेवा में समर्पित करने से प्रभुता प्राप्त होती है और लक्ष्मी का भोग करने से दासता। उपयोग व उपभोग में अंतर है। उपभोग में सुखासक्ति होती है, उपयोग में आवश्यकतापूर्ति होती है। जिस परिवार में प्रेम है, सम्प है, वह ही सम्पन्न है।

देखा जाता है कि लक्ष्मी का दास अपने अभाव को दूर करने, भूख मिटाने के लिए जीवनभर दौड़ता रहता है और दौड़ते-दौड़ते वैसे ही प्राण छोड़ देता है जैसे हरिण मृगतृष्णा के जल से प्यास बुझाने के लिए दौड़ते-दौड़ते ही अपने प्राण छोड़ देता है।

लक्ष्मी का दास वही है जो भोगों का दास है। भोगी का जीवन दासत्व का जीवन है, पशु-जीवन है। मानव जीवन पशु जीवन से ऊपर होता है। मानव जीवन की सार्थकता प्रभुत्व की प्राप्ति में है, दासत्व से मुक्ति पाने में है। दासत्व से मुक्ति में ही प्रभुत्व की प्राप्ति है। प्रभुत्व की प्राप्ति ही प्रभु से अभिन्न होना है, भगवान होना है। प्रभु वही होता है जो स्वामी होता है, पति होता है, यही मानव के लिए शोभनीय है। तात्पर्य यह है कि लक्ष्मी का प्राप्त होना भला-बुरा नहीं है। बुरा है लक्ष्मी का दास होना और भला है लक्ष्मी का पति होना।

जैसे पानी के बिना नाव नहीं चलती है, नाव के संचालन में पानी उपयोगी है, परन्तु नाव में पानी भर दिया जाय तो नाव भारी हो जाती है और नाव व नाविक जलाशय में डूब जाते हैं। इसी प्रकार लक्ष्मी के बिना गृहस्थ के कार्य नहीं चलते हैं। इस दृष्टि से लक्ष्मी की उपयोगिता है। उसका सदुपयोग करना अच्छा है। परन्तु लक्ष्मी का सदुपयोग न करके उसे हृदय में

बसा लिया जाय तो वह लक्ष्मी भाररूप हो जाती है। इस भार से व्यक्ति दुःख के जलाशय में डूब जाता है। जो लक्ष्मी का दास नहीं है, लक्ष्मी के पीछे नहीं दौड़ता है, लक्ष्मी उसके पीछे दौड़ती है। उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समस्त संसार और प्रकृति लालायित रहती है। उसे किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता है। अभाव का अभाव हो जाना ही सच्ची समृद्धि है, सच्चा लक्ष्मीपति होना है। अभाव का अभाव हो जाना ही पूर्णत्व है, ईश्वरत्व है, ऐश्वर्य सम्पन्न होना है। भोगासक्त स्वार्थी व्यक्ति जीवन के अंतिम समय तक लक्ष्मी का संग्रह करता है उसका सद्व्यय नहीं करता है। लक्ष्मी में आसक्त ऐसा व्यक्ति जब लक्ष्मी को छोड़कर परलोक जाता है तब न चाहते हुए भी उसे लक्ष्मी को छोड़ना पड़ता है। वह संचित लक्ष्मी उसके काम नहीं आती है तब उसे भयंकर पश्चात्ताप होता है, पछताना पड़ता है, दुःखी होना पड़ता है। जैसे चींटी दौड़-दौड़ कर कण-कण का संग्रह करती है और अंत में मर जाती है। उसका सब संग्रह यहीं धरा रह जाता है, वे संगृहीत कण उसके काम नहीं आते हैं; यह ही दुर्दशा लक्ष्मी को संचय करने वाले लक्ष्मीदास की होती है।

—82/141, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

जीवन और मृत्यु

डॉ. सागरमल जैन

गये थे जिसकी बारात में कभी,
उसी की अर्थी आज है सजी।
आ-आकर जाना, जा-जाकर आना,
इसी में तो है सब कुछ पाना ।।१।।

जीवन का सत्य यदि मृत्यु है,
तो मृत्यु का सत्य है जीवन
जी-जी मरना, मर-मर जीना,
यही तो है अमृत का पीना ।।२।।

जब होती है मौत, नहीं होते हम,
जब होते हैं हम, मौत नहीं होती।
जिससे मिलना ही कभी संभव नहीं,
यात्रा में फिर कहाँ कोई अड़चन कहीं? ।।३।।

पतझड़ के बाद ही तो आता है बसन्त,
मौत के बाद ही तो मिलता नव-जीवन।
सीख लिया जिसने जीना और मरना,
उसको फिर क्यों और किससे डरना? ।।४।।

जीवन की सार्थकता का नाम है,
समाधिपूर्ण मरण।
और मरण की सार्थकता है,
अनन्त से मिलन।।५।।

-शाजापुर (म.प्र.)

लक्ष्यविहीन जीवन

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरी जी म.सा.

प्रतीक्षा कक्ष में बैठे हुए आदमी ने अपने पास बैठे हुए अन्य आदमी से कहा-

"एक कोरा कागज देंगे?"

"अवश्य, यह लीजिए।"

"क्या एक पेन मिल सकता है?"

"क्यों नहीं?"

"एक खाली कवर मिलेगा?"

"मिल जाएगा।"

"और कवर पर लगाने हेतु टिकिट?"

"अवश्य मिलेगी।"

दूसरे आदमी से कागज, पेन, कवर, टिकिट ये सब लेकर उसने लिखना शुरु तो किया, किन्तु शुरु करने से पहले ही उसके हाथ रुक गये।

दूसरे आदमी ने पूछा, "क्यों, अब क्या हुआ?"

"मुझे एक अंतिम सहायता करेंगे?"

"अवश्य"

"कवर पर किसका पता लिखना है, मुझे पता नहीं है। आप मुझे जरा पता लिखवा देंगे? जिससे मैं पत्र लिखना शुरू कर सकूँ।"

अत्यन्त गंभीरतापूर्वक हम अपने अंतःकरण का निरीक्षण करेंगे तो हमें स्पष्ट रूप से प्रतीति हो जाएगी कि कुछ हद तक हमारे जीवन की स्थिति भी यही हो गई है।

हमारी आगे बढ़ने की गति अवश्य बढ़ी है, किन्तु वस्तुतः हमें कहाँ पहुँचना है वह लक्ष्य ही हमें स्पष्ट नहीं है। दिनभर में अनेक शब्द हम मुख से निकालते ही रहते हैं, किन्तु ये सब बोलने के द्वारा हम क्या हासिल करना चाहते हैं यही हम नहीं जानते। समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हो गई है, किन्तु प्रतिष्ठा प्राप्त करने के पश्चात् हमें कहाँ पहुँचना है इसका हमें स्पष्ट अंदाज ही नहीं है।

संक्षिप्त में, हमारा जीवन ध्येयहीन बन गया है और इसी का परिणाम है कि सफलताओं की भरमार होने के बावजूद हमें प्रसन्नता की अनुभूति नहीं होती। विपुल संपत्ति होने पर भी सुख की अनुभूति नहीं होती। बाजार में बड़ा नाम होने पर भी भीतर की आत्मा को आनंद का कोई अनुभव नहीं होता। कैसी विडंबना है?

सर्वाङ्गीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(३)

श्री प्रेमचन्द कोठारी

सामायिक के दो प्रकार हैं-द्रव्य व भाव। आसन, मुँहपत्ति, पूँजनी, सत्साहित्य आदि के साथ सविधि सामायिक करना द्रव्य-सामायिक है और समभाव का विकास, विषमता से समता की ओर बढ़ना आत्मभाव में रमण करना, वीतरागता की तरफ बढ़ना भाव सामायिक है। वास्तव में भाव सामायिक ही सामायिक का लक्ष्य है। आज अनेक जिज्ञासु प्रश्न करते हैं कि भाव सामायिक ही लक्ष्य है तो फिर द्रव्य सामायिक का क्या महत्त्व है? द्रव्य सामायिक का महत्त्व है तो लम्बे समय से सामायिक करने वालों के जीवन में परिवर्तन देखने को क्यों नहीं मिलता? जीवन में नित्य २३ घण्टे तो संसार के काम करें तब ४८ मिनट सामायिक करने से क्या होगा? आदि अनेक प्रश्न उपस्थित किये जाते हैं, उनमें से कुछ जिज्ञासाएँ व उनका समाधान संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है-

जिज्ञासा- भाव सामायिक ही सामायिक का लक्ष्य है, जो मात्र भावना सही होने से की जा सकती है तो फिर द्रव्य सामायिक अर्थात् कपड़े बदलना, मुँहपत्ति बाँधना आदि की क्या आवश्यकता है?

समाधान- द्रव्य व भाव दोनों के मिलने पर ही सामायिक साधना सफल होती है। तीन उदाहरणों से समझाते हैं- १.पेड़ काटने के लिए मात्र लोहे की कुल्हाड़ी का ही महत्त्व है, लेकिन बिना लकड़ी के बांसे (हत्थे) के वह काटने में सक्षम नहीं है। ठीक इसी प्रकार भाव सामायिक लोहे की कुल्हाड़ी के समान है और द्रव्य सामायिक लकड़ी के बांसे के सामान है। २. साफ एवं योग्य कागज पर सरकारी मोहर लगने पर वह कागज नोट में परिवर्तित हो जाता है, अयोग्य कागज पर मोहर का महत्त्व नहीं है तो खाली मोहर का बिना कागज के महत्त्व नहीं है। ऐसे ही योग्य कागज के समान सविधि द्रव्य सामायिक है और सरकारी मोहर के समान भाव सामायिक है। ३. उदरपूर्ति रोटी से होती है, बेलन-चकले से नहीं, लेकिन बिना बेलन-चकले के रोटी का निर्माण नहीं होता। इसी तरह द्रव्य सामायिक से भाव सामायिक सधती है।

जिज्ञासा- द्रव्य सामायिक का महत्त्व है तो लम्बे समय से जो द्रव्य सामायिक कर रहे हैं, उनके जीवन में कोई परिवर्तन देखने को क्यों नहीं मिलता?

समाधान- जो साधक द्रव्य के साथ भाव सामायिक की साधना करते हैं, उनके जीवन में तो अवश्य आशातीत परिवर्तन आते हैं, ऐसे अनेक उदाहरण आज भी देखने को मिल रहे हैं। इसी भाव साधना के कारण अनेक व्यक्ति उपशान्त कषाय वाले, प्रामाणिक जीवन जीने वाले, यावज्जीवन अब्रह्मचर्य के त्याग वाले एवं महाव्रत धारण करने वाले बन जाते हैं।

जिज्ञासा- एक मुहूर्त में सामायिक की, लेकिन २९ मुहूर्त तो संसार के कार्य प्रपंच आदि किए; फिर एक मुहूर्त सामायिक करने से क्या लाभ?

समाधान-

- घड़ी में चाबी १, २ मिनट लगाई जाती है, लेकिन घड़ी २४ घंटे व कोई-कोई आठ दिन चलती है।
- भोजन १५-२० मिनट किया जाता है, लेकिन उससे २४ घंटे शरीर व्यवस्थित चलता है।
- व्यायाम १०-१५ मिनट किया जाता है, लेकिन उससे शरीर सुदृढ़ एवं स्वस्थ बनता है।

ठीक इसी प्रकार सामायिक आत्मा रूपी घड़ी की चाबी है, आत्मा रूपी पेट की खुराक है, आत्मा रूपी शरीर का व्यायाम है। वास्तव में शुद्ध सविधि सामायिक से २३ घंटे के क्रिया-कलाप में परिवर्तन आता है। (शुद्ध सामायिक की विधि आगे दी जाएगी)

जिज्ञासा- मन तो स्थिर होता ही नहीं, फिर खाली मुँह बाँध कर बैठ जाएँ, इससे क्या लाभ है?

समाधान- जैसे बालक पहले दिन पेन पकड़ना नहीं सीख पाता (लिखना तो दूर की बात है) फिर भी बड़ी फीस देकर उसको स्कूल में भर्ती कराया जाता है। नियमित अभ्यास के कारण वही बालक कुछ वर्षों में कुशल विद्वान्, इंजीनियर, डॉक्टर आदि बन जाता है। ऐसे ही पहले मन स्थिर नहीं भी रहे तो भी अभ्यास या प्रयास से धीरे-धीरे मन स्थिर होने लगता है। अगर फिर भी जितने दिन मन स्थिर नहीं भी रहे तो भी वाणी व काया तो स्थिर रहती है, जिसके कारण दो तिहाई सफलता तो मान ही लेनी चाहिए। (यह सफलता बताना मात्र प्रोत्साहित रखने के लिये है)

जिज्ञासा- सामायिक से समता भाव कैसे आ सकता है?

समाधान- जैसे उबलते हुए पानी में अपना चेहरा नहीं दिखाई देता, लेकिन आग पर से पानी के बर्तन को हटाकर एक ओर रखने पर थोड़ी देर बाद उसमें अपना चेहरा दिखाई देने लगता है। इसी प्रकार संसार के प्रपंच रूपी आग से अलग हट कर जब हम शांत होकर बैठते हैं, स्वाध्याय आदि करते हैं अपने द्वारा अपना निरीक्षण होने लगता है, संसार की असारता का आभास होने लगता है, मन समाधि भाव की तरफ बढ़ने लगता है, तब धीरे-धीरे समता भाव का विकास होने लगता है और शनैः शनैः उसमें स्थायित्व आने लगता है।

जिज्ञासा- सामायिक से क्या लाभ है?

समाधान- निर्दोष सामायिक करने के लिये साधक दोषों से बचने का ध्यानपूर्वक प्रयास करता है अर्थात् मन से किसी को बुरा नहीं समझता, न किसी का बुरा सोचता है, न ही सावद्य विचार करता है। वाणी से सावद्य व अहितकारी भाषा नहीं बोलता, काया से सावद्य व अहितकारी प्रवृत्ति नहीं करता तथा सामायिक की स्मृति (सजगता) को बनाए रखता है। इस अभ्यास से दिन भर के कार्यों में मानसिक, वाचिक व कायिक नियंत्रण व सजगता बनी रहती है। अर्थात् एक मुहूर्त की सामायिक दिन की प्रवृत्तियों को शिक्षित व संस्कारित कर देती है। (इसका नाम ही प्रथम शिक्षाव्रत है।) व्यक्ति जितनी देर सामायिक में रहता है, उसका प्रभाव दिन भर के विषम प्रसंगों पर भी तनाव से बचने में काम आता है। जैसे- भैंस मच्छर मक्खियों के काटने पर या गर्मी से बचने के लिये पानी में बैठ जाए, उतनी देर तो मच्छर, मक्खी व गर्मी से राहत मिलती है, ठंड का प्रभाव भी बना रहता है। ठीक इसी प्रकार जितनी देर सामायिक में रहता है, उतनी देर तो सांसारिक झंझटों एवं कड़वाहटों से उसे विश्राम मिलता ही है, शांति एवं समता का प्रभाव बाद में भी रहता है। सामायिक में जितनी देर बैठता है उतनी देर सावद्य प्रवृत्तियों से बचने के कारण काफी हद तक कर्म-बंधन से भी राहत मिलती है। सांसारिक प्रवृत्तियों से आत्मा जो प्रमादी हो जाती है, शुद्ध सामायिक से वह आत्मा पुनः सजग हो जाती है। सामायिक से तीर्थंकर गोत्र बँधता है। नित्य एक सामायिक करने वाला एक वर्ष में बारह दिन साधु जैसा जीवन जीता है।

पूर्वाचार्यों ने फरमाया है कि राग-द्वेष रहित एक सामायिक करने से ९२,५९,२५,९२५ पल्योपम झाझेरा पूर्वबद्ध नरकगति नामकर्म आदि अशुभ कर्मों का नाश होता है। पूर्वाचार्यों ने सामायिक को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मानते हुए

इसके अनेक दृष्टियों से लाभ बताये हैं, उनमें से कुछ यहाँ दिये जा रहे हैं-

१. दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवण्णस्स खंडियं एगो।
एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स॥

एक आदमी प्रतिदिन लाख स्वर्ण मुद्राओं का दान करता है और दूसरा आदमी मात्र दो घड़ी की सामायिक करता है तो वह स्वर्णमुद्राओं का दान करने वाला व्यक्ति सामायिक करने वाले की समानता प्राप्त नहीं कर सकता।

२. तिव्वतवं तवमाणे जं नवि निट्टवइ जम्मकोडीहिं।
तं समभाविअचित्तो, खवेइ कम्मं खणद्धेण॥

करोड़ों जन्म तक निरन्तर उग्र तपश्चरण करने वाला साधक जिन कर्मों को नष्ट नहीं कर सकता, उनको समभाव पूर्वक सामायिक करने वाला साधक मात्र आधे ही क्षण में नष्ट कर डालता है।

३. जे केवि गया मोक्खं, जेवि य गच्छंति जे गमिस्संति।
ते सव्वे सामाइय - पभावेण मुणेयव्वं॥

जो भी साधक अतीत काल में मोक्ष गए हैं, वर्तमान में जा रहे हैं और भविष्य में जायेंगे- यह सब सामायिक का प्रभाव जानना चाहिए।

४. सामाइअम्मि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा।
एएण कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा॥

सामायिक व्रत भली-भाँति ग्रहण कर लेने पर श्रावक भी साधु जैसा हो जाता है, अतः आध्यात्मिक उच्च दशा को पाने के लिए अधिक से अधिक सामायिक करना चाहिए।

५. सामाइय-वय-जुत्तो, जाव मणो होइ नियमसंजुत्तो।
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइयं जतिया वारा॥

चंचल मन को नियंत्रण में रखते हुए जब तक सामायिक व्रत की अखण्डधारा चालू रहती है, तब तक अशुभ कर्म बराबर क्षीण होते रहते हैं।

६. आचार्य हरिभद्र ने अष्टक प्रकरण में कहा है-

निरवद्यमिदं ज्ञेय-मेकान्तेनैव तत्त्वतः।
कुशलाशयरूपत्वात्सर्वयोग-विशुद्धितः॥

सामायिक कुशल आशय रूप है, इसमें मन, वचन और शरीर रूप सब योगों की विशुद्धि हो जाती है। अतः परमार्थ दृष्टि से सामायिक एकान्त निरवद्य अर्थात् पापरहित है।

७.आचार्य हरिभद्र ने सामायिक के फल का निर्देश करते हुए अष्टक प्रकरण में पुनः कहा है कि सामायिक की निर्मल साधना से केवलज्ञान प्राप्त होता है-

सामायिकविशुद्धात्मा, सर्वथा घातिकर्मणः।
क्षयात्केवलमाप्नोति लोकालोकप्रकाशकम्।।

सामायिक से विशुद्ध हुआ आत्मा ज्ञानावरण आदि घातिकर्मों का सर्वथा अर्थात् पूर्णरूप से नाश कर लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान प्राप्त कर लेता है। **(क्रमशः)**

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के ६८वें जन्म-दिवस पर

गुरु महिमा

श्री श्रीकान्त जैन

घर के मालिक बिन जैसे, घर होता सूना डेरा है।
शिष्य को ज्योति गुरु हैं देते, ना दीखे तो अंधेरा है।।

पानी के बिन प्यासे को, ज्यों कोई बात सुहाए ना।
ज्यों विरह के मारे दिल को, बात किसी की भाए ना।।

ज्यों बसंत फूलों को लख के, बंद कली मुस्काती है।
सधवा नारी देख पति को, ज्यों मन में हर्षाती है।।

काली घटा गगन में लख ज्यों, मोर नाच मुस्काता है।
श्रीकान्त कर यूँ दर्श गुरु के, फूला नहीं समाता है।।

गुरु दर्शन का फल है उत्तम, मन को पाक बनाता है।
गुरु चरणों की धूलि पाकर, मन मैला धुल जाता है।।

जो जन गुरु के चरण पकड़कर, आतम में रम जाता है।
सिद्ध प्रभु के महलों का वह, प्राणी पथ पा जाता है।।

गुरु भगवन् हीरा के जो, वचन हिय में लाएगा।
दूर दिलों की भटकन होगी, चित्त प्रसन्नता पाएगा।।

गुरु हीरा के इसी रूप को जो, पल-पल भीतर ध्यायेगा।
कोमल पावन पद-पद्मों में जो, पल-पल शीश झुकाएगा।।

आनन्द युक्त जीवन जीकर, दुःखों से मुक्त हो जाएगा।
कहे 'श्रीकान्त' वह बड़भागी, शाश्वत समाधि पाएगा।।

-अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर (राज.)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति-३)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.१८५ एक समय की उत्कृष्ट काय स्थिति किसकी होती है?

उत्तर वेदक समकित (क्षायिक वेदक) की जघन्य तथा उत्कृष्ट दोनों ही स्थिति एक समय की होती है। जब कोई क्षयोपशम समकित वाला जीव क्षायिक समकित प्राप्त करता है, तब क्षायिक समकित पाने के एक समय पूर्व की अवस्था क्षायिक वेदक के नाम से जानी जाती है। दूसरे शब्दों में क्षयोपशम समकित में समकित मोहनीय के अन्तिम समय के वेदन की स्थिति भी क्षायिक वेदक है, इसके अगले ही समय में जीव क्षायिक समकित को प्राप्त कर लेता है।

प्र.१८६ वेदक समकित में जीव के कितने भेद पाये जाते हैं?

उत्तर जीव के ५६३ भेदों में से वेदक समकित में ९४ भेद पाये जाते हैं, जो इस प्रकार हैं- नरक गति में प्रथम तीन नरक के अपर्याप्त, तिर्यंच गति में स्थलचर युगलिक का अपर्याप्त, मनुष्य गति में- १५ कर्मभूमिज के पर्याप्त, ३० अकर्म भूमिज के अपर्याप्त, ५ भरत ५ एरवत इन १० के अपर्याप्त, देव गति में- ३५ वैमानिक (१२ देवलोक ९ लौकान्तिक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान) के अपर्याप्त, इस प्रकार ३+१+५५+३५ =९४ भेद होते हैं।

प्र.१८७ वेदक समकित में १५ कर्मभूमिज मनुष्य को छोड़कर शेष सभी भेद अपर्याप्त ही क्यों लिये गए हैं?

उत्तर यह स्पष्ट किया जा चुका है कि वेदक समकित क्षायिक समकित पाने के एक समय पूर्व की अवस्था है। अतः जहाँ-जहाँ क्षायिक समकित वाले जीव पाये जा सकते हैं, वहाँ-वहाँ वेदक समकित होती है। छठे कर्मग्रन्थ में स्पष्ट उल्लेख है कि मोहनीय कर्म की २२ प्रकृतियों की सत्ता वाले जीव काल करके चारों गतियों में जा सकता है अर्थात् जब

कोई जीव अनन्तानुबंधी चौक, मिथ्यात्व मोहनीय और मिश्रमोहनीय इन छः प्रकृतियों की सत्ता को समाप्त (क्षय अथवा विसंयोजना) कर देता है, किन्तु समकित मोहनीय का उदय चालू रहता है, तब वह काल करके चारों गतियों में जा सकता हैं। किन्तु यह निश्चित है कि अन्तर्मुहूर्त में वह जीव क्षायिक समकित प्राप्त करेगा, अतः क्षायिक समकित वाले भेदों में ही जायेगा।

साथ ही यह भी नियम है कि ऐसा जीव काल करके जहाँ भी उत्पन्न होगा, वहाँ शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने के पहले-पहले एक समय वेदक समकित में रहेगा, उसके अगले समय में क्षायिक समकित को प्राप्त कर लेगा। इसी कारण अपर्याप्त के भेद लिये गये हैं।

१५ कर्मभूमिज मनुष्य के पर्याप्त भेद इसलिए लिये हैं कि कोई जीव मनुष्य भव में रहते हुए ही क्षायिक प्राप्ति की प्रक्रिया प्रारंभ करे और उसे वहीं पूर्ण कर ले।

प्र.१८८ वेदक समकित में ५ भरत, ५ ऐरवत के अपर्याप्त तो लिए, किन्तु ५ महाविदेह के अपर्याप्त क्यों नहीं लिए?

उत्तर ५ भरत, ५ एरवत के अपर्याप्त में सभी मनुष्य न लेकर मात्र युगलिक काल के १ से ३ पल्योपम की स्थिति वाले मनुष्य ही लिए गये हैं। ५ महाविदेह के अपर्याप्त इसलिए नहीं लिये, क्योंकि वहाँ युगलिक मनुष्य होते ही नहीं हैं। वहाँ मनुष्यों की उत्कृष्ट स्थिति एक करोड़ पूर्व ही होती है। जबकि युगलिक मनुष्य की कम से कम स्थिति भी एक करोड़ पूर्व झाझेरी (अधिक) होती है जो महाविदेह में मिलना संभव नहीं है।

५ भरत, ५ एरवत में १ से ३ पल्योपम की स्थिति वाले मनुष्यों को लेने का कारण यह है कि उनमें ही सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न हो सकते हैं। जिन युगलिक मनुष्य व युगलिक तिर्यंचों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम से कम होती है वे नियमा मिथ्यादृष्टि होते हैं। यही कारण है कि खेचर युगलिक तथा ५६ अन्तर्द्वीपज मनुष्यों को एकान्त मिथ्यादृष्टि माना गया है। यह भी ध्यातव्य है कि युगलिकों में दृष्टि परिवर्तन नहीं होता है। जो जिस दृष्टि में उत्पन्न हुआ है, वह

जीवन पर्यन्त उसी दृष्टि में रहता है। हाँ, इतना अवश्य है कि युगलिकों में अपर्याप्त अवस्था में समकित बदल सकती है। किन्तु 'पर्याप्त अवस्था में तो समकित भी नहीं बदलती है।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षण बोर्ड, जोधपुर (राज.)

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगी ध्यान दें

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता का शुभारम्भ हो चुका है। प्रश्नपुस्तिका को प्राप्त कर अध्ययन करने का उत्साह जन-साधारण में दृष्टिगत हो रहा है। प्रतियोगी उत्तर लिखने से पूर्व निम्नांकित संशोधन अपनी प्रश्नपुस्तिका में अवश्य कर लेवें। (यदि पहले से सही हो तो संशोधन न करें)

१. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या २० को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- आचार्य श्री ने केन्द्रीय कारागार, जोधपुर में कैदियों को अपने प्रवचन के दौरान बुराइयों के फल से बचने का क्या उपाय बताया? (१३)
नया प्रश्न- ....में आत्मशांति है। (३)

२. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २१ के प्रश्न संख्या १६ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- मैं अपने दोषों का प्रायश्चित्त पूर्ण हुआ समझूँगा।
नया प्रश्न- इनके स्वप्न में भी कह देवां तो ये केणो कर लेवे।

३. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली २९ के प्रश्न संख्या ८ को निम्न प्रश्न से परिवर्तित कर लेवें-
पुराना प्रश्न- श्रमण प्रधान चतुर्वर्ण संघ ही तीर्थ है, ...वाला है।
नया प्रश्न- विषम स्वभाव के अणुओं का मेल शक्ति को..............नहीं।

४. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द ''कोसाणा'' के स्थान पर ''कोरना'' पढ़ा जाए।

५. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली ३१ के उत्तर चतुर्थ एवं तृतीय खण्ड (काव्यांजलि में निलीन व्यक्तित्व) से देने हैं।

६. प्रश्नपुस्तिका के प्रश्नावली १ के प्रश्न संख्या १९ में आए शब्द 'संवत् १९८८' के स्थान पर 'संवत् ११८८' पढ़ा जाए।

७. प्रश्नपुस्तिका की प्रश्नावली १४, प्रश्न संख्या १४ का उत्तर (४) शब्दों के स्थान पर (६) शब्दों का है।

उक्त संशोधनों के अतिरिक्त किसी प्रकार का संशोधन उत्तरदाता को लगे तो वह उत्तरपुस्तिका में नोट लगाकर भेज सकता है। अन्य संशय होने पर निम्नांकित पते एवं संयोजक श्री चंचलमल जी चोरडिया के फोन नं.०९४१४१-३४६०६ पर सम्पर्क किया जा सकता है- *अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर, ☎ ०२९१-२६३६७६३*

सम्यक् मनन

_श्री गौतम प्रदीप_

जीवन जीना एक कला है, तो जीवन को संतुलित एवं आत्मा के ऊर्ध्वमुखी विकास की दृष्टि से जीना एक विज्ञान। जैन-दर्शन ने सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप के समन्वय के रूप में एक पूर्ण जीवन दृष्टि दी है, जिससे हम अपना विश्लेषण करके, गुणावगुणों से परिचित होकर उनको जीवन में ग्रहण कर सकते हैं अथवा त्याग सकते हैं। स्विनांक कहते हैं कि "बिना आचरण के ज्ञान, शीशे की आँख की तरह है, सिर्फ दिखलाने के लिए और एकदम उपयोगिता रहित।"

आज का युग कम्प्यूटर का युग है। कम्प्यूटर की कार्य प्रणाली से सभी भली-भाँति परिचित हैं; कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली और हमारे जीवन की शैली समानान्तर है, कम्प्यूटर पर कोई भी कार्य तीन स्टेज में होता है : १. Input २. Process ३. Result। हमारी जीवन शैली की भी तीन स्टेज अथवा अवस्थाएँ हैं-

देखना/सुनना ⟶ ग्रहण/मनन करना ⟶ क्रियान्वयन करना/आचरण में ढालना

हम जीवन में हजारों चीजें अथवा घटनाएँ देखते हैं, आवाजें सुनते हैं, परन्तु उनमें से बहुत कम ही ग्रहण करते हैं। दुर्भाग्य से अधिकतर वे ही गुण ग्रहण करते हैं, जो त्याज्य होते हैं। कुछ उदाहरणों से हम ये बात समझने का प्रयत्न कर रहे हैं:

पंखा गर्मियों में हर रोज चलता है, उसकी एक निश्चित आवाज होती है, हम उसे रोज सुनते हैं, परन्तु ग्रहण नहीं करते, क्योंकि हमें वह सहज लगती है। किसी दिन यह आवाज असामान्य अथवा असहज हो जाए तो हम उसे एकदम से ग्रहण कर लेते हैं और ग्रहण करने के साथ मनन भी आरंभ हो जाता है कि शायद पंखे की बियरिंग खराब हो गई है, इत्यादि और परिणामस्वरूप पंखे को मिस्त्री के पास रिपेयरिंग के लिए भेज दिया जाता है।

दूसरा उदाहरण गहनों का लेते हैं। किसी शादी में किसी के हाथों में पहने हुए अतिसुन्दर कंगन देखते हैं, पहली अवस्था में उन्हें सिर्फ देखते हैं, परन्तु जो व्यक्ति जैसे ही उन्हें ग्रहण करते हैं तो मनन आरंभ हो जाता है कि ये

कितने ग्राम के होंगे? कितनी कीमत के होंगे? कहाँ से खरीदे होंगे? और परिणामस्वरूप उसकी पूछताछ करके उसी की भाँति कंगन बनवाने की भाव-भूमि तैयार हो जाती है।

ठीक ऐसा ही एक उदाहरण फैशन का है; हम पहले टी.वी. अथवा सिनेमा में कोई चीज/वस्तु अथवा घटना देखते हैं, फिर उसे ग्रहण करते हैं तत्पश्चात् उस पर आचरण करने की तत्परता बनती है।

सामान्यतया ये तीनों अवस्थाएँ हर क्रिया पर लागू होती हैं, अर्थात् हम किसी भी अच्छी घटना अथवा अच्छे गुणों पर गहन अध्ययन-मनन एवं चिन्तन करें। अपने विवेक से उनको ग्रहण करें, तभी उन्हें अपने आचरण में उतारने की क्रिया आरंभ हो सकेगी।

इस युग में कुछ बिरले ही होते हैं जो धर्म को सुन पाते हैं अर्थात् जिनमें धर्म का Input हो पाता है। इन बिरले व्यक्तियों में कुछ विशिष्ट व्यक्ति ही इस धर्म का Process कर पाते हैं अर्थात् ग्रहण कर पाते हैं, मनन कर पाते हैं, विचार कर पाते हैं। यहाँ से फिर से दो धारायें निकलती हैं। एक जो असम्यक् मनन करते हैं और दूसरे जो सम्यक् मनन करते हैं। असम्यक् मनन करने वाले Negative Process करके गलत परिणाम को प्राप्त होते हैं तथा धर्म के सिद्धान्तों को इस युग में आचरण में ढालना सम्भव नहीं है, समझ कर धर्म को त्याग देते है।

अब दूसरी धारा के बारे में चर्चा करते हैं, ये वे व्यक्ति हैं जो सम्यक् चिन्तन, सम्यक् विचार, सम्यक् मनन करते हैं तथा धर्म के गूढ रहस्यों को जानने, समझने की कोशिश करते हैं। यह कोशिश करते-करते कब सम्यक् आचरण की ओर अग्रसर हो जाते हैं, वे स्वयं ही नहीं जान पाते हैं।

बस फिर क्या है? फिर तो जीवन की धारायें बदल जाती हैं, जीवन जीने का संकल्प बदल जाता है, व्यक्ति रूपान्तरित होना शुरू हो जाता है और उसका जीवन स्वयं धर्म बन जाता है। जिसका यह भव धर्ममय बन जाता है, इसके आगे के भव भी धर्ममय बन जाते हैं, कर्मों की जंजीरें टूट जाती हैं और व्यक्ति केवलज्ञान, केवलदर्शन को प्राप्त कर लेता है। शाश्वत सुखों को प्राप्त कर लेता है। हम सब भी सम्यक् मनन करके इस अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

-८, महावीर नगर, रेजीडेन्सी रोड़, जोधपुर

नारी-स्तम्भ

गर्भस्थ शिशु के प्रति मातृशक्ति के कर्त्तव्य

श्री जसराज चौपड़ा

बाल ब्रह्मचारिणी एवं चारित्र आत्माओं की बात छोड़ दें तो गृहस्थ बसाने वाली हर शादी-शुदा नारी की एवं उसके परिवार की यह आकांक्षा होती है कि वह सृजनदात्री माँ बनकर वंश एवं परिवार में अभिवृद्धि करे। इसीलिए सृजन की स्रोत नारी जाति को मातृशक्ति के रूप में संबोधित किया जाता है। बगैर माँ बने गृहस्थ नारी स्वयं को अपूर्ण मानती है एवं समय पर संतान पैदा न होने पर पता नहीं किन-किन डॉक्टरों, वैद्यों, हकीमों आदि से इलाज करवाती है एवं किन्नर, देवताओं यानी भैरूजी, भोमियाजी, माताजी आदि के चरणों में अपना सिर नमाकर संतान की मनौती माँगने में भी संकोच नहीं करती, क्योंकि सन्तान के अभाव में उसे एक रीतापन एवं अपूर्णता का भाव खलता रहता है। (यद्यपि सन्तान न होने पर भी कतिपय नारियाँ अपने को संतुष्ट पाती हैं।)

यह आवश्यक है कि माँ बनने के गौरव से गौरवान्वित होने की स्थिति में नारी अपनी गर्भस्थ संतान के प्रति मातृत्व के दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का सम्पूर्ण जिम्मेदारी एवं सम्पूर्ण निष्ठा के साथ निर्वहन करे ताकि गर्भस्थ शिशु समुचित एवं स्वस्थ पोषण ही नहीं पाए वरन् गर्भ में रहने के काल में ही एक सत्-संतान, कुलदीपक या दीपिका बनने के संस्कारों से भावित भी हो पाये। गर्भस्थ शिशु का सही एवं सात्त्विक पोषण उसके भावी पिता एवं गर्भस्थ शिशु की माँ की विशेष एवं महती जिम्मेदारी है।

यह सर्व विदित है कि माता के खान-पान एवं आचार-विचार का गर्भस्थ शिशु पर पूरा प्रभाव पडता है। शिशु को जन्म के साथ जो रोग मिलते हैं वे कुछ अंशों में माता के असंतुलित एवं असात्त्विक खान-पान के प्रभाव से होते हैं। अतएव मातृत्व की जिम्मेदारी सामान्य नहीं, असामान्य है। गर्भकाल में किसी भी बीमारी की दवा लेने से पूर्व डाक्टर या वैद्य को इस बात से अवगत कराना जरूरी है कि मरीज एक गर्भस्थ शिशु की माँ है। गर्भावस्था का इलाज सामान्य इलाज से हटकर होता है एवं ऐसी समस्त दवाइयों का सेवन निषिद्ध

होता है जो गर्भस्थ शिशु के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव या हानिकारक प्रभाव डालने वाला हो।

हमारे शास्त्रों में सर्वत्र उल्लेख है कि तीर्थंकरों व चक्रवर्तियों की माताएँ जैसे ही रजस्वला होना बंद होती, तो गर्भ में शिशु होने का आभास पाती थीं तब से वे अलग कक्ष में, जो उनके पति के कक्ष से भिन्न होता था निवास करती थीं एवं जब भी शुभ स्वप्न आते थे, उन्हें अपने पति को बताने अपने कक्ष से चलकर पति कक्ष में मन्थर गति से प्रवेश कर उन शुभ स्वप्नों से उन्हें अवगत कराती थी। गर्भस्थ स्त्री गर्भकाल में पति सहवास एवं रति क्रिया से स्वयं को अलग कर लेती थी। पशु-पक्षी भी गर्भकाल में कभी रति क्रिया में रत नहीं होते हैं। मानव योनि में ही पुरुष-स्त्री असंयमित जीवन जीते देखे जाते हैं।

गर्भकाल में माता का खान-पान सात्त्विक एवं पोषक होना चाहिए ताकि गर्भस्थ शिशु सही पोषण प्राप्त कर स्वस्थ दशा में एवं पूर्ण रूप से विकसित होकर जन्म ले। शुद्ध एवं सात्त्विक खुराक का बच्चे के स्वास्थ्य पर बड़ा अनुकूल एवं प्रभावकारी असर पड़ता है। स्वयं बालक की मनःस्थिति भी माता के खान-पान को प्रभावित करती है। इसे दोहद की संज्ञा दी जाती है। गर्भकाल में कई माताओं को मात्र खट्टा ही खट्टा या मीठा ही मीठा मनभावन लगता है। कई माताएँ गर्भकाल में चूना या मुल्तानी मिट्टी खाती रहती हैं जबकि सामान्य अवस्था में वे ऐसा नहीं करतीं। महाराज श्रेणिक की पत्नी महारानी चेलना को जब उनका पुत्र कोणिक गर्भ में था तो अपने पति के कलेजे का माँस खाने का दोहद उत्पन्न हुआ था। महारानी ने पुत्र को पितृद्रोही मानकर जन्मते ही परित्याग कर मल त्यागने के स्थान पर फिंकवा दिया था। अंततः कोणिक ही महाराज श्रेणिक की मौत का कारण बना। इसी तरह महाराज श्रेणिक की पत्नी महारानी नंदा को जब राजकुमार अभय गर्भ में थे तब सभी जीवों को अभयदान देने का दोहद हुआ और इसी कारण जन्म लेने पर बालक का नाम अभयकुमार रखा गया। तीर्थंकर शांतिनाथ (जैन धर्म के सोलहवें तीर्थंकर) जब गर्भ में थे तो राज्य में महामारी फैल गई। प्रभु शांतिनाथ की माता अचिरादेवी को दोहद उत्पन्न हुआ कि वे स्वयं शुद्ध जल से स्नान कर उसे जनता पर छिड़के तो महामारी दूर होगी एवं वस्तुतः ऐसा ही हुआ।

स्वयं माँ के आचार-विचार का भी बच्चे पर असर होता है उसका

प्रत्यक्ष प्रमाण जैन वाङ्मय में महारानी मदालसा के उदाहरण से मिलता है। उस माता ने अपने छः गर्भस्थ पुत्रों को संस्कार दिये **"शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि-निरंजनोऽसि"** अर्थात् तुम शुद्ध हो, बुद्ध हो, निरंजन हो। गर्भकाल के उन संस्कारों से वे छहों बालक जन्म लेकर वीतराग पथ पर अग्रसित हो साधु बने एवं उन्होंने आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया। माता के आचार-विचार एवं सदाचार का गर्भस्थ शिशु पर प्रभाव पड़ता है, अतः माता को शिशु के गर्भस्थ काल में धार्मिक एवं सात्त्विक जीवन बिताना चाहिये, सत्शास्त्र पढ़ने चाहिए एवं अच्छे संतों का सत्संग कर गर्भस्थ शिशु को संस्कारित करने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि जन्म के बाद बच्चा शुद्ध सात्त्विक जीवन जीए एवं माता-पिता की आज्ञा का पालक एवं सेवा करने वाला बने।

गर्भस्थ शिशु का भ्रूण प्राणवान् होता है। वह पंचेन्द्रिय जीव है। भ्रूण के प्राणवान् होने के उदाहरणों से जैन एवं वैदिक शास्त्र भरे पड़े हैं। भगवान् महावीर जब गर्भस्थ शिशु थे तब एक बार उन्होंने विचार किया कि मेरे हिलने-डुलने से माता को कष्ट होता है तो उन्होंने निर्णय लिया कि माँ के कष्ट-निवारण हेतु मैं हिलना-डुलना बंद करता हूँ। यहाँ यह खयाल में लें कि गर्भस्थ शिशु अपनी प्रज्ञा से विचार कर जन्म के पूर्व भी निर्णय लेने की शक्ति रखता है।

महाभारत का कथानक है कि सुभद्रा ने जब अर्जुन से चक्रव्यूह भेदन की विधि पूछी तब अभिमन्यु उनके गर्भ में था। अर्जुन ने जब तक चक्रव्यूह के सात चक्रों के भेदन की विधि बताई सुभद्रा जाग रही थी, अतः अभिमन्यु के भ्रूण ने सात चक्र भेदन की विधि तो सीख ली, पर जैसे ही अर्जुन सात चक्र-भेदन के बाद चक्रव्यूह से बाहर निकलने की विधि बता रहे थे तब वह सो गई। उसके सोने से अभिमन्यु का भ्रूण भी निद्राग्रस्त हो गया अतएव महाभारत युद्ध में उसने अर्जुन की अनुपस्थिति में चक्रव्यूह के सातों चक्र तो भेद लिए, पर उनसे बाहर निकलने की विधि न सुन पाने से मौत का शिकार हो गया। यह है भ्रूण की ग्रहण क्षमता का प्रबल उदाहरण।

अष्टावक्र गर्भ में थे तभी तत्त्ववेत्ता बन गये थे एवं अपने पिता कुडुल द्वारा गलत वेदोच्चार पर उन्हें रोककर सही उच्चारण बतलाते थे। पिता को उनके इस कृत्य से क्रोध आ गया कि जो बालक गर्भकाल में ही पिता की टोका-टोकी करता है वह जन्म लेने के बाद पता नहीं क्या-क्या जुल्म ढायेगा अतएव

उन्होंने अहंकार एवं क्रोध के वशीभूत होकर अपनी पत्नी के पेट पर लात मारी जिससे गर्भस्थ शिशु के आठ अंग टेढ़े हो गये एवं इसी कारण उनका नाम जीवन भर अष्टावक्र (आठ टेढ़े अंग वाला) ही बना रहा।

जैन वाङ्मय के भगवती सूत्र शतक एक, उद्देशक सात, सूत्र १९ में उल्लेख है कि यदि गर्भस्थ शिशु वैक्रिय लब्धि का स्वामी है तो वह पिता पर हुए आक्रमण का संकट दूर करने हेतु वैक्रिय लब्धि से सेना का निर्माण करके शत्रु सेना का नाश कर पिता को विजयश्री का वरण करा सकता है। गणधर गौतम के प्रश्न पर प्रभु महावीर ने फरमाया था कि वह गर्भस्थ शिशु यदि इस काल में काल कर ले तो वह शिशु भ्रूण नरकगामी बनेगा एवं शुभ भावों में काल करने वाला शिशु भ्रूण स्वर्गगमन का अधिकारी हो सकता है।

उपर्युक्त विवेचन से निर्विवाद रूप से यह सिद्ध होता है कि मानव भ्रूण मन वाला, ज्ञान वाला, निर्णय लेने की क्षमता रखने वाला एक पंचेन्द्रिय प्राणी है एवं उसको गर्भकाल में मार देना मानव हत्या से कम जघन्य पाप नहीं है। प्रत्येक माता का यह कर्त्तव्य है कि सृजन शक्ति की अधिकारिणी वह माँ न तो अपने भ्रूण का परीक्षण करावे न लड़की होने का पता लगने पर उससे निजात पाने के घृणित एवं महापाप युक्त कार्य करे। वह कानूनी-अपराध के कृत्य की सहयोगिनी न बने एवं अपनी गर्भस्थ संतति को जन्म लेने का पूरा अवसर प्रदान करे। क्रूर माताओं के सहयोग से आज स्त्रियों की संख्या पुरुषों के मुकाबले एक हजार के पीछे ७८० से लेकर ९९२ तक विभिन्न प्रान्तों में रह गई है। ऐसा कार्य घोर पाप युक्त कृत्य होने के साथ-साथ कानूनी अपराध है। भ्रूण परीक्षण स्वयं ही कानूनी अपराध है एवं इस तरह के कृत्य भविष्य में अनाचार एवं व्यभिचार को पनपाने वाली समाज-व्यवस्था के संदेशवाहक साबित होंगे एवं सामाजिकता के संस्कार एवं सदाचार युक्त जीवन की जड़ें खोदने वाले सिद्ध होंगे।

एक पुरुष-स्त्री का जोड़ा एक बार के संभोग से करीब नौ लाख सन्नी एवं असंख्यात असन्नी जीवों की उत्पत्ति, विसर्जन एवं विनाश की क्षमता वाला होता है। सन्नी जीव मन वाला एवं असन्नी जीव बगैर मन वाला होता है। असन्नी से सन्नी जीव की हत्या या प्राणों का अतिपात ज्यादा पापयुक्त एवं घृणित है। एक हजार योजन का मच्छ जो एक ही बार में हजारों मछलियों को गटक जाता है, असन्नी होने से पहली नरक से आगे नहीं बढ़ता, परन्तु तंदुल मच्छ जो मन

वाला होता है किसी मछली को नहीं मारने की स्थिति में होने पर भी इस सोच के कारण कि यदि वह हजार योजन के मच्छ जितना विशाल होता तो किसी भी मछली को जिन्दा नहीं छोड़ता इस तरह के मनोगत संकल्प के कारण किसी प्राणी की हत्या किये बिना या हत्या की क्षमता से युक्त हुए बिना भी सातवीं नरक का मेहमान बन जाता है अतएव हर माता को भ्रूण के रूप में पंचेन्द्रिय सन्नी जीव की हत्या कभी नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने वाला घोरातिघोर एवं जघन्यतम पाप का भागी होता है। हर माँ जो अपने गर्भ में किसी शिशु को समाहित किए हुए है उसे इससे बचना चाहिए। उसका यह कृत्य मातृत्व का सरासर एवं सर्वाधिक निंदनीय अपमान है। माँ अनिच्छित संतान से छुटकारा पाने हेतु यमराज का रूप धारण कर ले, यह मातृत्व भाव के अधःपतन की पराकाष्ठा है जो अक्षम्य अपराध है एवं उस गर्भस्थ शिशु को अकारण अपनी मौज-शौक की सजा देने का घृणित प्रयास है।

अपने असंयमित जीवन या आमोद-प्रमोद की सजा हमें गर्भस्थ शिशु भ्रूण को देने का क्या तो अधिकार है एवं क्या ही उसका औचित्य है? शिशु का इसमें कौनसा गुनाह या कसूर है जिसका उसे इतना भयंकर दण्ड दिया जावे? यह मात्र स्वार्थ की पराकाष्ठा, नैतिकता का अधःपतन एवं आध्यात्मिकता की दृष्टि से घोरतम पाप एवं कानून की दृष्टि से जघन्यतम अपराध है।

उपर्युक्त विवेचन का सार यही है कि मातृत्व एवं सृजन भाव से महिमा मंडित नारी को शिशु के गर्भकाल में पूर्ण संयमित, सादगी पूर्ण तथा वात्सल्य एवं करुणा भाव से परिपूर्ण, सदाचार एवं गुण ग्राहकता से आप्लावित, सजग और कर्त्तव्यनिष्ठ जीवन जीकर अपनी कोख में पल रहे शिशु को चाहे वह पुत्र हो या पुत्री, इस हेतु समस्त सुविधाएँ प्रदान कर एक स्वस्थ एवं संस्कारित संतान की माँ बनने का गौरव प्राप्त करना चाहिए, ताकि भावी संतति के लिए यह संसार बांह पसार उसे अपने में समाविष्ट कर पाये। ऐसी स्वस्थ एवं संस्कारित संतानों के जन्म से ही यह सृष्टि प्राणी मात्र के लिए रहने की जगह बनेगी तथा पावन एवं नैतिक आधार प्रदान कर पायेगी।

-पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान हाइकोर्ट

२०/३३, रेणु पथ, मानसरोवर, जयपुर (राज.)

कुछ क्षणिकाएँ

डॉ. दिलीप धींग

क्रोध

क्रोध के ज्वालामुखी से,
फूटता अपशब्दों का लावा।
हो जाते संबंध बंजर,
बहती वैर की हवा।।

अभ्याख्यान

कलंक वह शून्य जिसके,
आगे-पीछे अंक नहीं है।
विषधर का डंक है आरोपित,
पर मच्छर का भी डंक नहीं है।।

मान

अभिमान जकड़े नहीं मुझको,
रखता प्रतिपल इसका ध्यान।
धिक्-धिक् निरभिमानता का,
मुझे हो जाता फिर अभिमान।।

पैशुन्य

वह ऐसा है, वह वैसा है,
छींटाकशी है गली-गली।
स्व-दर्शन से मिट जाते हैं,
पर-दर्शन, निन्दा, चुगली।।

माया

सीधी सरल लकड़ियों पर,
विजय-पताकाएँ फहरतीं।
टेढ़ी-मेढ़ी लकड़ियाँ सब,
देखी हैं चूल्हे में जलतीं।।

पर-परिवाद

क्या रखा है पर-निन्दा में,
निन्दा करना बहुत सरल है।
आत्मावलोकन करने वाले,
उत्तम मानव बहुत विरल हैं।।

लोभ

लोभवृत्ति की ये आदत,
भयंकर परिणाम लाती।
मूलधन है असुरक्षित,
ब्याज की चिंता सताती।।

रति-अरति

क्या मनोज्ञ क्या अमनोज्ञ है,
बाह्य जगत सब पुद्गल है।
विषय पाश में बंध मत जाना,
समभावों में ही मंगल है।।

-ट्रेड हाउस, दूसरी मंजिल, २६-अश्विनी मार्ग, उदयपुर (राज.)

बाल-स्तम्भ

भूल की भयंकरता

उपाध्याय श्री पुष्करमुनि जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० अप्रेल २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को **श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर** द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। प्रत्येक माह की पुरस्कार राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार २५०/- रुपये, द्वितीय पुरस्कार १५०/- रुपये, तृतीय पुरस्कार १००/- रुपये तथा चार सान्त्वना पुरस्कार ५०/- रुपये प्रत्येक। इस स्तम्भ की प्रतियोगिता में १० वर्ष से २१ वर्ष के छात्र-छात्रा ही भाग ले सकते हैं। इसके लिए उन्हें उत्तरपत्र पर अपने नाम एवं पते के साथ जन्मतिथि का ईमानदारी से उल्लेख करना होगा।

राजगृह नरेश वीरसेन अद्‌भुत पराक्रमी था। उसकी शूरवीरता की आण दूर-दूर तक थी। अनेक राजा उसके अधीन थे। किन्तु उत्तर देश के पोदनपुर का राजा सिंहरथ न उसका सम्मान करता था और न ही उसकी अधीनता स्वीकार करता था। वह भी सिंह के समान बली और पराक्रमी था। अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखना चाहता था।

राजा वीरसेन ने कई बार प्रयास किया कि सिंहरथ उसकी अधीनता स्वीकार कर ले, दूत भी भेजे, किन्तु सिंहरथ ने सदा ही टका सा जवाब दे दिया।

क्षत्रिय अभिमानी तो होता ही है। राजा वीरसेन भी अभिमानी था और सिंहरथ भी कौन-सा कम था। जब दो अभिमान टकराते हैं तो चिंगारियाँ निकलती हैं, युद्ध की भीषण ज्वालाएँ लपलपाकर हजारों लाखों व्यक्तियों के प्राणों की होली खेलती हैं।

यही वीरसेन के साथ हुआ। वह अपनी चतुरंगिणी सेना लेकर पोदनपुर जा पहुँचा। सोचा था- कुछ ही दिनों में सिंहरथ के अभिमान को चूर-चूर कर दूँगा, उसका मस्तक अपने चरणों में झुका लूँगा।

लेकिन सिंहरथ भी मोम का पुतला नहीं था, जो युद्ध की आँच लगते

ही पिघल जाता; टक्कर का योद्धा था। युद्ध लम्बा खिंचता चला गया। काफी दिन हो गये, हार-जीत का निर्णय न हो सका। सिंहरथ बराबर की टक्कर ले रहा था।

एक रात शिविर में आराम करते समय राजा का विचार प्रवाह बहने लगा- "मेरे अनुमान के विपरीत युद्ध लम्बा खिंचता जा रहा है। समाप्त होने के आसार ही नहीं नजर आ रहे हैं। मैं यहाँ फँस गया। युद्ध को बीच में छोड़कर नहीं जा सकता। इससे तो मेरे क्षत्रियत्व को धब्बा लगेगा। जाने मेरे राज्य का क्या हो रहा होगा? रानी वीरसेना और मेरे एकमात्र पुत्र सिंह की जाने क्या दशा होगी? किस तरह दिन बिता रहे होंगे?"

राजा वीरसेन का ध्यान अपने पुत्र पर केन्द्रित हो गया- "अभी तो बालक ही है सिंह। उसके पढ़ने की आयु है। यद्यपि मैंने उपाध्याय सोमशर्मा जी को उसका शिक्षक नियुक्त कर दिया है, उपाध्याय बहुत योग्य भी हैं, अनेक विद्याओं में पारंगत हैं, फिर भी मेरी अनुपस्थिति में कहीं लापरवाह न हो जायें। पिता के नाते मुझे प्रेरणा देनी चाहिए, क्योंकि प्रेरणा के अभाव में कर्त्तव्यशील पुरुष भी लापरवाह हो जाता है।"

काफी देर तक सोच-विचार करके राजा वीरसेन ने एक पत्र लिखने का निर्णय कर लिया। पत्र में उसने अन्य बातें लिखने के बाद अपने पुत्र सिंह के लिए विशेष आदेश दिया- **'त्वया अधीयतामिति मदाज्ञाचिरेण विधेया।'** अर्थात् हे पुत्र! तुम शिक्षाओं, कलाओं और ज्ञान का खूब मन लगाकर अभ्यास करो; मेरी इस आज्ञा का पालन तत्काल करो।

इसका सीधा सा अभिप्राय यह था कि राजा वीरसेन ने अपने पुत्र को अध्ययन की प्रेरणा दी थी। अच्छी तरह पुनः एक बार पढ़कर पत्र पर राजा ने अपनी मुद्रा अंकित की, उसे सील बन्द करके पत्रवाहक को दिया। पत्रवाहक उस पत्र को लेकर राजगृह जा पहुँचा।

पत्र-पाठक ने सबके सामने उस पत्र को पढ़ा। पूरा पत्र तो ठीक पढ़ दिया किन्तु 'अधीयताम्' के स्थान पर 'अंधीयताम्' पढ़ दिया और साथ ही अर्थ भी बता दिया- 'अंधे हो जाओ।'

सिंह, यद्यपि अभी बालक था, किन्तु था पिता का आज्ञाकारी। वह

पिता की आज्ञा में मीन-मेख नहीं निकालता था, आगा-पीछा नहीं सोचता था। वह अंधा होने के लिए तैयार हो गया।

अन्य लोग भी चकित थे, उनकी समझ में ही नहीं आया कि राजा अपने इकलौते पुत्र के लिए ऐसी अनर्थकारी आज्ञा कैसे दे सकते हैं। फिर भी वे स्वामिभक्त थे और स्वामिभक्ति का अर्थ यही समझते कि बिना ननुनच किये आज्ञा पालन करना।

राजा की आज्ञा का तत्काल पालन किया गया, सिंह अंधा हो गया। पत्र-पाठक की एक छोटी-सी, सिर्फ एक बिन्दु की भूल ने घोर अनर्थ कर दिया।

राजा वीरसेन बड़ी कुशलता और वीरतापूर्वक लड़े। उन्होंने पोदनपुर नरेश सिंहरथ को पराजित कर दिया, उसे अपने अधीन बना लिया।

विजय-दुन्दुभि बजाते हुए बड़े हर्षपूर्वक राजा वीरसेन ने राजगृह में प्रवेश किया। अपने विजयी नरेश का नागरिकों ने दिल खोलकर स्वागत किया।

खुशी में झूमते हुए राजा वीरसेन ने ज्योंही राजमहल में प्रवेश किया तो उनकी सारी खुशी को पाला मार गया। क्रोध में त्योंरियाँ चढ़ गईं। कठोर गर्जना की-

"किसने यह अनर्थ किया? मेरे पुत्र को किसने अंधा किंया?"

राजा की क्रोध भरी गर्जना से सबके प्राण सूख गये। बड़ी कठिनाई से कह सके-

"अपराध क्षमा हो अन्नदाता! आपने ही तो पत्र में ऐसा आदेश दिया था।"

"मैंने!" राजा वीरसेन और भी जोर से गरजे- "कहाँ है, वह पत्र लाओ और उस पत्र-पाठक को भी बुलाओ।"

पत्र लाया गया और पत्र-पाठक को भी बुलाया गया। भूल मालूम हो गई। राजा ने पत्र-पाठक को तिरस्कृत करके देश-निकाला दे दिया।

पर उससे हुआ क्या? राजा के जीवन में तो अन्धकार हो ही गया। युवराज सिंह का जीवन भी अंधेरी गहराइयों में डूब गया। उसका तो जीवन ही अंधेरा हो गया।

इसी प्रकार जो साधक को आगम-पाठ करते समय एक बिन्दु की भी भूल से बचना चाहिए। ज्ञानाभ्यासी को सतत जागरूक और सावधान रहना चाहिए कि एक बिन्दु की भी भूल न हो।

प्रश्न-

१. सिंहरथ राजा वीरसेन की अधीनता क्यों नहीं स्वीकार करता था?

२. "जब दो अभिमान टकराते हैं तो सर्वत्र विनाश होता हैं"- इस बात से आप कहाँ तक सहमत हैं?

३. मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए- प्राणों की होली खेलना, अभिमान चूर-चूर होना, त्योरियाँ चढ़ना, खुशी को पाला मारना, प्राण सूखना।

४. 'भूल के भयंकर परिणाम होते हैं' इस संबंध में अपने जीवन का कोई प्रसंग लिखें।

५. पुत्र के अंधे होने पर राजा के जीवन में अंधकार कैसे हो गया? समझाइये।

६. आपके मत में स्वामिभक्ति से क्या अभिप्राय है?

७. बिन्दु के कारण अर्थ भेद के दो उदाहरण दीजिए।

बाल-स्तम्भ [जनवरी-२००६] का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी २००६ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'गरीबी में अमीरी' कहानी के प्रश्नों के उत्तर १९ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २५ में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	कमलेश कुमार जैन-पादरु(बाडमेर)	२४
द्वितीय पुरस्कार-१५०/-	यशवन्त गोलेछा-ब्यावर	२३.५
तृतीय पुरस्कार- १००/-	श्वेता जैन-समदड़ी	२३
सान्त्वना पुरस्कार-५०/-	हंसा जैन-मालपुरा	२२
	चारु गुलेछा-पीपाड़	२२
	मीनाक्षी छाजेड़- समदड़ी	२२
	पारुल जैन-आगरा	२१

यदि व्यक्ति सत्संग, ध्यान, साधना, उपासना, भजन और आध्यात्म को जीवन में उतार ले तो बिना पैसे दिये ही उसका बीमा हो जाता हैं तथा उसका मुआवजा भी उसको खुद को ही मिल जाता है।

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(६)

प्रश्न १२. रात्रि-भोजन त्याग के उल्लेख दशवैकालिक सूत्र में कहाँ-कहाँ हैं? अन्य आगमों एवं ग्रन्थों का भी उल्लेख किया जा सकता है।

उत्तर- दशवैकालिक सूत्र में रात्रिभोजन-त्याग का वर्णन अनेक स्थलों पर आया है।

१. **राइभत्ते-** दशवैकालिक अ.३ गाथा २ में रात्रि-भोजन निर्ग्रन्थ के लिए अनाचीर्ण बताया है।

२. **राइभोयणाओ वेरमणं-** दशवैकालिक के अ.४ में पाँच महाव्रतों के साथ रात्रि-भोजन (त्याग) विरमण का छठा व्रत कहा है।

३. **सव्वाहारं ण भुंजति णिग्गंथा राइभोयणं-** दशवैकालिक, अध्ययन ६ गाथा २३, २४, २५, २६ में रात्रि-भोजन करने से निर्ग्रन्थ अवस्था से भ्रष्ट होना कहा है।

४. **मणसा वि ण पत्थए-** दशवैकालिक, अ.८ गाथा २८ में सूर्य अस्त से सूर्योदय तक अर्थात् रात्रि में मन से भी आहार की इच्छा का निषेध किया गया है।

अन्य आगमों में भी रात्रिभोजन-त्याग का उल्लेख हुआ है, यथा-

१. **उत्तराध्ययन सूत्र- राइभोयण वज्जणं-** अध्ययन १९ गाथा ३९- संयम की दुष्करता के वर्णन में चारों प्रकार के आहारों का रात्रि में वर्जन करना अत्यन्त दुष्कर कहा है।

२. **बृहत्कल्प सूत्र में-नो कप्पइ निग्गथाणं वा निग्गथीणं वा राओ वा वियाले वा असणं पाणं खाइमं साइमं वा पडिगाहेचए-** रात्रि या विकाल के समय में चारों प्रकार के आहार-ग्रहण करने का निषेध है और चौथे उद्देशक में रात्रि-भोजन का अनुद्घातिक (गुरु) प्रायश्चित्त कहा है। पाँचवें उद्देशक में आहार करते समय ज्ञात हो जाय कि सूर्य उदय नहीं हुआ है या सूर्यास्त हो गया है तो मुँह में रखा हुआ आहार भी निकालकर परठने की बात कही है तथा इसी उद्देशक में 'उद्गाल' आ जाय तो उसे निगलने से **'राइभोयणपडिसेवणपत्ता'** कहकर प्रायश्चित्त का कारण बताया है।

३. **निशीथ सूत्र में उद्देशक ११-** रात्रि भोजन की चौभंगी द्वारा निषेध किया गया है एवं उसकी प्रशंसा करने वालों को भी गुरु चौमासी का प्रायश्चित्त

कहा है।

४. **दशाश्रुतस्कंध की दूसरी दशा-** रात्रि भोजन करना सबल दोष कहा है। 'राइभोयणं भुंजमाणे सबले' एवं छठी दशा में श्रावक की प्रतिमा में रात्रि-भोजन त्याग करना आवश्यक बताया है।

५. **ठाणांग सूत्र** के तीसरे अध्ययन व पाँचवें अध्ययन में रात्रि-भोजन का अनुद्घातिक प्रायश्चित्त कहा है।

६. **सूयगडांग सूत्र-** श्रुतस्कन्ध १ अध्ययन २ उद्देशक ३- रात्रि-भोजन त्याग सहित पंच महाव्रत परम रत्न कहे गये हैं। **'से वारिया इत्थी स राइभत्तं उव्वहा णवं दुक्खखयट्ठयाए'** - अध्ययन ६, गाथा २८

७. **बृहत्कल्प** में साधु को रात्रि में आहार तिल-तुष मात्र भी रखने का निषेध है-

'तयप्पमाण मेत्तमवि भुइप्पमाण मितमवि तोयबिंदुप्पमाणमित्तमवि'

अन्य ग्रन्थों में उल्लेख

१. **कार्तिकेयानुप्रेक्षा-** रात्रि-भोजन त्याग को छः महीने उपवास के तुल्य बताया है।

२. **महाभारत** के शांति पर्व में रात्रि-भोजन को नरक जाने का कारण बताया है।

३. **वेदव्यास** के योगशास्त्र में रात्रि-भोजन से उल्लू, कौआ, बिल्ली, गीदड़, सूकर, सर्प, बिच्छु आदि योनियों में जन्म धारण करना बताया है।

४. **मनुस्मृति** में रात्रि राक्षसी होती है, अतः रात्रि के समय भोजन नहीं करना चाहिए।

५. **योगशास्त्र** में कहा है कि नित्य रात्रि भोजन त्याग से अग्निहोत्र का फल मिलता है एवं तीर्थयात्रा का भी। आहुति, स्नान, श्राद्ध, देवता पूजन, दान एवं भोजन भी रात्रि में नहीं किये जाते।

६. **मार्कण्डेय मुनि** ने रात्रि में पानी पीना खून के समान व खाना माँस-तुल्य कहा है।

७. **हेमचन्द्राचार्य** ने दिन और रात्रि में बिना कुछ रोक-टोक के खाने वाले को बिना सींग-पूँछ वाला जानवर होना सूचित किया है।

८. **आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा.** के रात्रि-भोजन त्याग के दोहे भी तलस्पर्शी व प्रेरणास्रोत हैं-

चिड़ी कमेड़ी कागला, रात पड़्या नहीं खाय।
हे नरदेही मानवा, तू रात पड़्या क्यूं खाय॥

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (९) का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी २००६ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (९) में २७६ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के अक्टूबर से दिसम्बर २००५ के अंकों पर आधारित थी। प्रतियोगियों के उत्साह से आयोजकों को प्रमोद है। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये	**साधना जैन-नागौर**	**(५०)**
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये	**मंजुश्री सुराणा-जोधपुर**	**(५०)**
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये	**सरला चोरडिया-खींवसर**	**(५०)**

सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक

मीनाक्षी दुधेड़िया, मेड़ता सिटी	(५०)	प्रियंका जैन, सवाईमाधोपुर	(५०)
इन्द्रप्रसाद जैन, भायंदर, मुम्बई	(५०)	मोहनोत गणपत जैन, जोधपुर	(४९)
पुष्पा मेहता, पीपाड़	(४९)	सरोज खाबिया, मैसूर	(४९)
सरस्वती ललवानी, नागौर	(४९)	देवेन्द्र सुराणा, नागौर	(४९)
जतनदेवी सुराणा-नागौर	(४९)	मनीषी चोरडिया, खींवसर	(४९)

अन्य प्रतियोगी-

अन्य ४९ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :-अंजु जैन-पीपाड़, हेमंत खींचा-जयपुर, प्रेमलता ललवानी-नागौर, प्रफुल्ल ललवानी-नागौर, मंजू ललवानी-नागौर, प्रदीप ललवानी-नागौर, दिलीप जैन-जलगांव, आशा सुराणा-दिल्ली, स्मिता राजेश रूणवाल-बीजापुर, पुष्पा भण्डारी-पाली मारवाड़, केतन सुराणा-नागौर, जितेन्द्र सुराणा-नागौर, कंचन जैन-नागौर, मुनेन्द्र सुराणा-नागौर, युगल रांका-अहमदाबाद, कमल कोठारी-बड़ौदा, प्रीतम कोठारी-पाली, मीना ललवानी-नागौर, दीपिका संकलेचा-जोधपुर, टीना जैन-नागौर, तैजस जैन-नवसारी, सरला जैन-नवसारी, प्रमिला बाबुलाल पोखरणा-धुले, सुशीला कुमार-बजरिया।

४८ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी :-प्रतीक्षा जैन-हिण्डौन, सुमतिचन्द जैन-पीपाड़, नरेन्द्र लुकड़-कोटा, राज मेहता-गोरखपुर, जबलपुर, सरिता मनीष जैन-जयपुर, कुसुम सुराणा-उज्जैन, पुष्पा हस्तीमल गोलेछा-ब्यावर, सुमन डागा-भोपाल, हंसा जैन-मालपुरा, लोकेश जैन-जयपुर, जितेश जैन-जयपुर, पुष्पलता विजय जी बनवट-जलगांव, आशा अग्रवाल-जयपुर, सुमिल जैन 'रत्नेश'-जोधपुर, कल्पना छाजेड़-जोधपुर, पारसकंवर भण्डारी-चेन्नई, शांता पितलिया-अमरावती, मदनबाई राखेचा-शिंदखेड़ा, नीता सिंघवी-

जोधपुर, शिकान्ता जैन-भरतपुर, गौरव जैन-कोटा, पारस जैन-बल्लारी, मंजुला छाजेड़-समदड़ी, शारदा एच.मुथा-लासुर स्टेशन, रेखा जैन-धमतरी, माया जैन-जरखोदा, नथमल कोठारी-बालोद, विनिता मुणोत-भटिण्डा, संगीता खाबिया-मैसूर, शांता बंब-चेन्नई, नैनचन्द बाफना-जोधपुर, मीनाक्षी जैन-नागौर, अमित कर्णावट-जयपुर, मीना मेहता-पीपाड़ रेखा मुथा-पीपाड़, अनिल कुमार जैन-कोटा, सुनीता मेहता-जोधपुर, ज्योति राजेन्द्र जी ताथेड़, धुले, चंचल कांकरिया, पाली

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (८) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
१. अन्नकण/बीज	दिसम्बर/४१	२. शैलकजी	अक्टूबर/२३
३. हार	नवम्बर/४६	४. भगवत्प्राप्ति (सिद्धस्वरूप)	नवम्बर/२४
५. श्रद्धा	नवम्बर/२५	६. मोह कर्म	दिसम्बर/१३
७. उपशम रूपी बल	अक्टूबर/४४	८. नंदनवन	नवम्बर/६१
९. भौतिकता	नवम्बर/३४	१०. कर्म	नवम्बर/३४
११. मानवता	नवम्बर/३	१२. दर्शन	दिसम्बर/८
१३. शतपाक तेल	अक्टूबर/८	१४. तीर्थंकरों की	अक्टूबर/१०
१५. उच्चैर्नागर	दिसम्बर/१८	१६. जिनवाणी	नवम्बर/२७
१७. कुणप आहार (माँसभक्षण)	दिसम्बर/६	१८. प्रेम	नवम्बर/३१
१९. नरक	नवम्बर/९	२०. अद्वैत वेदान्तवादी	दिसम्बर/१२
२१. स्थाली-पाक, बर्तन	अक्टूबर/८	२२. चंचलता	नवम्बर/३२
२३. शरीर	नवम्बर/२५	२४. काउस्सग्ग	अक्टूबर/१०
२५. अन्तर्मुहूर्त	नवम्बर/८	२६. ९	दिसम्बर/५३
२७. ३	दिसम्बर/४६	२८. १०००	अक्टूबर/४०
२९. १६	दिसम्बर/२३	३०. ६	नवम्बर/३५
३१. ४	दिसम्बर/३७	३२. ३	नवम्बर/३२
३३. १	दिसम्बर/५१	३४. ३	दिसम्बर/४७
३५. ४७५	दिसम्बर/२०	३६. आवश्यकनिर्युक्ति	दिसम्बर/९-१०
३७ भगवती सूत्र	अक्टूबर/१८	३८. मनुस्मृति	नवम्बर/३
३९. नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं	अक्टूबर/१०	४०. कल्पसूत्र	नवम्बर/३६
४१. ना	दिसम्बर/९	४२. ना	अक्टूबर/१७
४३. हां	अक्टूबर/६	४४. हां	नवम्बर/४९
४५. ना	नवम्बर/३३	४६. अरिहंत	दिसम्बर/७
४७. जम्बूकुमार	नवम्बर/३०	४८. शक्रेन्द्र	नवम्बर/२७
४९. धर्माचार्य या गुरुजी	अक्टूबर/११	५०. स्वामी विवेकानन्द	नवम्बर/४२

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड परीक्षा ८ जनवरी २००६ का परीक्षा-परिणाम एवं वरीयता सूची

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा ८ जनवरी २००६ को आयोजित कक्षा १ से १३ तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। अस्थायी वरीयता सूची एवं परिणाम प्रकाशित किया जा रहा है। परीक्षार्थी अपना परिणाम बोर्ड की साईट www.jainratnaboard.com पर भी देख सकते हैं। वरीयता सूची में पुनर्मूल्यांकन के पश्चात् परिवर्तन संभव है।

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
८००७	पूजा महावीर जी ओस्तवाल	बालोतरा	९९.५	प्रथम
७९९३	करुणा महेन्द्र जी कोठारी	जसोल	९९	द्वितीय
७९२३	लता राजेन्द्र जी रूणवाल	बैंगलोर	९९	द्वितीय
७४०७	पिंकी सोहनलाल जी श्रीश्रीमाल	बालोतरा	९९	द्वितीय
५९८	रीना बाबुलाल जी ओस्तवाल	मोरवन	९८.५	तृतीय
५०४२	नविता हेमचन्द जी जैन	मडलौडा मण्डी	९८.५	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
५९२७	अनुपमा दलपत जी जैन	गोरेगांव, मुम्बई	९८.५	प्रथम
६३८५	शीला संजयकुमार जी श्रीश्रीमाल	दुर्ग	९७.५	द्वितीय
५९३९	मीना विजय जी बोहरा	गोरेगांव, मुम्बई	९७.५	द्वितीय
६२३	प्रभा प्रभात जी जैन	कोलकाता	९७	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
२४२९	सरिता कांतिलाल जी छाजेड़	सिरकाली	९९.५	प्रथम
७५५६	विमला विजयराज जी बैद	चेन्नई	९९	द्वितीय
२४२७	मोनिका चन्दन जी बोहरा	सिरकाली	९८.५	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
५४०९	ममता प्रेमचन्द जी जैन	रामरायगेट (जिन्द)	९९	प्रथम
५७४९	कल्पना विनोद कुमार जी पितलिया	हिंगणघाट	९८.५	द्वितीय
६८७८	सरला जम्बूकुमार जी जैन	बैंगलोर	९८	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
४३२२	कुसुम परेश जी पुनमिया	इचलकरंजी	९९.५	प्रथम
३२११	रतनदेवी सागरमल जी नाहर	बेगूँ	९९.२५	द्वितीय
५८६०	उन्नति पंकज जी भटेवरा	नासिक	९८.५	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
१९२७	संतोष मदनलाल जी सोनिगरा	पेरम्बूर, चेन्नई	९६	प्रथम
२४३५	मंजू विरेन्द्र जी खाटोड़	सिरकाली	९५.५	द्वितीय
२४३४	मंजू संतोष कुमार जी सिंघवी	सिरकाली	९५	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

८०११	मंजू योगेश जी पालावत	अलवर	९८	प्रथम
५५९९	सुनिता मंगेश जी लोढ़ा	शिर्डी	९६	द्वितीय
१९२९	पदमा दिलीप जी जैन	पेरम्बूर, चेन्नई	९५	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

२४००	शोभा कमलचन्द जी कांकलिया	मदुरान्तकम, चेन्नई	९६.७५	प्रथम
२३९९	सपना विजय जी लोढ़ा	मदुरान्तकम, चेन्नई	९६.२५	द्वितीय
२३९७	नीतू ललित जी लोढ़ा	मदुरान्तकम, चेन्नई	९५.५	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

५१४७	सुभाषचंद टेकचन्द जी मित्तल	भटिण्डा	९६	प्रथम
६१४४	अंजु राहुल जी गाँधी	उधना, सूरत	८९	द्वितीय
७६६१	राजुलबाई मंगलचन्द जी चोरडिया	तिरुपति	८७	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर- उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

८३३५	संगीता महेन्द्र जी बोहरा	वेल्लूर	८५	प्रथम
१७६३	संतोष राजेश जी सिंघवी	चेन्नई	८३.५	द्वितीय
४६४०	महेन्द्रकुमार कन्हैयालाल जी डांगी	मदनगंज	७९	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर- पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

६७७७	लोकेश ज्ञानचन्द जी जैन	जयपुर	९७.५	प्रथम
५९६२	पुष्पा सुकनराज जी कोठारी	गोरेगांव, मुम्बई	९३	द्वितीय
६७७८	जितेश राजेन्द्र कुमार जी जैन	जयपुर	९१	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध (बारहवीं कक्षा)

६९६०	शिमला अजय जी जैन	सवाईमाधोपुर	८७	प्रथम
६९५९	मंजू नमोकार जी जैन	सवाईमाधोपुर	८६	द्वितीय
५७९९	लीलाबाई माणकचन्द जी सांडेचा	शिरपुर	८४.५	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री-पूर्वार्द्ध (तेरहवीं कक्षा)

२३८३	सीमा प्रवीण जी बोथरा	कॉण्डीतोप, चेन्नई	९२	प्रथम
१३७९	शशिकला सुनिलचन्द जी जाम्बड़	चेन्नई	८५	द्वितीय
६७२२	त्रिलोकचन्द शांतिलाल जी जैन	बजरिया	८३.५	तृतीय

विमला मेहता	**धर्मचन्द जैन**	**डॉ. राकेश कांकरिया**
संयोजक	रजिस्ट्रार	सचिव

उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं.

कक्षा प्रथम

12,13,14,16,19,20,22,26,27,28,29,53,64,66,71,73,74,76,78,90,95,96,100,102, 119, 124,140, 141,142,146,162,164,167,171,173,175,176,178,181,182,183,184,186,188,189,191,192,194, 197,198,200,201,203,204,205,206,207,208,213,215,216,226,227,270,305,331,332,369,370, 376,377,378,379,380,381,414,416,417,418,419,420,421,423,425,429,430,431,434,436,437, 438,440,441,445,446,447,451,452,453,462,463,465,471,474,475,476,493,501,510,513,514, 515,516,517,518,520,521,523,525,527,528,530,531,532,534,543,545,547,548,549,553;558, 559,560,562,565,566,575,576,577,578,579,580,581,582,583,584,585,586,587,588,589,590,

591,592,593,594,595,596,597,598,599,600,601,602,603,604,605,606,607,609,610,611,620, 639,641,642,657,658,660,661,662,664,667,673,755,756,757,759,760,761,762,773, 774, 775 ,776,778,779,780,781,782,784,785,786,787,788,829,833,834,835,836,846,848,849, 851, 853,866,877,907,909,910,913,915,920,921,922,926,931,934,935,938,940,947,952,955,978, 979,1033,1036,1046,1061,1085,1094,1099,1102,1106,1118,1126, 1128, 1129, 1161, 1162, 1164,1167, 1169,1202,1220,1224,1231,1232,1234,1235,1237,1251,1384,1388, 1389, 1532, 1543, 1561,1562,1597,1605,1611,1613,1625, 1776,1813,1814,1815,1817,1820, 1829, 1871, 1894, 1933,1952,1958,1972,2124,2139,2155,2157,2166,2171,2174,2190,2191, 2193, 2195, 2201, 2213,2217,2221, 2225,2228,2293,2294,2296,2322,2323,2330,2331,2333, 2410, 2436, 2441, 2443,2444,2445,2446,2447,2448,2450,2452,2453,2454,2455,2457,2458, 2467, 2468, 2469, 2470,2471,2473,2474,2475,2476,2477,2478,2479,2481,2482,2483,2487, 2497, 2503, 2518, 2519,2520,2521,2522,2523,2524,2526,2528,2529,2530,2531, 2534,2535, 2536, 2538, 2543, 2549,2556,2559,2567,2569,2581,2597,2599,2618,2619,2620,2621,2636, 2673, 2674, 2684, 2694,2695,2765,2794,2797,2801,2802,2807,2809,2813,2815,2820,2821, 2823, 2825, 2828, 2832,2833,2840,2841,2842,2843,2844,2846,2847,2848,2849,2850,2873, 2876, 2903, 2917,2962,2968,2979,2994,2996,2997,2998,2999,3000,3003,3008,3031,3032,3033, 3034, 3036, 3037,3039,3043,3044,3045,3047,3049,3050,3051,3053,3055,3056,3057,3058, 3059, 3060, 3061,3062,3063,3097,3114,3129,3130,3131,3132,3134,3137,3138,3139,3140, 3143, 3144, 3145,3150,3151,3154,3155,3157,3161,3166,3196,3197,3198,3217,3263,3264, 3265, 3275, 3277,3290,3293,3294,3297,3298,3300,3325,3326,3327,3329,3330,3331,3332, 3347, 3348, 3349,3366,3367,3368,3369,3370,3371,3374,3375,3381,3403,3404,3407,3436, 3437, 3459, 3460,3461,3463,3464,3465,3466,3467,3468,3469,3470,3471,3472,3473,3474,3475, 3477,3479,3481,3482,3483,3496,3500,3501,3533,3538,3539,3540,3557,3568,3572,3580, 3581,3585,3586,3589,3591,3595,3597,3602,3627,3655,3661,3662,3670,3671,3744,3770, 3771,3772,3774,3777,3778,3780,3781,3782,3796,3797,3798,3808,3812,3818,3828,3829, 3831,3833,3836,3838,3841,3842,3843,3844,3845,3882,3885,3887,3888,3889,3890,3892, 3894,3895,3898,3899,3900,3904,3905,3907,3913,3914,3916,3917,3918,3919,3922,3923, 3924,3925,3926,3927,3929,3930,3934,3937,3939,3940,3941,3942,3945,3947,3948,3949, 3950,3951,3952,3953,3956,3958,3960,3961,3962,3963,3965,3967,3968,3969,3970,3971, 3972,3973,3974,3975,3976,3977,3978,3979,3980,3981,3982,3983,3984,3985,3986,3987, 3988,3989,3990,3991,3993,3994,3996,3997,3999,4000,4001,4002,4006,4010,4012,4013, 4015,4016,4017,4018,4019,4020,4021,4022,4025,4027,4028,4029,4030,4032,4033,4035, 4036,4037,4038,4040,4041,4043,4046,4082,4094,4097,4099,4102,4103,4107,4109,4111, 4114,4140,4141,4150,4151,4154,4158,4163,4169,4170,4173,4175,4177,4178,4180,4181, 4182,4215,4219,4220,4238,4239,4240,4241,4242,4243,4244,4246,4247,4248,4252,4253, 4283,4305,4331,4335,4340,4341,4342,4343,4344,4372,4375,4379,4383,4384,4390,4421, 4422,4441,4446,4448,4452,4453,4455,4456,4457,4459,4462,4464,4467,4468,4469,4471, 4473,4474,4478,4479,4480,4484,4485,4486,4489,4490,4491,4495,4496,4497,4498,4501, 4503,4504,4505,4645,4649,4666,4667,4669,4670,4671,4680,4705,4710,4711,4712,4713, 4714,4716,4746,4747,4757,4762,4767,4768,4775,4777,4796,4797,4799,4800,4801,4804, 4806,4809,4810,4811,4853,4854,4870,4871,4874,4877,4879,4904,4906,4909,4910,4912, 4925,4929,4947,4949,4951,4952,4954,4972,4984,4988,4995,5000,5005,5006,5010,5014, 5015,5017,5018,5040,5041,5042,5043,5072,5080,5083,5087,5090,5091,5093,5094,5096, 5098,5099,5100,5110,5162,5164,5169,5171,5173,5174,5209,5210,5222,5231,5246,5248, 5250,5266,5269,5272,5288,5291,5298,5299,5300,5301,5302,5303,5308,5312,5315,5316, 5317,5318, 5322,5323,5325,5326,5327,5328,5330,5331,5333,5334,5340,5345,5346,5347, 5402,5414,5418,5421,5426,5428,5440,5441,5443,5444,5445,5448,5536,5547,5551,5577, 5578,5579,5580,5607,5613,5624,5628,5629,5643,5644,5645,5646,5647,5648,5649,5650, 5653,5657,5659,5661,5662,5663,5718,5744,5757,5758,5761,5772,5774,5775,5777,5801, 5832,5833,5868,5869,5879,5882,5892,5893,5896,5897,5899,5900,5918,5963,5964,5966, 5967,5968,6024,6026,6029,6030,6036,6069,6080,6091,6094,6110,6116,6149,6151,6197,

6203,6204,6242,6271,6287,6291,6293,6307,6308,6311,6313,6317,6320,6321,6325,6326,
6328,6331,6334,6338,6341,6345,6346,6347,6351,6353,6355,6356,6358,6360,6361,6389,
6431,6433,6436,6438,6442,6443,6444,6445,6446,6447,6452,6453,6454,6456,6458,6461,
6493,6497,6528,6531,6535,6537,6590,6591,6592,6593,6594,6595,6597,6600,6601,6603,
6604,6605,6606,6608,6609,6612,6613,6645,6657,6680,6681,6686,6704,6705,6707,6723,
6724,6735,6746,6765,6822,6872,6892,6894,6895,6897,6898,6899,6907,6908,6909,6910,
6911,6916,6917,6918,6920,6925,6954,6955,6964,6965,6967,6968,6969,6970,6971,6972,
6973,6978,6979,6981,6982,6983,6987,6988,6989,6992,6995,6996,6998,6999,7000,7007,
7009,7010,7012,7040,7041,7042,7043,7044,7045,7049,7050,7053,7055,7059,7062,7064,
7067,7068,7076,7077,7079,7087,7090,7092,7094,7096,7100,7101,7102,7106,7107,7108,
7109,7111,7113,7114,7116,7117,7120,7126,7128,7129,7131,7132,7133,7134,7135,7140,
7161,7165,7171,7196,7224,7225,7226,7237,7262,7263,7264,7265,7266,7269,7273,7275,
7276,7277,7278,7279,7280,7282,7296,7308,7309,7312,7337,7338,7339,7342,7344,7346,
7348,7352,7353,7356,7358,7398,7406,7407,7408,7416,7430,7492,7493,7495,7527,7528,
7551,7552,7567,7568,7576,7582,7584,7610,7613,7616,7617,7618,7620,7623,7625,7629,
7630,7632,7633,7634,7641,7642,7643,7644,7646,7652,7664,7665,7667,7669,7673,7674,
7676,7677,7678,7679,7681,7683,7685,7686,7687,7688,7693,7695,7696,7706,7707,7708,
7723,7724,7725,7726,7728,7729,7730,7732,7734,7735,7736,7740,7742,7747,7750,7753,
7754,7755,7766,7768,7770,7771,7799,7802,7814,7815,7817,7823,7824,7826,7827,7835,
7838,7839,7840,7844,7845,7846,7849,7851,7852,7853,7856,7857,7858,7859,7861,7864,
7915,7923,7928,7931,7941,7947,7959,7961,7962,7964,7965,7966,7968,7969,7972,7973,
7974,7978,7980,7981,7982,7988,7992,7993,7994,7996,8002,8004,8006,8007,8008,8009,
8012,8014,8019,8020,8021,8023,8028,8029,8030,8032,8033,8035,8036,8037,8041,8042,
8044,8045,8046,8047,8048,8050,8052,8053,8054,8055,8056,8057,8061,8063,8071,8072,
8073,8076,8077,8078,8079,8080,8082,8083,8084,8085,8086,8105,8152,8153,8155,8156,
8161,8172,8173,8174,8175,8177,8178,8185,8189,8190,8197,8198,8199,8201,8203,8209,
8212,8213,8214,8215,8218,8219,8220,8227,8230,8235,8246,8247,8249,8258,8326,8327,
8328,8329,8332,8333,8334,8345,8346,8347,8403,8406,8408,8410,8411,8412,8413,8415,
8416,8418,8431,8432,8433,8434,8435,8436,8437,8438,8439,8440,8441,8442,8443,8445,
8446,8449,8450,8451,8452,8455,8456,8457,8458,8459,8460,8482,8492,8495,8496,8498,
8499,8503,8504,

कक्षा द्वितीय

30,34,35,36,55,56,84,129,143,144,202,209,210,211,212,218,219,230,241,275,281,295,306,
307,341,342,390,391,454,455,456,458,484,491,622,623,643,645,646,647, 648,676,715,717,
719,721,737,738,763,764,765,766,767,768,769,770,771,772,783,789,790,791,802,804,806,
827,858,861,862,863,864,865,888,967,981,1016,1038,1039,1198,1250,1259,1267,1268,
1288,1297,1303,1306,1307,1312,1392,1395,1398,1433,1438,1439,1446,1450,1453,1547,
1631,1646,1653,1655,1659,1660,1667,1674,1715,1730,1765,1769,1778,1842,1873,1874,
1875,1902,1903,1906,1907,1935,1982,1986,1992,1997,2064,2068,2160,2164,2169,2176,
2177,2182,2184,2185,2199,2202,2230,2286,2342,2348,2412,2423,2424,2585,2601,2624,
2625,2657,2659,2661,2664,2676,2696,2700,2702,2704,2707,2708,2709,2711,2712,2713,
2714,2716,2720,2722,2724,2725,2728,2729,2730,2731,2732,2733,2734,2736,2737,2739,
2740,2741,2745,2746,2747,2748,2749,2754,2755,2758,2759,2760,2761,2763,2764,2787,
2788,2878,2887,2889,2914,2918,2919,2921,2922,2923,2924,2926,2927,2928,2930,2931,
2932,2933,2981,2982,3005,3006,3026,3028,3124,3173,3174,3175,3178,3179,3181,3182,
3183,3186,3191,3203,3267,3268,3305,3308,3333,3334,3335,3384,3410,3438,3439,3440,
3484,3486,3504,3505,3543,3544,3695,3709,3710,3712,3713,3728,3729,3750,3751,3821,
3822,3846,3849,3854,3855,4039,4049,4053,4054,4055,4056,4058,4060,4061,4063,4068,
4069,4072,4075,4076,4077,4078,4079,4080,4084,4086,4115,4125,4142,4199,4224,4227,
4255,4256,4260,4261,4267,4268,4289,4290,4292,4306,4308,4309,4359,4361,4366,4392,
4395,4396,4397,4398,4400,4401,4403,4408,4424,4427,4428,4431,4433,4435,4436,4511,

4515,4518,4520,4521,4523,4524,4526,4529,4531,4534,4535,4537,4541,4542,4543,4546, 4547,4548,4549,4551,4552,4555,4556,4558,4562,4563,4718,4721,4722,4727,4733,4735, 4748,4823,4826,4885,4886,4913,4914,4932,4956,4957,4958,4959,4960,4961,4962,4963, 4965,4968,4969,4970,4971,4973,5016,5021,5022,5024,5025,5026,5027,5028,5029,5031, 5033,5037,5038,5039,5047,5048,5049,5050,5051,5052,5053,5054,5055,5057,5058,5059, 5060,5066,5073,5104,5107,5223,5252,5253,5268,5273,5353,5354,5357,5358,5451,5452, 5453,5457,5458,5477,5496,5498,5502,5505,5506,5507,5554,5555,5556,5557,5581,5584, 5585,5615,5616,5617,5618,5666,5709,5710,5712,5723,5724,5742,5746,5747,5779,5805, 5806,5838,5840,5846,5849,5853,5884,5902,5927,5933,5934,5937,5939,5941,5944,5945, 5946,5949,5951,5971,6044,6046,6047,6073,6121,6123,6124,6128,6129,6131,6132,6134, 6137,6153,6157,6159,6160,6163,6247,6368,6373,6375,6377,6379,6385,6387,6462,6463, 6467,6468,6470,6476,6505,6526,6529,6539,6560,6562,6581,6585,6617,6619,6620,6662, 6682,6683,6691,6692,6697,6698,6699,6701,6702,6703,6710,6759,6761,6763,6764,6766, 6767,6779,6792,6824,6826,6827,6849,6850,6852,6853,6854,6855,6901,6912,6913,6927, 6933,6937,6941,6943,7017,7019,7022,7023,7028,7037,7038,7046,7047,7048,7137,7145, 7147,7173,7174,7177,7178,7199,7202,7205,7207,7227,7231,7242,7245,7267,7268,7270, 7271,7272,7285,7292,7294,7384,7386,7387,7388,7412,7514,7515,7517,7520,7523,7575, 7595,7602,7609,7648,7653,7654,7697,7698,7699,7737,7739,7758,7865,7866,7868,7871, 7872,7874,7878,7924,7925,7930,7949,7950,7983,8051,8064,8089,8092,8162,8184,8191, 8193,8194,8196,8200,8204,8205,8208,8216,8222,8223,8237,8244,8245,8336,8348,8349, 8350,8351,8359,8361,8429,8430,8461,8462,8463,8464,8465,8466,8467,8485,8491,8501, 8502,

कक्षा तृतीय

58,86,87,89,113,231,233,234,237,238,239,240,296,297,298,299,309,625,626,628,682,723, 724,739,792,892,894,896,974,976,991,997,1020,1042,1044,1409,1457,1463,1501,1502, 1554,1572,1682,1688,1744,1780,1781,1782,1785,1791,1798,1799,1801,1808,1844,1846, 1850,1912,2003,2005,2008,2016,2020,2022,2030,2036,2040,2041,2046,2078,2133,2203, 2204,2205,2206,2234,2236,2239,2308,2364,2365,2402,2404,2414,2416,2417,2418,2426, 2427,2428,2429,2584,2590,2626,2670,2671,2769,2890,2891,2892,2893,2983,2984,2985, 2987,2988,2989,2990,2991,2993,3029,3030,3206,3257,3273,3387,3411,3412,3418,3419, 3420,3442,3443,3444,3445,3487,3489,3490,3491,3492,3493,3494,3495,3507,3508,3625, 3626,3628,3632,3634,3660,3714,3715,3730,3824,3825,3856,3861,4088,4089,4203,4204, 4207,4228,4229,4230,4231,4232,4295,4367,4566,4567,4569,4571,4572,4573,4576,4577, 4578,4580,4582,4583,4687,4688,4689,4736,4737,4738,4739,4742,4743,4749,4750,4788, 4828,4829,4830,4860,4916,4938,4940,4942,4943,4975,5067,5074,5109,5112,5151,5184, 5225,5226,5236,5274,5364,5365,5366,5391,5403,5466,5467,5509,5558,5560,5619,5674, 5676,5785,5808,5809,5870,5886,5888,5903,5955,5980,5985,6052,6053,6054,6138,6139, 6141,6143,6165,6166,6168,6170,6175,6176,6218,6251,6266,6395,6398,6400,6403,6475, 6478,6508,6511,6514,6543,6544,6575,6665,6679,6684,6685,6712,6713,6780,6781,6782, 6783,6784,6785,6804,6805,6829,6830,6833,6861,7150,7151,7152,7180,7181,7211,7252, 7254,7258,7319,7465,7496,7542,7543,7556,7562,7655,7711,7712,7713,7714,7715,7746, 7880,7881,7882,8144,8147,8202,8229,8238,8243,8251,8318,8352,8353,8354,8427,8428, 8489,8490,8500,

कक्षा चतुर्थ

38,39,132,133,134,154,155,221,242,265,312,313,314,315,316,383,384,613,614,616,617, 629654,683,686,687,743,744,745,746,747,748,793,794,795,812,813,898,899,901,902,961, 962,977,983,985,986,987,988,1000,1001,1022,1032,1048,1341,1343,1344,1347,1349,1410, 1475,1476,1573,1734,1849,1852,1853,1882,1917,1918,1919,1936,1937,2049,2050,2051, 2084,2085,2134,2150,2241,2242,2267,2270,2274,2275,2276,2277,2279,2311,2388,2389,

2405,2406,2407,2408,2419,2586,2591,2593,2594,2595,2608,2609,2610,2627,2628,2629, 2665,2672,2679,2790,2895,2897,3010,3013,3259,3310,3311,3316,3338,3339,3341,3354, 3355,3390,3391,3392,3446,3447,3448,3449,3451,3452,3453,3454,3509,3510,3526,3637, 3641,3643,3698,3700,3716,3717,3718,3732,3786,3787,3789,3792,3826,3827,3862,3863, 3864,3865,3866,3869,3872,4130,4233,4296,4299,4300,4317,4318,4319,4320,4349,4350, 4351,4352,4354,4439,4440,4588,4589,4590,4591,4592,4593,4595,4596,4597,4598,4599, 4600,4602,4603,4604,4605,4606,4607,4610,4611,4612,4614,4616,4692,4695,4744,4789, 4832,4833,4834,4835,4842,4844,4845,4861,4893,4897,4898,4917,4919,5068,5069,5113, 5114,5118,5121,5122,5125,5127,5128,5130,5131,5132,5188,5200,5237,5239,5261,5262, 5369,5393,5394,5408,5409,5411,5412,5469,5470,5472,5473,5479,5481,5510,5512,5514, 5515,5517,5518,5519,5520,5522,5524,5525,5526,5562,5564,5565,5567,5610,5620,5621, 5654,5655,5678,5679,5680,5682,5731,5732,5733,5743,5748,5749,5750,5754,5790,5812, 5857,5858,5871,5890,5905,5987,5988,5991,5992,5993,6057,6058,6059,6087,6145,6146, 6147,6177,6178,6179,6180,6181,6182,6183,6184,6185,6189,6191,6193,6194,6195,6220, 6253,6295,6298,6300,6369,6413,6414,6415,6417,6418,6419,6420,6421,6422,6423,6424, 6482,6483,6484,6486,6487,6488,6489,6549,6551,6588,6623,6625,6626,6627,6671,6674, 6789,6809,6836,6863,6865,6878,6903,6904,6946,6957,6961,7156,7183,7184,7187,7188, 7189,7190,7191,7192,7215,7255,7261,7289,7290,7372,7374,7484,7486,7490,7491,7497, 7534,7545,7656,7761,7762,7793,7997,8000,8013,8017,8043,8103,8104,8106,8146,8150, 8167,8180,8181,8182,8183,8240,8241,8357,8468,8469,

कक्षा पंचम

61,62,70,136,137,138,139,159,222,286,288,289,290,291,293,360,385,394,630,631,633,710, 712,796,814,815,816,819,820,1002,1004,1354,1576,1698,1736,1855,1857,1883,1938,1939, 1940,1941,1942,2052,2053,2055,2087,2186,2187,2244,2280,2281,2290,2291,2369,2570, 2575,2613,2614,2680,2772,2898,3016,3018,3019,3023,3208,3209,3210,3211,3231,3317, 3340,3342,3393,3394,3395,3425,3427,3428,3513,3528,3646,3759,3760,3761,3762,3763, 3764,3765,3874,4131,4234,4321,4322,4324,4325,4326,4327,4623,4626,4752,4837,4839, 4847,4848,4849,4850,4851,4900,4901,4920,4921,5077,5191,5215,5221,5264,5276,5278, 5280,5281,5282,5283,5284,5285,5286,5482,5529,5569,5570,5591,5592,5684,5685,5717, 5736,5792,5818,5860,5957,5994,5996,6061,6062,6148,6227,6230,6232,6255,6268,6269, 6270,6281,6563,6589,6628,6770,6771,6790,6838,6866,6947,6948,6950,7220,7221,7222, 7291,7315,7475,7477,7509,7612,7692,7716,7741,7926,8095,8168,8186,8217,8425,8453,

कक्षा षष्ठ

40,41,303,317,318,319,320,321,322,324,386,395,396,397,398,632,692,693,694,714,798, 1006,1023,1363,1365,1383,1415,1417,1482,1699,1701,1723,182,1858,1859,1861,1862, 1863,1886,1926,1927,1943,2056,2092,2093,2207,2292,2312,2433,2434,2435,2631,2977, 3322,3343,3363,3364,3378,3379,3380,3397,3432,3455,3456,3457,3458,3649,3650,3651, 3652,3766,3767,3875,3876,4135,4355,4356,4357,4358,4368,4443,4618,4622,4624,4630, 4631,4632,4633,4636,4637,4639,4753,4862,4944,5071,5136,5194,5195,5196,5198,5216, 5217,5230,5241,5396,5398,5483,5484,5485,5486,5487,5488,5489,5593,5793,5861,5862, 5958,5997,6088,6302,6523,6556,6569,6675,6772,6774,6837,6867,6868,7193,7326,7327, 7328,7396,7479,7487,7498,7565,7887,7889,7927,7934,8040,8060,8087,8088,8169,8171, 8210,8242,8248,8426,

कक्षा सप्तम

731,799,800,828,904,905,1005,1012,1418,1510,1511,1578,1888,1889,1928,1929,1946, 1948,1949,2060,2376,2379,2392,2463,2464,2466,2774,3721,3734,3768,4136,4137,4702, 4754,4923,4924,5139,5203,5218,5275,5378,5573,5595,5599,5600,5601,5602,5690,5825,

5999,6000,6538,6815,7234,7557,7570,7571,7658,7894,7953,8001,8011,8016,8157,

कक्षा अष्टम

411,750,906,1014,1375,1376,1950,2096,2208,2393,2394,2395,2396,2397,2398,2399,2400, 2775,3024,3344,3554,3681,3722,3725,4148,4792,5380,5381,5382,5401,5541,5692,5826, 5916,6001,6817,7314,7572,7718,7719,7720,7985,8034,8038,8170,8228,

कक्षा नवम

1419,1421,1484,1512,1727,3193,3684,3685,3688,3689,3877,4755,4770,4771,4868,5079, 5147,5155,5156,5243,5542,5543,5866,5961,6144,6629,7660,7661,8059,8470,8471,8472, 8473

कक्षा दसम

1763,2382,3878,3879,4417,4640,8335,8474,8475,

कक्षा ग्यारह

364,3880,4214,5143,5387,5642,5962,6777,6778,8476,8477,8478,8479,

कक्षा बारह

366,367,1707,4795,5144,5799,6870,6959,6960,7721,8480,

कक्षा तेरह

1379,2383,3214,3215,3216,4418,4419,5146,6722,7722,8481,

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६ को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक आयोजित की जायेगी।

परीक्षा संबंधी महत्त्वपूर्ण नियम इस प्रकार है-

१. २३ जुलाई २००६ की परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम दिनांक २० जून २००६ है।

२. नये व पुराने सभी परीक्षार्थियों को आवेदन-पत्र भरना अनिवार्य है। जिन केन्द्रों से आवेदन-पत्र भरकर बोर्ड के प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर में प्राप्त नहीं होंगे, वहाँ परीक्षा आयोजित नहीं हो सकेगी।

३. परीक्षार्थी आगामी परीक्षा हेतु वेबसाइट www.jainratnaboard.com पर भी अपना पंजीयन करवा सकते हैं।

४. पुराने परीक्षार्थियों को ८ जनवरी २००६ की परीक्षा की अंक तालिका के साथ प्रमाण-पत्र, आवेदन-पत्र तथा आगामी कक्षा की पुस्तक बोर्ड कार्यालय द्वारा भिजवाई जा रही है।

५. कक्षा १ से ६ तक भाग 'अ' तथा 'ब' अलग-अलग प्रश्न-पत्र न होकर एक ही प्रश्न-पत्र होगा। कक्षा ७ से १४ तक भाग 'अ' तथा 'ब' दोनों प्रश्न-पत्र रहेंगे। भाग 'अ' का समय ३० मिनट तथा भाग 'ब' का समय २.३० घण्टे निर्धारित होगा।

६. कक्षा २ से ४ तक पिछली कक्षा के पाठ्यक्रम में से सूत्र व तत्त्व विभाग में से १० अंकों के प्रश्न पूछे जायेंगे।

७. जिन-जिन केन्द्रों पर शिक्षण बोर्ड की पुस्तकों की आवश्यकता हो, वे बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें, ताकि उन्हें वांछित पुस्तकें उपलब्ध करायी जा सकें।

८. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार में चाँदी के सिक्के बोर्ड कार्यालय द्वारा उपलब्ध कराये जाते हैं। यदि किसी केन्द्र पर परीक्षार्थियों को नियमानुसार पुरस्कार प्राप्त नहीं हुए हों तो वे अपने केन्द्राधीक्षक से सम्पर्क करें। यदि केन्द्राधीक्षक को पुरस्कार नहीं मिले हों तो वे श्रीमती विमला जी मेहता (संयोजक-आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड) द्वारा-रामनाथ मेहता भवन, गोलबिल्डिंग रोड़, जालोरी गेट, जोधपुर-३४२००३(राज.), फोन नं. ०२९१-२४३५६३७ पर सूचित करावें।

९. **शिक्षण बोर्ड द्वारा परीक्षार्थियों के पाठ्यक्रम के शिक्षण की व्यवस्था भी प्रारम्भ की जा रही है। जिन केन्द्रों पर धार्मिक शिक्षण की आवश्यकता हो, वे बोर्ड कार्यालय को सूचित करावें।** शिक्षण का प्रस्तावित समय, परीक्षार्थियों की संख्या, शिक्षण की कक्षा, पाठ्यवस्तु आदि की जानकारी भी साथ में अवश्य भिजवावें।

१०. पाठकों से निवेदन है कि यदि कोई बोर्ड के पाठ्यक्रम का शिक्षण करवाने की योग्यता एवं रुचि रखते हो तो वे स्वयं अथवा यदि ऐसे अन्य कोई भाई-बहन ध्यान में हों जो शिक्षण कार्य करवा सकते हों तो उनके नाम, पता, फोन न., मोबाइल नं., धार्मिक योग्यता आदि की जानकारी बोर्ड कार्यालय में उपलब्ध करवाने की कृपा करावें।

-डॉ. राकेश कांकरिया, सचिव
अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१(राज.), फोन नं. ०२९१-२६३०४९०

दशवैकालिक सूत्र पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता का परिणाम (२)

फरवरी २००६ में शीघ्र प्रतियोगियों का परिणाम प्रकाशित किया गया था। यहाँ अब सामान्य प्रतियोगियों का परिणाम प्रकाशित है-

शारदा पारिख, बालोतरा-४९२.०, निर्मला संखलेचा, चेन्नई-४९२.०, कुमकुम जैन, सवाईमाधोपुर-४९१.०, कंचन सिंघवी, जलगाँव-४९०.०, डॉ. संजना जैन, जयपुर-४९०.०, त्रिलोकचंद जैन, सवाईमाधोपुर-४९०.०, स्नेटी जैन, कुक्कट स्ट्रीट-४९०.०, ज्ञानचंद चोरडिया, अजमेर-४९०.०, सुनीता डागा, मुम्बई-४८९.५, विनिया लसोड, उदयपुर-४८९.०, सपना मनोज कोठारी, धुलिया-४८९.०, चन्द्रा हीरावत, जयपुर-४८९.०, सुमन ढड्ढा, जयपुर-४८९.०, मंजू काठोड, सिरकली-४८९.०, सोनाली बोथरा, जयपुर-४८८.५,नविता जैन, हरियाणा-४८८.५, भोजराज जैन, मूंदी-४८८.५, देवबाला भण्डारी, जलगाँव-४८८.०, चन्द्रकला कुमट, किशनगढ़-४८८.०, एन. मनीष कांकरियां, चेन्नई-४८८.०, मंजुला राठोड़, चेन्नई-४८८.०, प्रियंका महेन्द्र सुराणा, जलगाँव-४८८.०, बबीता बाफना, जलगाँव-४८८.०, कमला सुराणा, पाली-४८८.०, रेखा श्रीमाल, चेन्नई-४८७.५, कोकिला लोढा, जयपुर-४८७.५, शालिनी जैन, पंजाब-४८७.५, धर्मेन्द्र जैन, भरतपुर-४८७.०, विमल हरीश चोरड़िया, भाइन्दर-४८७.०, चित्रा जैन-४८७.०, बीनू झाड़चूर, जयपुर-४८७.०, शकुन्तला जैन, बैतूल-४८७.०, बुद्धिप्रकाश जैन, सवाईमाधोपुर-४८७.०, सुनंदा पारख, नाँदगाँव नासिक-४८७.०, कांता परमार, अलवर-४८७.०, रेणु तलेसरा, पाली-४८७.०, निशा जैन, भरतपुर-४८७.०, कनक बडेर, दिल्ली-४८७.०,अनिल कुमार जैन, सकतपुरा कोटा-४८७.०, मधु जैन, दिल्ली-४८७.०, शिल्पा रमेश कोठारी, धूलिया-४८६.५, वर्षा सेठिया, जावरा-४८६.५, ममता डोसी, मेडता सिटी-४८६.५, सुनिता जैन, भरतपुर-४८६.०, ज्योति जैन, मंदसौर-४८६.०, इन्द्रा जैन, सवाईमाधोपुर- ४८६.०, मीनाक्षी जैन, जोधपुर-४८६.०, सुभाष रायसोनी, जलगाँव-४८६.०, विमल विलास गाँधी, पूणे-४८६.०, संतोष नाहर, दिल्ली-४८६.०, प्रमिला जैन, चेन्नई-४८६.०, मंजु मेहता, मण्डिया-४८६.०, विजया लूणिया-४८६.०, चन्द्रा मुणोत, मुम्बई-४८६.०, कु. नीलम जैन, हिण्डोन-४८६.०, निधि जैन, जयपुर-४८६.०, अलका जैन, फरीदकोट-४८६.०, रीतु जैन, दिल्ली-४८६.०, अंजु जरगड, जयपुर-४८६.०, राजश्री कोठारी, ठाणे-४८६.०, प्रियंका शाह, जयपुर-४८६.०, प्रमिला बोहरा, जैतारण-४८६.०, सरिता दुगड़, मंदसौर-४८६.०, ममता जैन, भरतपुर-४८६.०, सुशीला गुरलिया, विजयनगर-४८५.५, दर्शन तालेडा, मैसूर-४८५.५, मीनाक्षी जैन, फरीदकोट-४८५.०, सरोज मेहता, मुम्बई-४८५.०, राजकुमारी जैन, भरतपुर-४८५.०, कविता मूथा, ब्यावर-४८५.०, कविता मेहता, गाँधीनगर-४८५.०, विमला मुल्तानी, जोधपुर-४८५.०, सुनीता बाफना, चेन्नई-४८५.०, हरन विनोदराय देसाई, मुम्बई-४८५.०, गर्व लुंकड़, कोटा-४८५.०, सुनिता मोगरा, मंदसौर-४८५.०, विमला चोरडिया, चेन्नई-४८५.०, संतोष समदड़िया, चिंतादरीपेट-४८५.०, बबीता धाकड़, मंदसौर-४८५.०, अक्षिता जैन, जोधपुर-४८५.०, हेमलता दलाल, उज्जैन-४८५.०, डी. आइचराज बाठिया, सिरकाली-४८४.५, संगीता जैन, बालोतरा-४८४.५, सुशीला रांका, जलगाँव-४८४.५, सुभाष मितल, भटिंडा- ४८४.५, मधु संचेती, पाली-४८४.५, मीनू समदड़िया, ब्यावर-४८४.०, पुष्पा जैन, भरतपुर-४८४.०, तीव्रचंद जैन, सवाईमाधोपुर-४८४.०, ऋषभ जैन, जरखोदा-४८४.०, किरण लुणावत, चेन्नई-४८४.०, सनी ढड्ढा, जयपुर-४८४.०, कंचन भण्डारी, बैंगलोर-४८४.०, लीला ढड्डा, जयपुर-४८४.०, सरला मरलेचा, कलवा-४८४.०, कांता काठेड, बैंगलोर-४८४.०, शशि बाफना, जलगाँव-४८४.०, सुनन्दा तातेड़, बैतूल-४८४.०, शीला पालावत, जयपुर-४८४.०, अभिनव अग्रवाल, जयपुर-४८४.०, सुशीला चौपडा, बालोतरा-४८४.०, ललिता चोरडिया, बागलकोट-४८४.०, रंजना मेहता, कर्नाटक-४८४.०, प्रिया गोलेछा, कृष्णन कोल-४८३.५, रूचि जैन, भरतपुर-४८३.५, रेखा जैन, कोटा-४८३.५, प्रियंका जैन, लुधियाना-४८३.५, अंजली जैन, भरतपुर-४८३.५, राजुल बैताला,

बागलकोट-४८३.०, शम्भूसिंह कांटेड, नीमच-४८३.०, स्नेहलता जैन, मानसा-४८३.०, मधु जामड़, जयपुर- ४८३.०, गायत्री जैन, भरतपुर-४८३.०, मदनलाल कूकड़ा, चेन्नई-४८३.०, ममता भण्डारी, अजमेर-४८३.०, इंदु कमलेश जैन, मुम्बई-४८३.०, बसंती बाई पारख, दुर्ग-४८३.०, आकांक्षा सुराणा, ठाणे-४८३.०; सीमा कोटेचा, भुसावल-४८३.०, संगीता गोठी, तिरूचिरापल्ली-४८३.०, मंजु हुण्डिया, बालोतरा-४८३.०, अंजु तातेड़, दिल्ली-४८३.०, माणक बेताला, चेन्नई-४८३.०, सुजाता जैन, बरवाड़ा-४८३.०, अस्मिता डाकलिया, जोधपुर-४८३.०, अरूणा बोहरा, बैंगलोर-४८३.०, मंजु जैन, करोली हिण्डोन-४८२.५, तारमधोका, बैंगलोर-४८२.५, सुभद्रा जैन, पानीपत-४८२.०, रूपाली पारख, नाँदगाँव-४८२.०, निधि जैन, मंदलोढ़ामंडी-४८२.०, रेण जैन, लुधियाना-४८२.०, शर्मिला खींवसरा, अजमेर-४८२.०, नीतू सिंघवी, चेन्नई-४८२.०, निर्मला चोरडिया, जयपुर-४८२.०, राम बुधमल बागमार, मैसूर-४८२.०, मधु राजेश बाघमार, जबलपुर-४८२.०, चांदनी जैन, भटिंडा-४८२.०, कमला लोढा, जयपुर-४८२.०,अनिता मारू, मंदसौर-४८२.०, इन्द्रा महता, उदयपुर-४८२.०, राहुल जैन, सवाईमाधोपुर-४८२.०, शशी सांखला, छत्तीसगढ़-४८२.०, चन्दनबाला चोरडिया, चेन्नई-४८२.०, समता मंडलेचा, पाली-४८२.०, मिनाक्षी आंबड, ठाणे-४८२.०, सुनीता मेहता, बालोतरा-४८२.०, अक्षिता जैन, दिल्ली-४८२.०, सुशीला कुमारी पालावत, जयपुर-४८२.०, राकेश जैन, बूंदी-४८२.०, अनिता जैन, पंजाब-४८१.५, गुणवंती पारख, तिरूचिरापल्ली-४८१.५, मोनिका बेद, चैन्नई-४८१.५, सुमन चौपडा, चेन्नई-४८१.०, निर्मल डागा, बूंदी-४८१.०, इन्द्रा बांठिया, अहमदाबाद-४८१.०, निशा भण्डारी, मैसूर-४८१.०, माया जैन, जरखोदा-४८१.०, प्रवीणा वैद, चेन्नई-४८१.०, मयूरी संतोष जैन, धूले-४८१.०, प्रतिभा बरडिया, गुलाबपुरा-४८१.०, हिम्मत सिंह मेहता, मंदसौर-४८१.०, अनिताबाई सियाल, बैंगलोर-४८१.०, सूरज बंसल, भटिंडा-४८१.०, शांता कर्णावट, जोधपुर-४८१.०, श्री राजेन्द्र जी छाजेड़, नासिक-४८१.०, मीना अजमेरा, मलाड(वेस्ट)-४८१.०, पारूल पोखरणा, अजमेर-४८१.०, अंजली सूर्या, जोधपुर-४८१.०, हेमलता सिंघी, अहमदनगर-४८१.०, प्रियंका नाहटा, बालोतरा-४८१.०, चन्द्रकांता लोढ़ा, जयपुर-४८१.०, शीतल जैन, चेन्नई-४८१.०, प्रमिला दुगड़, नासिक-४८१.०, मेघा जैन, भरतपुर-४८१.०, साधना कांकरिया, उज्जैन-४८०.५, शर्मिला धोका, मैसूर-४८०.५, नीलम जैन, हरियाणा-४८०.५, सरोज बोहरा, बैंगलोर-४८०.५, ज्योति सेठी, आबूरोड सिरोही-४८०.५, सुमनडागा, भोपाल-४८०.०, सुशीला चोरडिया, रतलाम-४८०.०, पुष्पा कोठारी, मैसूर-४८०.०, प्रकाश छल्लाणी, चेन्नई-४८०.०, महावीर प्रसाद जैन, बूंदी-४८०.०, पुष्पा चपडौद, जावरा-४८०.०, नीलिमा जैन, हरियाणा-४८०.०, सुनिता छाजेड़, नासिक-४८०.०, नेहा जैन, लुधियाना-४८०.०, साधना शरद बोथरा, सॉगली-४८०.०, सरोज कोठारी, चेन्नई-४८०.०, विनीता जैन, सवाईमाधोपुर-४८०.०, सीमा जैन, सवाईमाधोपुर-४८०.०, श्वेता प्रशांत वेदमुथा, नासिक-४८०.०, मधुबाला सहलोत, मैसूर-४८०.०, मनीषा आर जैन, धुले-४८०.०, प्रियंका जैन, जयपुर-४८०.०, शकुन्तला कोठारी, जयपुर-४८०.०, अनिता धारीवाल, कोटा-४८०.०, चंचल गोटावत, बैंगलोर-४८०.०, सुन्दर सिंह चकोर, कवर्धा-४८०.०, छाया जैन, नालासोपारा-४८०.०, रीना जैन, जयपुर-४८०.०, शशी रेड, पाली-मारवाड़-४८०.०, दीपक जैन, भरतपुर-४८०.०, विमला बोहरा, जयपुर-४८०.०, सुनीता जैन-४८०.०, क्रांति कवाड़, मालेगांव-४८०.०, विकास बम्ब, जयपुर-४८०.०, कविता भण्डारी, चेन्नई-४८०.०, सीमा मुणोत, अहमदनगर-४८०.०, मंजुला जैन, भायन्दर-४७६.५, मीना नेमीरांका, जलगाँव-४७६.५, अशोक जीरावला, बालोतरा-४७६.५, योगेन्द्र जैन, करौली-४७६.५, सरला वुरड, धुले-४७६.५, शशि कांकरिया, चेन्नई-४७६.५, सुमन महता, कोटा-४७६.५, शिवानी बुरड, जोधपुर-४७६.५, सुगनचंद छाजेड़, जोधपुर-४७६.५, राखी जैन, धुलिया-४७६.०, ज्योति जैन, कोटा-४७६.०, वीजालशाह, दिल्ली-४७६.०, ललिता जैन, सवाईमाधोपुर-४७६.०, प्रीति जैन, मूंदी-४७६.०, सुनीता जैन, रोहिणी-४७६.०, तेजस्विनी, गुजरात-४७६.०, दीपिका मरलेचा, चेन्नई-४७६.०, सूर्यकांता जैन, दिल्ली-४७६.०, मंजु जरगड, जयपुर-४७६.०, राजुल रमेशचंद, धूलिया-४७६.०, शिंगवी पुष्पा रमेश जी, पुणे-४७६.०, सुचिता

कांकरेचा, इन्दौर-४७६.०, अंजू जैन, जयपुर-४७६.०, नीलू कांकरिया, अजमेर-४७६.०, कुसुम कटारिया, नालासोपारा-४७६.०, मंजू बागमार, जबलपुर-४७६.०, पुष्पालता जैन, जयपुर-४७६.०, वीना जैन, अलीगढ़ रामघाट-४७६.०, कमला सेठिया, मसूदा-४७६.०, सुनीता मेडतवाल, कोटा-४७६.०, चन्द्रा सिंघवी, बालोतरा-४७६.०, सपना कोचर, चेन्नई-४७६.०, उषा बोहरा, जोधपुर-४७६.०, ज्योति बागमार, बागलकोट-४७६.०, मीना खिंदावत, मंदसौर-४७६.०, शोभा सिंघवी, जोधपुर-४७६.०, मधु जैन, चेन्नई-४७६.०, पूर्णिमा लोढ़ा, जयपुर-४७६.० सुशीला जैन, भरतपुर-४७६.०, स्मिता चौपड़ा-४७६.०, कमलेश जैन, मानसा-४७८.५, रेखा छिंगावत-४७८.५, किरण बाई मुथा, बैंगलोर-४७८.५, जया छाजेड़, ठाणे-४७८.५, अनिता चोरडिया, नांदगांव-४७८.५, विमला बरडिया, जलगाँव-४७८.५, सुनिता नाहटा, ब्यावर-४७८.०; रंजिता जैन, श्रीपुरा-४७८.०, ललिता जैन, फरीदकोट-४७८.०, ज्योति डागा, जयपुर-४७८.०, राजकुमार बांठिया, पाली-४७८.०, दीपा तालेड़ा, मंदसौर-४७८.०, पूजा मनसुखलाल, जलगाँव-४७८.०, अलका गोलेच्छा, भवानीमंडी-४७८.०, अनु जैन, मंजूरा करनाल-४७८.०, पूर्विका मुणोत, बैंगलोर-४७८.०, मैना चोरडिया, किशनगढ-४७८.०, चन्द्रकला नाग सेठिया, होलनांथा-४७८.०, सूरज कंवर खींवसरा, अजमेर-४७८.०, मधु काकरेचा, इन्दौर-४७८.०, धनवती धारीवाल, बैंगलोर-४७८.०, सूरजबाई पारख, नाँदगाँव-४७८.०, राकेश पोखरना, सिरकली-४७८.०, मीनाक्षी श्रीमाल, गोटन-४७८.०, सविता जैन, फरीदकोट-४७८.०, रानी जैन, फरीदकोट-४७८.०, विनिता जैन, सवाईमाधोपुर-४७८.०, आशा जैन, दिल्ली-४७८.०, सीमा जैन, कोटा-४७८.०, गुलाब सिंघवी, बैंगलोर-४७८.०, समता रेड, बैंगलोर-४७८.०, अलका जैन, नाभा-४७७.५, सुभद्रा जैन, जयपुर-४७७.५, रोहिणी लोढा, उज्जैन-४७७.५, संतोष गोलेछा, बैंगलोर-४७७.५, इन्द्रा सकलेचा, उज्जैन-४७७.५, संगीता बोहरा, चेन्नई-४७७.५, डॉ. निहाल सेठिया, शिरपुर-४७७.०, भारती जैन, सवाईमाधोपुर-४७७.०, दर्शिका जी टाटिया, बलीराम पेट-४७७.०, तारा पारसमल बोथरा, जलगाँव-४७७.०, श्वेता जैन, लुधियाना-४७७.०, तारा लूणिया, बैंगलोर-४७७.०, कमलाबाई गोगड़, पिंपलनेर-४७७.०, दीपिका पारख, नाँदगाँव-४७७.०, शकुनदेवी बाघमार, जबलपुर-४७७.०, संजु चौपड़ा, गौरखपुर-४७७.०, रश्मि पावेचा, सोजत रोड-४७७.०, अनुपमा जैन, अहमदगढ़-४७७.०, शोभा गुलेच्छा, चेन्नई-४७७.०, नीना जैन, इन्दौर-४७७.०, तृप्ति बागमार, बागलकोट-४७७.०, निर्मला लोढा, नांदगांव-४७७.०, गोतम चण्डालिया, चितौड़गढ-४७७.०, प्रेमलता कर्नावट, मुंदीखण्डवा-४७७.०, सरोज मकाणा, तमिलनाडु-४७७.०, वनीता जैन, नाथद्वारा-४७६.५, उषा लोढा, नीमच-४७६.५, कंचन जैन, सवाईमाधोपुर-४७६.५, अन्नु जैन, जीन्द-४७६.५, प्रेम कुम्भट, चेन्नई-४७६.०, पुष्पा पितलिया, मंदसौर-४७६.०, उज्ज्वल भारत बोथरा, सांगनि-४७६.०, निर्मला बाई सालेचा, मैसूर-४७६.०, पुष्पा बाठिया, बालोतरा-४७६.०, कमला विराणी, जयपुर-४७६.०, पुष्पा पारसमल तातेड़, धुलिया-४७६.०, ममता चोरडिया, जलगाँव- ४७६.०, विमला जी कांकरेचा, वेपरी चेन्नई-४७६.०, सुश्री श्वेता जैन, अहमदाबाद-४७६.०, वीरेन्द्र जैन, भरतपुर-४७६.०,पारस जैन, बल्लारी-४७६.०, हंसराज मोहनोत, जयपुर-४७६.०,आशा सुरासणा, ठाणे-४७६.०, पदम दूगड़, धुले-४७६.०, मनीषा दुगड़, जलगाँव-४७६.०, सुशीला दुग्गड़, चितौडगढ़-४७६.०, मधु मेहता, जयपुर-४७६.०, सीमा सुराणा, नादगांव-४७५.५, प्रियंका जैन, बूंदी-४७५.५, विजया सुभाष लोढ़ा, धूलिया-४७५.५, शिल्पा रांका, बालोतरा-४७५.५, सुधा खिंवसरा, वैलूर-४७५.५, पुष्पा लोढा, मैसूर- ४७५.५, रीटा शाह, बडवाह-४७५.५, कांता चतुर्मूथा, दिल्ली-४७५.०, साधना परमार, उदयपुर-४७५.०, जयप्रकाश लोढ़ा, जयपुर-४७५.०, ताराबाई खींवसरा, बैंगलोर-४७५.०, चंचल कोठारी, पूणे-४७५.०, शोभना जैन दुधेड़िया, चेन्नई-४७५.०, सुर्मिल जैन, पीपाड़-४७५.०, संतोष बाई मांडोत, बैंगलोर-४७५.०, आरती मुणोत, चेन्नई-४७५.०, सरिता संकलेचा, धूले-४७५.०, संगीता बालिया, जयपुर-४७५.०, प्रमीला बम्ब, जयपुर-४७५.०, मंजू बाठिया, सिरकली-४७५.०, मीनाक्षी मेहता, दूदू-४७५.०, नेहा भण्डारी, बालोतरा-४७५.०, अस्मिता गुगले-४७५.०, अरूणा जैन, अलीगढ़-४७५.०, कमला सुराणा, पाली

मारवाड़-४७५.०, छाया मूथा, सतारा-४७५.०, मगन भण्डारी, जोधपुर-४७५.०, सज्जन ललवाणी, चेन्नई-४७४.५, कुसुम पूनमिया, इचलकरण जी-४७४.५, अर्चना सकलेचा, त्रिवेन्द्रम-४७४.५, निशा मेहता, जयपुर-४७४.०, शारदा बोथरा, जयपुर-४७४.०, सुमन जैन, मुम्बई-४७४.०, आशा जैन, खोह-४७४.०, विजया प्रवीण मुणोत, जलगाँव-४७४.०, ज्योति देवी, कर्नाटक-४७४.०,संतोष श्री श्रीमाल, बालोतरा-४७४.०, सुशील कुमार जैन, भरतपुर-४७४.०, पंकज जैन, रतनगढ जावद-४७४.० विजिया सेठिया, मैसूर-४७४.०, सुषमा खाबिया, पुणे-४७४.०, सपना नाग सेठिया, धुले-४७४.०, ज्ञानलता मेहता, दूदू-४७४.०, जितेन्द्र कांकरिया, मुम्बई-४७४.०, जतन महता-४७३.५, वंदना खींचा, सूरत-४७३.५, सरोज जैन, विजयवाड़ा-४७३.०, त्रिशला जैन, लुधियाना-४७३.०, वर्षा जैन, सवाईमाधोपुर-४७३.०, कानन चौधरी, देवास-४७३.०, प्रीति जैन, विजयनगर-४७३.०, सरला कुमारी चौपड़ा मुथा, अम्बातुर-४७३.०, सीमा बोथरा, चेन्नई-४७३.०, रेणु जैन, कटकड, हिण्डोन-४७३.०, मनीषा कोठारी, बालोतरा-४७३.०, शोभा सिंघवी, जोधपुर-४७३.०, लता कर्नावट, धुलिया-४७३.०, मुदित जैन, जयपुर-४७३.०, कंचन लोढा, चेन्नई-४७३.०, नीतू बागरेचा, हरिहर-४७३.०, ज्योति चोरडिया, जलगाँव-४७२.५, आरती चोरडिया, नागपुर-४७२.५, सुनीता चोरडिया, मैसूर-४७२.५, संध्या कांकरिया, रायपुर-४७२.०, सावित्री देवी जैन, करौली-४७२.०, मोहित जैन, लुधियाना-४७२.०, अनमोल जैन, जोधपुर-४७२.०, सुशीला जैन, अहमदगढ़-४७२.०, विनीता राकेचा, त्रिचरापल्ली-४७२.०, संतोष तातेड़, बालोतरा-४७२.०, सुशीला देवी, मैसूर-४७२.०, ज्योति तातेड, धुलिया-४७२.०, भारती करणपुरिया, उदयपुर-४७२.०, किरण सहलोत, मोखन जावद-४७२.०, कमल सुरेशचंद जी कुचेरिया, पाथर्डी-४७२.०, पी. आर. जैन, जोधपुर-४७२.०, सरोज महता, जयपुर-४७२.०, सागरचन्द सेठिया-४७२.०, रेखा भण्डारी, बडवाह-४७२.०, कल्पना पीपाड़ा, चेन्नई-४७२.०, मिनाक्षी छाजेड़, समदड़ी-४७२.०, मूली भण्डारी, बालोतरा-४७२.०, अनीता ओस्तवाल, चेन्नई-४७२.०, शुभद्रा धारीवाल, पाली-४७२.०, सरला मुणोत, जयपुर-४७२.०, अनामिका कोठारी, जलगाँव-४७१.५, अलका पारख, अमलनेर-४७१.५, सीमा धींग, उदयपुर-४७१.५, हेमलता नाहर, बैंगलोर-४७१.५, पुष्पा जैन, पीपाड़-४७१.०, मंगला जैन, पीपाड़-४७१.०, सुशील जैन, मडलोढामंडी-४७१.०, केसर गांग, जोधपुर-४७१.०, अंकिता जैन, जोधपुर-४७१.०, निर्मला, जयपुर-४७१.०, स्वर्णलता कुमलोत, चेन्नई-४७१.०, गनपतराज जैन मोहनोत, जोधपुर-४७१.०, मदनदेवी चौपड़ा, मदनगंज-४७१.०, कमलेश जैन, जलगाँव-४७१.०, शिप्रा जैन, कोटा-४७१.०, निर्मला कु. लोढ़ा, चेन्नई-४७१.०, विजयलक्ष्मी पामेचा, मंदसौर-४७१.०, सज्जनकंवर मेहता, जोधपुर-४७१.०, निशा जैन, सवाईमाधोपुर-४७१.०, विनय जैन, बैंगलोर-४७१.०,लका मेहता, जोधपुर-४७१.०, राजकुमारी, पोरवाल-४७१.०, शिखा तातेड़, बैतूल-४७१.०, सरिता मकाणा, ब्यावर-४७१.०, राजुल चोरडिया, किशनगढ-४७०.५, मंजू सुराणा, चेन्नई-४७०.०, गौरी जैन, पानीपत-४७०.०, सविता जैन, कोटा-४७०.०, सरोज देवी, किशनगढ़-४७०.०, दिपीका जैन, मंदसौर-४७०.०, सरीता जैन, लुधियाना-४७०.०, भासी डूंगरवाल, चेन्नई-४७०.०, रूक्मिणी टी. सिंघवी, मैसूर-४७०.०, मंजूबाई मुथ्था, विन्डीवनम-४७०.०, सुनिता जैन, बैंगलोर-४७०.०, अंजना लोढा, नालासोपारा-४७०.०, श्रेया सिंघवी, जयपुर-४७०.०, सुमन कुमारी, दिल्ली-४७०.०, नयनतारा बाफना, जलगाँव-४७०.०, चन्द्रकला बागमार, पुणे-४७०.०, प्रभा सुराणा, चेन्नई-४७०.०, अनिता बाफना, बैंगलोर-४७०.०, सुरेन्द्र महता, शिमोगा-४७०.०, मोनिका सुराणा, जयपुर-७०.०, शैलनाग सेठिया, शिरपुर-४६९.५, आरती बेताला, चेन्नई-४६९.५, मधु मेडतवाल, भीलवाडा-४६९.५, सुरेखा चौपड़ा, जलगाँव-४६९.५, मधुर मेहता, कोटा-४६९.०, वंदना बाफणा, चन्द्रपुर-४६९.०, राजकुमारी बाफना, चेन्नई-४६९.०, सलोनी जैन, चेन्नई-४६९.०, कनकावती जैन, भीलवाड़ा-४६९.०, भोमराज गुलगुलिया, सिलछर-४६९.०, अभिजीत कुमार-४६९.०, कु. पिंकी जैन, अलीगढ़ रामपुरा-४६९.०, भरतखेमशाह-४६९.०, रितू बाफना, जोधपुर-४६९.०, सुशीला सेठिया, मैसूर-४६९.०, उषा जैन, मंदसौर-४६९.०, हेमलता भंसाली, घोटी-४६९.०, बसंती, विजयवाड़ा-

४६६.०, गुणमाला कोठारी, कोष-४६६.०, मोनू कोठारी, जयपुर-४६६.०, प्रियंका छौक्कट, सोनिपत-४६६.०,हंसा सुराणा, बीकानेर-४६६.०, मंगला बेदमूथा, सांगली-४६६.०, मोनिका जैन, सुन्दर नगर लुधियाना-४६६.०, अनु जैन, मदलोदा-४६८.५, मंजु सिंघी, भीलवाडा-४६८.५, इन्द्रा कोठारी, जयपुर-४६८.५, अनीता गादिया, चेन्नई-४६८.५, चित्रा डागा, बूंदी-४६८.५, प्रमिला पोखरणा, धुलिया-४६८.०, कमला खिंवसरा, पुणे-४६८.०, निधि नाहर, मसूदा-४६८.०, अर्चना पामेचा, मंदसौर-४६८.०, अनिता कोचर, मूंदी-४६८.०, वीणा जैन, जालंधर-४६८.० पुष्पाबाई, धूलिया-४६८.०, मंगलाबाई अशोक, बुरहानपुर-४६८.०, निर्मला चोरडिया, चेन्नई-४६८.०, कुसुम मेहता, कोप्पल-४६८.०, वी. नीतू सोलंकी, चेन्नई-४६८.०, लीला कांकरिया, रायपुर-४६८.०, उषा बेनशाह, कानपुर-४६८.०, स्वाति जैन, मण्डावर महवा-४६८.०, अनिल भण्डारी, वीदर्भ-४६८.०, अंजलि भण्डारी, बालोतरा-४६८.०, अर्चना भण्डारी, जालना-४६८.०, सरयू बहन भिमानी, चेन्नई-४६८.०, भंवरी नाहटा, चेन्नई-४६८.०, भावना चौधरी, जयपुर-४६८.०, अभिलाषा जैन, अजमेर-४६८.०, चेतना बम्ब, जयपुर-४६८.०, कांता संचेती, बैंगालेर-४६८.०, मंजू कोठारी, बैंगलोर-४६८.०, सज्जन सुराणा, दिल्ली-४६८.०, सरला खिवसरा, चेन्नई-४६७.५, मंजु सिंघवी, भीलवाड़ा-४६७.५, सुनन्दा सांखला, जलगाँव-४६७.५, हेमलता युवराज कोठारी, चरई ठाणे-४६७.०, प्रियंका मेहता, मुम्बई-४६७.०, शिरीष जैन, जयपुर-४६७.०, राजकंवर बोहरा, रायचूर-४६७.०, सरिता जैन, उज्जैन-४६७.०, सीमा जैन मानसा-४६७.०, मुन्नालाल भण्डारी, जोधपुर-४६७.०, सुभद्रा भटेवड़ा, वैल्लूर-४६७.०, सरिता मेहता, नयापुरा-४६७.०, कुसुम जैन, फगवाड़ा-४६७.०, संगीता गादिया, उज्जैन-४६७.०, उर्मिला छाजेड़, चेन्नई-४६७.०, योगेश जैन, करोली-४६७.०, ममता मेहता, उज्जैन-४६७.०, चन्दरसिंह, हरियाणा-४६७.०, ललिता काठेड-४६७.० शोभा सुराणा, बीकानेर-४६७.०, संतोष अरवावत, सोजत रोड-४६७.०, सुनीता खाबिया, चेन्नई-४६७.०, माधवी (सांखला) जैन-४६७.०, सरिता मुणोत, बैंगालोर-४६७.०, प्रेमा मकाणा, मैसूर-४६६.५, ममता भण्डारी, जलगाँव- ४६६.५, हेमलता भण्डारी, किलपाक-४६६.५, कमला देशरिया, नवसारी-४६६.५, मीना सालेचा, बैंगलोर-४६६.०, राजल देवी, बालोतरा-४६६.०, सुश्री दीपशिखा जैन, मकराना-४६६.०, शांता बेताला, बागलकोट-४६६.०, प्रिन्स जैन, अलवर-४६६.०, रत्ना सुराणा, सेंधवा-४६६.०, सरिता चतुर्मूथा, दिल्ली-४६६.०, सुशीला बलदोरा, अहमदनगर-४६६.०, सूरज पोरवाल, उदयपुर-४६५.५, उज्जवला सांखला, जलगाँव-४६५.५, पदमा बारलोता, चेन्नई-४६५.५, मोना जैन, जयपुर-४६५.०, सुशीला कांकरिया, अमलनेर-४६५.०, संपत बैन, शांतिलाल सुराणा, माधवनगर-४६५.०, स्नेहलता कोठारी, बूंदी-४६५.०, प्रशांत बंसल, भटिण्डा-४६५.०, सरला बेताला, बागलकोट-४६५.०, आशा काठेड़, उज्जैन-४६५.०, संदीप कुमार राठी-४६५.०, सुजाता सेठीया, रायचुर-४६५.०, बाबूलाल जैन, भरतपुर-४६५.०, दर्शन चोरडिया, अमलनेर-४६५.०, सुरेश जैन, अलवर-४६५.०, सुनीता लुनिया, बैंगलोर-४६५.०, सुमन जामड़, किशनगढ़-४६५.०, सूरज अलीजार, जलबपुर-४६४.५, रेखा कुमारी जैन, चितौडगढ़-४६४.५, आदर्श जैन, नखाणामंडी-४६४.०, विनिता जैन, जसोल-४६४.०, रंजन मटालिया, तिरची-४६४.०, मुकेश चोरडिया, पारोला-४६४.०, मंजू ओस्तवाल, विजयवाड़ा-४६४.०, इन्द्रा हिंगड़-४६४.०, संतोष प्रजापत, सोनीपत-४६४.०, भूपेन्द्र कच्छारा, मंदसौर-४६४.०, रमेश चोरडिया, उज्जैन-४६४.०, सीमा लुणावत, सतारा-४६४.०, संगीता जैन, चेन्नई-४६३.५, सुनन्दा खींचा, जलगाँव-४६३.५, भारती सांवला, नवसारी-४६३.५, सौरभदेवी, नीमच-४६३.०, पुष्पा खवाड़, शिमोगा-४६३.०, निर्मला सिंघी, वैलूर-४६३.०, शर्मिला सिंघवी, जयपुर-४६३.०, अनिता मुंदड़ा, रतनगढ़ जावद-४६३.०, डा. रूपरेखा जैन, चेन्नई-४६३.०, विजिया छाबड़ा, कंवर्घा-४६३..० विकास छौक्कर, सोनीपत-४६३.०, मैना सेठिया, नवसारी-४६३.०, पुष्पलता लोढ़ा, पाली मारवाड़-४६३.० पारस नाहटा, जलगाँव-४६३.०, सुशीला बाफना, जोधपुर-४६३.०, ललिता छाजेड़, नवसारी-४६३.०, निर्मला कोठारी, कोटा-४६२.५, भावना जैन, जयपुर-४६२.५, निर्मल जैन, धुले-

४६२.५,पुष्पा सालेचा, मैसूर-४६२. ०, राहुल कोठारी, जयपुर-४६२.०, प्राप्ति जैन, लुधियाना-४६२.०, स्मिता राजेन्द्र पारख, जलगाँव-४६२.०, नीरू जैन, फरीदकोट-४६२.०, संजु सुराणा, चेन्नई-४६२.०, कुं. गुंजन जैन, करौली-४६२.०, सपना चतुर, खेड़ा, धुले-४६२.०, ममता देवी जीरावला, बालोतरा-४६२.०, कनकलाल जैन, जलगाँव-४६२.०, कुसुम सिंघी, जोधपुर-४६२.०, निर्मला ओस्तवाल, धुले-४६२.०, इन्द्रा देवी बाबेल, भीलवाडा-४६२.०, संगीता भण्डारी, किलपाक-४६२.०, सीमा रांका, बैंगलोर-४६२.०, उर्मिला बोहरा, मण्डवा-४६२.०, नीता जैन, मंदसौर-४६१.५, संतोष जैन, अलवर-४६१.५, प्रेम चोरडिया, किशनगढ़-४६१.०, मेघा सिंघवी, जलगाँव-४६१.०, अरूणा जैन, नोयडा-४६१.०, भावना शांतीलाल सुराणा, नाँदगांव-४६१.०, सरोज तलेसरा, भलरों का बाड़ा-४६१.०, प्रियंका जैन- ४६१.०, मनीषा बोरा, धुले-४६१.०, उर्मिला शाह, चेन्नई-४६१.०, कैलाश जैन-४६१.०, प्रेमलता रांका, बैंगलोर-४६१.०, नथमल कोठारी, दुर्ग-४६०.५, अनिता दुधेड़िया, औरंगाबाद-४६०.५, निधि जैन, सवाईमाधोपुर-४६०.०, विद्या ओस्तवाल, मुम्बई-४६०.०, रिंकी जैन, जयपुर-४६०.०, ललिता चोरडिया, चेन्नई-४६०.०, डिम्पल तातेड, बालोतरा-४६०.०, स्वाति डोसी, जयपुर-४६०.०, सुमित्रा लोढ़ा, बैंगलोर-४६०.०, वेदप्रकाश जैन, जीन्द हरियाणा-४६०.०, मगन जैन, करौली-४६०.०, ऋषभ कुमार, अहमदाबाद-४६०.०, मोनिका तारागर, कोपल-४६०.०, हेमलता हीरावत, जयपुर-४६०.०, दिलीप रांका, बैंगालोर-४६०.०, जयश्री कोठारी, थाना-४६०.०, चंचल जैन, सवाईमाधोपुर-४५९.५, ममता बोथरा, वैल्लूर-४५९.५, जितेन्द्र वैद, इन्दौर-४५९.५, आशा महता, शिमोगा-४५९.५, मोंटू लोढ़ा, बैंगलोर-४५९.०, मजनी देवी बंदा, बालोतरा-४५९.०, संजय विनोद देसाई-४५९.०, कु. कीर्ति लुणावत, नासिक-४५९.०, प्रेमलता मुणोत, जलगाँव-४५९.०, मोनिका दुघडिया, मेड़ता सिटी-४५९.०, अनिता जैन, दिल्ली-४५९.०, मानादेवी कोठारी, त्रिती-४५८.५, नवीन सुराणा, बाडमेर-४५८.५, पूनमगुगले, पाथर्डी अहमदनगर-४५८.०, निर्मला बोथरा, जयपुर-४५८.०, त्रिशला बाघमार, जबलपुर- ४५८.०, इन्द्रा भण्डारी, चेन्नई-४५८.०, पुष्पलता विजय बनवट, जलगाँव-४५८.०, सोलंकी ताराबाई, पुणे-४५८.०, रीता बोहरा, बम्बई-४५८.०, रेखा जैन, अलवर-४५८.०, पुष्पवती, जलगाँव-४५७.५, राज मेहता, जबलपुर-४५७.५, सुवर्णा मूणोत, मंडोर समोर-४५७.०, पूनम जैन, गन्नौर-४५७.०, शीला जैन, बैंगलोर-४५७.०, राशि चांवर, जोधपुर-४५७.०, दीपक जैन, जलगाँव-४५७.०, सुरेन्द्र चौधरी, बम्बई-४५७.०, आभा जैन, अलवर खेरली-४५७.०, चेतना लोढा, वैलूर-४५७.०, मनीषा कटारिया, जयपुर-४५७.०, साधना अभय नाहर, मंदसौर-४५६.५, प्रणिता काकरिया, धुलिया-४५६.५, शीला कोठारी, कोपल-४५६.५, मीनाक्षी मेहता, मंदसौर-४५६.०, मंजुला बोहरा, भवानीमंडी-४५६.०, सीमा छाजेड़, जयपुर-४५६.०, आशा देवी टोडरवाल, सोजतरोड-४५६.०, विमला मेहता, विजयवाड़ा-४५६.०, विमल कोठारी, जामनेर-४५६.०, आभा जैन, फरीदकोट-४५६.०, शांतिलाल चण्डालिया, चितौडगड़-४५६.०, नीता मेहता, मंदसौर-४५५.०, प्रमीला महता, विजयनगर-४५५.०, सरला लूणिया, बैंगलोर-४५५.०,लीला मेहता, जयपुर-४५५.०, सुनिता भण्डारी, रायचूर-४५४.५, विनिता गादिया, उज्जैन-४५४.५, पिंकी मारू, बैंगलोर-४५४.५, रोहिता जैन, उज्जैन-४५४.०, चन्द्रकेशर कर्णावट, किशनगढ़-४५४.०, दिनेश मंजु बाफना-४५४.०, अमीता भण्डारी, बैंगलोर-४५४.० श्रेयस बोरा, पुणे-४५४.०, सुनीला बैगानी, जोधपुर-४५४.०, त्रिशला जैन, रोहिणी दिल्ली-४५४.०, शैली जैन, गोराया- ४५४.०, सरिता चौपड़ा, बैंगलोर-४५४.०, बाबूलाल कटारिया, हैदराबाद-४५३.०, प्रितेश जैन, नवसई-४५३.०, कांता जैन, बूंदी-४५३.०, तारादेवी चोरडिया, उज्जैन-४५३.०, महावीर रांका, विल्लीपुरम-४५३.०, गोविन्द जैन, सवाईमाधोपुर-४५३.०, शोभा कांठेड, वैलूर-४५३.०, श्रद्धा खिंवसरा, जलगाँव-४५३.०, प्रेमलता कर्नावट, दीन्डीवनम-४५३.०, शांति गुगलिया, सुमेरपुर-४५३.०, स्नेहा कटारिया, इन्दौर-४५२.५, पदमा चौपड़ा, जबलपुर-४५२.५, इन्दु नलवाया, भीलवाड़ा-४५२.५, कल्पना जैन, जलगाँव-४५२.०, जितेन्द्र बांठिया, बाड़मेर-४५२.०, निर्मला नाहर, चेन्नई-४५२.०, निर्मला कटारिया, वेल्लुर-४५२.०, समता रूणवाल, जलगाँव-४५२.०, वसंता गोलेछा, चेन्नई-४५२.०, कनक भण्डारी, जयपुर-४५२.०, प्रेमा बागमार,

बालोतरा-४५२.०, नितिन भण्डारी, जोधपुर-४५२.०, प्रकाश कुमार तातेड़, बालोतरा-४५२.०, शिल्पा बाफना, जोधपुर-४५२.०, राजकंवर रांका, सोलापुर-४५१.५, रितु जेसवानी, भोपाल-४५१.०, शोभा संचेती, बैंगलोर-४५१.०, बनवारीदेवी गोलेछा, चेन्नई-४५१.०, स्मिता जैन, बैंगलोर-४५१.०, सोनाली खिंवसरा, जलगाँव-४५१.०,हरीश तातेड़, बालोतरा-४५१.०, सरला कोठारी, बैंगलोर-४५०.५, शिखा जैन, सवाईमाधोपुर-४५०.०, सीमा पोखरणा, मुंदिया-४५०.०, शिल्पा गांधी, जोधपुर-४५०.०, दिपीका पोरवाल, भोपालगढ़-४५०.०, विमला गोखरू, जयपुर-४५०.०, प्रवीण सुराणा, गुलाबपुरा-४५०.०, बिन्दु हितेष चौधरी, धुलिया-४५०.०, आर राजकंवर लोढ़ा, बैंगलोर-४५०.०, रोमा जैन, लुधियाणा-४५०.०, विजया सकलेचा, जलगाँव-४५०.०, कुसुम जैन, कोटा-४५०.०, निर्मल कोठारी, विजयवाड़ा-४५०.०, रिंकु जैन, पाली-४५०.०, अंकिता खिवसरा, जलगाँव-४४९.५, बिन्दु श्रीमाल, कानाना-४४९.५, सीमा लुणावत, जोधपुर-४४९.०, विमलाबाई गन्ना, बैंगलोर-४४९.०, रेखा कोठारी, राजाजीनगर बैंगलोर-४४९.०, मिश्रीदक, बैंगलोर-४४९.०, रिंकु धारीवाल, भडगांव-४४९.०, पदमचंद मुणोत, जयपुर-४४९.०, मोहिनी कोठारी, बैंगलोर-४४९.०, उतिका चंगेडिया, पुणे-४४८.५, संगीता पारख, गुंटकल-४४८.५, उगमा दुगड़, बैंगलोर-४४८.०, महेन्द्र पीपाड़ा, जयपुर-४४८.०, स्वाति जैन, भरतपुर-४४८.०, स्नेहलता मेहता, किशनगढ़-४४८.०, पदमाबाई तालेडा, कुकनूर-४४८.०, अनु भण्डारी, जयपुर-४४८.०, ललित कुमार कोठारी, दूदूं जयपुर-४४८.०, कंचन भंसाली, चेन्नई-४४८.०, लीलादेवी मालेचा, बालोतरा-४४७.५, मनिता कोठारी, बालोतरा-४४७.५, चन्द्रलेखा गुलेच्छा, वेल्लूर-४४७.५, शैफाली कर्नावट, मंदी खण्डवा-४४७.५, रिंकू बाफना, जोधपुर-४४७.०, सरोज, बालोतरा-४४७.०, इन्द्रा बाघमार, बालोतरा-४४७.०, ललिता श्रीमाल, शिमोगा-४४७.०, हेमलता, जोधपुर-४४७.०, जवेरी लाल कांकरिया, बाड़मेर-४४७.०, संगीता नाहर, भोपाल-४४७.०, प्रीति जैन, रामगंजमंडी-४४७.०, पुष्पा डूंगरिया, दिल्ली-४४७.०, सुनीता छाजेड़, दिल्ली-४४७.०, इचरज मुणोत, जयपुर-४४७.०, सुशीला लोढ़ा, जयपुर-४४७.०, प्रतिभा कांकरिया, चेन्नई-४४७.०, अनिता लोढ़ा, ईस्ट थाना-४४६.५, कंचन लोढ़ा, नासिक-४४६.०, पुष्पा बाफना, किशनगढ़-४४६.०, डॉ. प्रतिक्षा भलघट, पुणे-४४५.५, भावना नाहर-४४५.५, संजु डागा, जयपुर-४४५.५, यशोदा रूणवाल, बैंगलोर-४४५.५, सोनू जैन, किशनगढ़-४४५.०, नीता कांकरिया, बैंगलोर-४४५.०, मधु संचेती, बलवाड़ा-४४५.०, मनोज मंडोत, बैंगलोर-४४५.०, माया जैन, जयपुर-४४५.०, देवेन्द्र कुमार कटारिया, जयपुर-४४५.०, सपना जैन, किशनगढ़-४४५.०, छाया ओस्तवाल, विजयवाड़ा-४४५.०, संतोष गुंदेचा, सोजत रोड-४४५.०, हेमलता कर्नावट, त्रिवेन्दरम-४४४.५, बिन्दु बाघमार, मैसूर-४४४.५, हिमांशु कवाड़, जोधपुर-४४४.०, दीपा जैन, चेन्नई-४४४.०, कोमल चोरडिया, राजाजी नगर-४४४.०, वैशाली तातेड़, धुलिया-४४४.०, शिल्पा खारीवाल, बैंगलोर-४४४.०, पिंकी दक, बैंगलोर-४४४.०, मंजू कोठारी, बालोतरा-४४४.०, चंचल सेठिया, चेन्नई-४४४.०, शीतल जैन, मुम्बई-४४३.५, ज्योति जैन, भटिण्डा-४४३.०, अनिता समदडिया, बैंगलोर-४४३.०, प्रेमलता बाफना, बैंगलोर-४४३.०, शिल्पी जैन, मदलौंडा-४४३.०, अनिता दूगड़, धुले-४४३.०, आशा सुराणा, दिल्ली-४४३.०, सुशीला बैद, मैसूर-४४३.०, विणारूणवाल, ठाणे-४४२.५, अमित जैन, जयपुर-४४२.५, निकिता कोठारी, दूदू-४४२.५, सुदर्शना जैन, न्यू देहली-४४२.०, श्वेता नाहर, नई दिल्ली-४४२.०, रामेश्वरी देवी, बालोता-४४२.०, अरूणा नंदकिशोर, मनमाड़-४४२.०, मंजू जैन, गंगापुर-४४२.०, संगीता लोढ़ा, जयपुर-४४२.०, आशा जैन, पाली-४४२.०, इन्द्रा बाई कोठारी, बैंगलोर-४४२.०, शशी मुणोत, जयपुर-४४१.५, मैना कटारिया, सोजत रोड-४४१.५, लीला मूणोत, इचलकरण जी-४४१.०, राखी चौपड़ा, सांगली-४४१.०, सुगन सांड, जलगाँव-४४१.०, हेमेन्द्र जैन, करौली-४४१.०, रेखा सालेचा, बालोतरा-४४१.०, चन्दन बाला, नांदगांव नासिक-४४१.०, कल्पना तालेड़ा, होसपेट-४४०.०, सायरदेवी, होस्पेट-४४०.०, विजिया, बालोतरा-४४०.०, दमयंती सकलेचा, विलमपुरम-४४०.०, सपना बारलोता, चेन्नई-४४०.०, सुशीला सावज, सोजत रोड-४४०.०, अंजु जैन, शाहदरा-४३९.५, सुनीता मेहता,

चांदपोल बाजार-४३६.५, पारसमल जैन, नीमच-४३६.०, मनीष सोनी, भटिण्डा-४३६.०, उषा चोरडिया, जलगाँव-४३६.०, मोनिका टाटिया, राजनंदगांव-४३६.०, विद्या ढाबरिया, अजमेर-४३६.०, अंशु कोठारी, धमतरी-४३६.०, ललिता चौपड़ा-४३८.०, मधु जैन, कोटड़ी-४३८.०, भावना बोहरा, जयपुर-४३८.०, तारा विनायकिया, बैंगलोर-४३८.०, कंचन गादिया, बम्बई-४३८.०, शोर्यबाला जैन, चेन्नई-४३७.५, ललिता मूथा, कोपल-४३७.०, सुनिता तातेड़, विजयवाड़ा-४३७.०, उषा संचेती, पाली-४३७.०, निर्मला चोरडिया, उलम्दरपेट-४३७.०, वैजन्ती मेहता, बैंगलोर-४३७.०, खुशबू जैन, करोली-४३७.०,दीपक कूम्भट, जयपुर-४३६.०, वर्षा जैन, करौली-४३६.०, सूरज बोहरा, जोधपुर-४३६.०, दिपाली मुणोत-४३६.० रिखब बोथरा, किशनगढ-४३६.०, बसंती भटवेरा, धुलीया-४३६.०, प्रसन्न कोठारी, जोधपुर-४३५.५, संगीता जैन, नसीराबाद-४३५.०, रेखा विनायकिया, भलरों का बाड़ा- ४३५.०, ए कांता संकलेचा, चेन्नई-४३५.० चन्द्राबाई देवड़ा, बैंगलोर-४३५.०, अरूण कवाड़, शिमोगा-४३५.०, प्रभा ललवानी, बम्बई-४३५.०, किरण नलवाया, मंदसौर-४३४.५, नितेश कुमार, चेन्नई-४३४.०, नीतू कांकरिया, मैलापुर चैन्नई-४३४.०, जय श्री जैन, बैंगलोर-४३४.०, निर्मला कटारिया, बैंगलोर-४३४.०, सरिता सुराणा, बीकानेर-४३४.०, ममता पटवा, मैसूर-४३३.०, संध्यानवलखा, जयपुर-४३३.०, रत्नमाला, जयपुर-४३३.०, रीना जैन, जयपुर-४३३.०, गीता सुराणा, चेन्नई-४३२.५, मोनिका जैन, सवाईमाधोपुर-४३२.०, इन्द्राभाई मूथा, बैंगलोर-४३२.०, ए.मधुबाला बाफना, श्रीकालाहस्ती-४३२.०, सुभद्रा, उज्जैन-४३२.०, शिल्पा जैन, सतारा-४३२.०, सविता भंसाली, दिल्ली-४३२.०, नमिता, लातुर-४३२.०, संजीव जैन, जींद-४३१.५, कंचन जैन, इंदौर-४३१.०, मैना सकलेचा-४३१.०, सुनीता डाकलीया, जलगाँव-४३१.०, कु. ज्योति शहाचंद जी ललवाणी, पुणे-४३०.०, आशा पगारीया, जलगाँव-४३०.०, सुशीला धारीवाल, लश्कर-४३०.०, चन्द्रिका रांका, पावापुरी अपार्टमेंट-४३०.०, दर्शना जैन, फरीदकोट-४३०.०, ललिता कोठारी, मदनगंज किशनगढ-४२६.५, वि.उषा सिंघवी, उलंदरपेट-४२६.०, अभिलाषा महता, बैंगलोर-४२६.०, कमला चोरडिया, चेन्नई-४२८.५, सरिता सिंघवी, बैंगलोर-४२८.०, रामकुमार वैष्णव, समदडी-४२८.०, संतोष श्रीमाल, समदड़ी-४२८.०, पूजा मरलेचा, तमिलनाडु-४२८.०, आकांक्षा जैन, अजमेर-४२७.०, आशिमा जैन, लुधियाना-४२७.०, रमेश जैन, बम्बई-४२७.०, अनिता बेताला, वैलूर-४२७.०, नयनतारा छलाणी, बीकानेर-४२७.०, सरला नाहटा, चेन्नई-४२७.०, मोहनकंवर नाहटा, चेन्नई-४२७.०, प्रिया बाफना, चेन्नई-४२६.५, सान्या महता, बम्बई-४२६.०, रिटा जैन, बम्बई-४२६.०, पारस बाफना, औरंगाबाद-४२६.०, कल्पना जैन, जयपुर-४२५.०, रंजनवेन शाह, कानपुर-४२५.०, निर्मला वी.शाह, नवसारी-४२४.०, कमला जैन, कोलाबा बम्बई-४२४.०, नीतू दाणी, चितोड़गढ-४२४.०, प्रतिभा गांधी, पूणे-४२४.०, किरण बोथरा, उज्जैन-४२३.०, प्रीति सिंघवी, पुणे-४२३.०, मधुबाला वैद, चेन्नई-४२३.०, शर्मिला गोलेछा, चेन्नई-४२३.०, निर्मला भण्डारी, उज्जैन-४२२.०, लीला जैन, जोधपुर-४२२.०, कंचन बागमार, जलगाँव-४२२.०, खुशबू मेहता, दूदू-४२२.०, चन्द्रगोडावत, बैंगलौर-४२१.०, प्रीति चोरडिया, जलगाँव-४२१.०, शशीबोथरा, फरीदकोट-४२१.०, रवि जैन, पाली-४२१.०, शांति मरोठी, कोयम्बटूर-४२०.०, प्रकाश गांग, बम्बई-४२०.०, गुणबाला डोसी, पाली मारवाड़-४२०.०, सरोज सुराणा, सिविलितिपुरम्-४१६.५, राजु डागा, मण्डवा-४१६.०, उमा आंचलिया, भीलवाड़ा-४१७.०, प्रीति पोरवाल, उदयपुर-४१७.०, विजयाबाई सोलंकी पुणे-४१७.०, जयश्री गांधी, बैंगलोर-४१७.०, नीलम कटारिया, बैंगलोर-४१७.०, आशा लुणावत, नासिक-४१६.५, चन्द्रा पोखरणा, अजमेर-४१६.०, शशीकला नाहर, चेन्नई-४१६.०, मंजू चोरड़िया, शायद त्रिची-४१६.०, रजनबाला चोरड़िया-४१६.०, शशी कोठारी, भीलवाड़ा-४१६.०, कविता एस बाफना, होसूर-४१४.५, सुश्री अंगुर बाला कछारा, चितौड़-४१४.०, रेखा भण्डारी, चेन्नई-४१४.०, बीना जैन, दूदू-४१४.०, विद्या चिप्पड़, जलगाँव-४१४.०, महिमा सिंघवी, बैंगलोर-४१३.०, सीमा कांकरिया-४१३.०, ललिता बाघमार, चेन्नई-४१२.०, गौतम गुंदेचा, सोजत रोड-४११.०, स्नेहलता जैन, कोटा-४११.०, शकुन्तला मेहता, चेन्नई-४११.०, मोनिका जैन,

फरीदकोट-४११.०, हर्षिता बागरेचा, बैंगलोर-४१०.५, प्राची सिंघवी-४१०.५, प्रिया कटारिया, रिल्पाक चेन्नई-४१०.०, निशा भंसाली, बैंगलोर-४१०.०, बसन्ता जैन, सोजतरोड-४०९.०, लता हर्षदभाई, सांगली-४०९.०, मनीषा जैन, करोली-४०८.५, कंचन सुराणा, बीकानेर-४०८.०, शीला जैन, उज्जैन-४०८.०, प्रीति ललवाणी, पुणे-४०८.०, निर्मला ललवाणी, वजीरावाद-४०८.०, प्रीति भटेवरा, पुणे-४०७.५, रानु विजावत, बोलिया-४०७.०, राजश्री जैन, जोधपुर-४०६.०, इन्द्रा बोहरा, जयपुर-४०५.०, आनन्दीबाई जैन, इन्दौर-४०५.०, हर्षद कोठारी, वैलूर तमिलनाडु-४०५.०, पुष्पा बोहरा, सिकन्द्राबाद-४०५.०, श्वेता तालेडा, कुन्नुर-४०५.०, रानी शियाल, बैंगलोर-४०५.०, सुनिता जैन, सवाईमाधोपुर-४०४.०, मीनू जैन, नई दिल्ली-४०४.०, दीपिका बाठियाँ, सिरकाली चेन्नई-४०४.०, विनोद जैन, दिल्ली-४०४.०, बिन्दु चोरडिया, वैलूर-४०४.०, संगीता मेहता, गोरेगांव-४०२.०, पिस्ताबाई बोहरा, KGF-४०१.०, समता मेहता, मदनगंज-४०१.०, एस.पी. जैन सेठा, करौली-४०१.०, मंजुवेन, तिर्छी-४००.०, टीना मरलेचा, बैंगलोर-३९९.०, मृदुला कुम्भट, जोधपुर-३९७.०, संगीता दरडा, जोधपुर-३९६.५, सरलादेवी, चेन्नई-३९६.०, हेमंत छाजेड़, बालोतरा-३९५.०, स्वाति मोदी, जयपुर-३९५.०, पी. आर. लूणावत, जोधपुर-३९५.०, नयन कोठारी, किल्डाक चेन्नई-३९४.०, ज्योति शर्मा, गन्नौर-३९३.०, मंजू खाबिया, मूंडीया-३९३.०, ललिता भण्डारी, चेन्नई-३९१.०, सुवर्णा कांतिलाल जी जैन-३९०.०, प्रीति नागौरी, सतारा-३९०.०, कमला देवी विनायकिया, बोराली कर्णाटक-३९०.०, स्नेहलता जैन, फरीदकोट-३८९.०, सुनील धारीवाल, दिल्ली-३८९.०, कपूर जैन, बूंदी-३८६.५, ज्योति मेहता, बालोतरा-३८६.०, सरोज अमरचंद चौधरी, मुम्बई-३८५.०, शांतिलाल गुंदेचा, हैदराबाद-३८५.०, राधा डोसी, कानपुर-३८५.०, काजूदेवीरेड, पाली-३८३.०, उमा बुरड़, बालोतरा-३८३.०, सुशीला मांदेचा, इन्दौर-३८०.0, गौरी बागरेचा, बैंगलोर-३७९.०, रेखा दलाल, बैंगलोर-३७८.५, सपना छाजेड़, जलगाँव-३७८.०, संतोष बोहरा, बैंगलोर-३७८.०, सुन्दरकला माण्डोत, बैंगलोर-३७६.५, कस्तूर जैन, खेरलीगंज-३७५.०, हुकमचंद जैन, सवाईमाधोपुर-३७५.०, पोकर्णा राजेश्री विजयकुमार, पूणे-३७४.०, अनिता किरीट, सांगली-३७४.०, साधना पोरवाल, मंदसौर-३७४.०, सारिका कोठीफोड़ा, नीमचसिटी-३७३.०, चंचलबाई बागरेचा, वारावेश्वर नगर-३७१.०, ललिता ग. सुराणा, सोलापुर-३६९.०, कल्पना प्रवीण सुराणा, मुम्बई-३६८.०, राखी देशलहरा, कवर्धा-३६६.०, भाग्यश्री कांकरिया, धुले-३६६.०, अपेक्षा गोलिया, जोधपुर-३६५.०, शीतल दरडा, मैसूर-३६५.०, मधु बंसल, नारनोल ३६३.०, ममता सुराणा, बोलारम-३६२.०, सरिता कोठारी, बैंगालोर-३६२.०, सुमित्रा जैन, बैंगलोर-३६१.०, संगीता रविन्द्र सिंघवी, पूणे-३६०.०, कमला छाजेड़, बालोतरा-३५७.०, रेणु जैन, सवाईमाधोपुर-३५७.०, लक्ष्मी सुराणा, चेन्नई-३५५.०, अंजना गाँधी, मुम्बई-३५३.०, सरिता जैन, अलवर-३५०.०, सीमा गांधी, मलाड-३४९.५, एकता बोरा, बोलारम-३४९.०, मदन बोहरा, बैंगलोर-३४९.०, कांता डूंगरवाल, बैंगलोर-३४८.०, सुशीला गादिया, हैदराबाद-३३७.०, वर्षा ओस्तवाल, धुलीया-३३७.०, मधु भंसाली, जयनगर-३३६.०, रेणु भटेवरा, उज्जैन-३३२.५, निर्मला रांका, तोन्दीकारपेट-३३२.०, पवन कोटडिया, जोधपुर-३२८.०, राधा कवाड़, होस्पेट-३२४.०, पूजा डोसी, जयपुर-३२२.५, गोरव जैन चीपड, जयपुर-३१८.०, हेमलता नवनीत वसा, सांगली-३१३.०, इन्द्रा कुवांड, मानसरोवर जयपुर-३१२.५, कंचन जैन, जोधपुर-३१२.०, रेनुका-३११.०, संतोष परलेचा, शिमोगा-३०४.०, ज्योति गादिया, चेन्नई-३००.०, सपना सुराणा, कर्नाटक-३००.०, जयन्तीलाल लसोड, नीमच-२९९.०, सपना जैन, नीमच सिटी-२९९.०, मैना हादिओ, बैंगलोर-२९८.०, निर्मला जैन, जोधपुर-२९१.०, सपना गोदावत, बैंगलोर-२९०.०, प्राची बलदोटा, पुणे-२७६.०, आशा सतीश कोठारी, बम्बई-२७०.०, हेमा छाजेड़, बम्बई-२५५.०,. सपना जैन, आलनपुर-२२७.०, तृप्ति जैन, हिण्डोन सिटी-२२१.०, हेमा लोढ़ा, पारलाइस्ट-२०८.०, अजंता मुणोत, चेन्नई-२०४.०, डिम्पल पारलेचा, कल्याण-१९९.०, प्रियंका जैन-१८३.०, राकेश पीपाड़ा, भायन्दर-१६४.०, लता शाह, सांगली-१२९.०

ओजस्वी वक्ता, मधुर गायक, संघ-समर्पित वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री प्रकाशचन्द जी कांकरिया, जलगाँव (महा.)

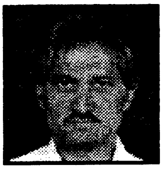

व्यवहार कुशल, ओजस्वी वक्ता, मधुर गायक, अध्ययनप्रिय, संघ-सेवा हेतु समर्पित, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमान् प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल (कांकरिया) का जन्म दि. ५ जनवरी १९५२ को राजस्थान की पावन भूमि भोपालगढ़ के धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री भँवरलाल जी के यहाँ पुत्र रत्न के रूप में हुआ।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा भोपालगढ़ के श्री जैन रत्न माध्यमिक विद्यालय में तथा उच्च शिक्षा चेन्नई में हुई। आपने बी.कॉम तक व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त किया। तमिल, तेलगू, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड़ आदि भाषाओं के आप जानकार हैं। बाल्यकाल से ही धार्मिक संस्कार आपको अपनी माताश्री श्रीमती उमरावकँवर जी से प्राप्त हुए। फलस्वरूप व्यावहारिक शिक्षा के साथ ही आपने प्रतिक्रमण, २५ बोल, ६७ बोल, ३३ बोल, समिति-गुप्ति का थोकड़ा आदि कण्ठस्थ कर लिये। आपने अन्तकृतदशा सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, दशवैकालिक सूत्र तथा कल्पसूत्र का अध्ययन किया एवं उसका वाचन व विवेचन भी कुशलतापूर्वक करते हैं।

आप प्रतिदिन नियमित पाँच सामायिक करते हैं। जमींकन्द का आपके त्याग है तथा अँगूठी से प्रत्याख्यान के नियम भी आप ले चुके हैं।

पर्युषण में प्रार्थना, प्रतिक्रमण, व्याख्यान, चौपाई आदि कार्यक्रमों के साथ ही आप विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को धार्मिक जीवन जीने की प्रेरणा करते हैं। गत तीस वर्षों से आप पर्वाधिराज पर्युषण में अपनी अमूल्य सेवाएँ दे रहे हैं।

आपने गोहाटी, पनवेल, फत्तेपुर, पाण्डरकवड़ा, वरोरा, अमरावती, अमलनेर, लातूर, राजणी, भण्डारा, एदलाबाद, सिल्लोड़, शिरपुर, चान्दूररेलवे, ठाणा, पहूर, मैलापुर, बजरिया आदि कई क्षेत्रों में पर्युषण सेवा के माध्यम से जन-जन तक महावीर वाणी का संदेश देकर लोगों को धार्मिक प्रवृत्तियों से जोड़ने का प्रयास किया है।

आपने जलगाँव में कानाजी-शिवजी ओसवाल जैन बोर्डिंग में गृहपति के रूप में तथा धार्मिक स्कूलों में निरीक्षक के रूप में सेवाएँ दी हैं आप कुचेरा

जैन बोर्डिंग में भी गृहपति रहे हैं।

आप साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. की सुशिष्या कोकिलकण्ठी महासती चन्द्रकला जी म.सा. के वीरभ्राता हैं। आपकी सुपुत्री सुश्री सीमा जी महासती जी के सान्निध्य में तथा कनिष्ठ सुपुत्र श्री ललित जी परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. के सान्निध्य में अध्ययनरत है।

रत्नवंश के प्रति आपकी निष्ठा सराहनीय है। धार्मिक शिविर तथा चातुर्मास-व्यवस्था में आपका उल्लेखनीय सहयोग रहता है।

स्वाध्याय-संघ परिवार आपकी सुदीर्घ आयु तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हुआ जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप स्वस्थ रहें तथा जिनवाणी की प्रभावना करते रहें। ***-श्रीमती मोहनकौर जैन, सचिव***

चेतावनी

श्री अनराज बोथरा

नर तूँ क्यों करता नादानी, तेरी दो दिन की जिन्दगानी।।टेर।।
खाता-पीता मौज मनाता, दीन-दुःखियों पर तू गुर्राता।
सुनता न करुणा कहानी, नर तूँ क्यों करता नादानी।।
झूठ-कपट, छल-बल तू करता, परभव से भी तू नहीं डरता।
समझदार होकर क्यों बनता है अज्ञानी, नर तूँ क्यों करता नादानी।।
राम-रावण भीम से योद्धा, छोड़ संसार गये ज्यों पौधा
हाथी-घोड़ा पलटन थी लासानी, नर तूँ क्यों करता नादानी।।
नरतन को कुछ काम में लाओ, धन दौलत से लाभ उठाओ।
स्थिर नहीं रहता ज्यों बरसात का पानी, नर तूँ क्यों करता नादानी।।
वीर प्रभु के गुण नित्य गाना, प्राणिमात्र को गले लगाना।
पाप और अन्याय से करते रहना ग्लानि, नर तूँ क्यों करता नादानी।।
'अनराज़' यह नरतन पाया, मूर्ख है जो वृथा गंवाया।
तन धन जीवन तीनों मिला नहीं आसानी, नर तूँ क्यों करता नादानी।।

-दीवानों की हवेली, घासमण्डी, जोधपुर (राज.)

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

सिरिकुम्मापुत्तचरियं:- ***अनुवादक***-डॉ. जिनेन्द्र जैन, ***प्रकाशक***-जैन अध्ययन एवं सिद्धान्त शोध संस्थान, श्री पिसनहारी मढिया, जबलपुर (म.प्र.), ***पृष्ठ*** १२+८८, ***मूल्य*** १०० रुपये, सन् २००४

प्राकृतभाषा में सम्भवतः **अनन्तहंस** विरचित 'सिरिकुम्मापुत्तचरियं' काव्य १९९गाथाओं में 'कुम्मापुत्त' के कथानक से गुम्फित है। इसमें भावों की शुद्धता का महत्त्व प्रतिपादित है। भावों की शुद्धता से ही वैराग्य एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है, इसे इस कथाकाव्य में सुन्दररीति से निरूपित किया गया है। डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन, रीडर, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ ने प्राकृत की गाथाओं का हिन्दी अनुवाद एवं शब्दार्थ देने के साथ प्रारम्भ में विस्तृत प्रस्तावना भी दी है, जो इस कथानक के परिचय एवं महत्त्व को उद्घाटित करती है।

Basic Jain Culture : Non-Possession- Padamchand Shastri, **Publisher**- Vir Sewa Mandir, 21, Daryaganj, New Delhi-110002, **Also Available From**- 12/644 Bajareng Nagar, Rewa-486001 (M.P.) **Pages**- 48, **Price**-Study, Edition 2005

This book was originally written in Hindi with title "मूल जैन संस्कृति : अपरिग्रह" by shri Padamchand Shastri. Dr. Nandlal Jain, an eminent Jaina Scholar has translated it into English. The book concentrates on the importance of non-possession (aparigraha). It describes many important aspects of aparigraha.

पुण्य बीज:- आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा., ***प्रकाशक***-श्री तारक गुरु जैन ग्रन्थालय, गुरु पुष्कर मार्ग, शास्त्री सर्कल, उदयपुर-३१३००१(राज.), ***पृष्ठ*** ६+७४, ***मूल्य*** ३० रुपये, सन् २००५

पुरुषार्थ से ही पुण्य का अर्जन होता है एवं बंधन से मुक्ति की प्राप्ति होती है। 'पुण्य-बीज' नामक उपन्यास में पुण्य के बीज रूप पुरुषार्थ का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है।

सम्पर्क (२००५):- ***प्रकाशक***-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर-२५०४०४(मेरठ)

अर्हत्प्रवचन के सम्पादक डॉ. अनुपम जैन, डी-१४, सुदामानगर, इन्दौर-४५२००९ ने इस पुस्तक में जैन विद्या के अध्येताओं, जैन पत्र-पत्रिकाओं, शोध-संस्थाओं एवं जैन प्रकाशकों/पुस्तक विक्रेताओं की उपयोगी सूची प्रकाशित की है।

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर का स्वास्थ्य कुछ अनुकूल, चेन्नई से विहार प्रारम्भ

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ दिनांक २१ फरवरी को पुन्नमल्ली से विहार कर २६ फरवरी को पल्लावरम् पधारे। आचार्यप्रवर के स्वास्थ्य में प्रतिकूलता के कारण पूर्व में आवड़ी एवं तदनन्तर पुन्नमल्ली कुछ दिनों तक विराजना रहा। आचार्यप्रवर दृढ़ मनोबली और आत्मशक्ति के धारी महापुरुष हैं। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी आपश्री ध्यान-मौन एवं जप-तप के साथ साधनारत रहते हैं। स्वयं के विहार की स्थिति नहीं होने पर संघ-समाज में सत्संग-सेवा और संत-समागम का लाभ मिले इस भावना से आचार्यप्रवर ने अपने आज्ञानुवर्ती संत-मुनिराजों को चेन्नई महानगर में विचरण-विहार की क्रमबद्धता बनाए रखकर धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करने का आदेश दिया, जिसकी पालना में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ पुलियारपेट, अयनावरम, आवड़ी, करियमचावड़ी, कुन्नुमूर, पुनमल्ली, अमीजीकरे, पुरुषवाक्कम, भारतीनगर, साहूकारपेट, चिन्तादरी पेट आदि क्षेत्रों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए जन-जन को धर्म के सम्मुख लाने का प्रयास कर रहे हैं। आचार्यप्रवर सहित संत-मुनिराजों के सतत पुरुषार्थ से जिनशासन की निरन्तर प्रभावना हो रही है।

आचार्यप्रवर के विराजने से आवड़ी-पुन्नमल्ली क्षेत्र में दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा और व्रत-प्रत्याख्यानों की श्रद्धा समर्पित करने में न केवल आवड़ी-पुन्नमल्ली के श्रद्धालुओं ने बल्कि चेन्नई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के आबाल-वृद्ध, श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धा-भक्ति और सेवाभावना के साथ श्रावक-धर्म का दायित्व बखूबी निभाया। कर्त्तव्यपथ पर सकल जैन समाज के श्रद्धालु भक्त अग्रसर होने के लिए तत्पर हैं।

चेन्नई क्षेत्र के विभिन्न उपनगरों एवं चेन्नई महानगर की ओर से फाल्गुनी चातुर्मास, महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया और वि.सं. २०६३ के चातुर्मास की निरन्तर पुरजोर विनतियाँ चल रही हैं। बैंगलोर, मैसूर, शिमोगा, रायचूर, हैदराबाद-सिकन्द्राबाद श्रीसंघ समय-समय पर आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में उपस्थित होकर चातुर्मास की विनति रख रहे हैं। हैदराबाद-सिकन्द्राबाद जैसे दूरस्थ श्रीसंघ को आचार्यप्रवर ने यह फरमाते हुए खुला कर दिया कि स्वास्थ्य संबंधी कारणों से उतना दूर पहुँच पाना संभव नहीं लगता, अतः आप मेरी ओर से खुले हैं।

आचार्यप्रवर के स्वास्थ्य की प्रतिकूलता देखकर चेन्नई महानगर के ही नहीं, रत्नसंघ एवं सकल जैन समाज के श्रद्धालु चिन्तित हैं। आवड़ी विराजते समय वहाँ के सुज्ञ सेवाभावी श्रावकों एवं प्रमुख पदाधिकारियों ने आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में पुनः पुनः प्रार्थना रखी कि भगवन्! आपश्री का स्वास्थ्य समीचीन नहीं है, अतः जब तक विहार की स्थिति नहीं बने आपश्री यही विराजें। आवड़ी क्षेत्र के सकल जैन समाज ने दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा के लाभ के साथ व्रत-नियमों के प्रति उत्साह प्रदर्शित कर भक्ति-भावना का आदर्श उपस्थित किया। आवड़ी रेल सेवा से जुड़ा उपनगर है अतः चेन्नई महानगर के विभिन्न क्षेत्रों के श्रद्धालुओं का आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में आवागमन निरन्तर बना रहा।

गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी सुश्रावक **श्री सरदारसिंह जी कर्णावट** ने अपनी धर्मपरायणा-धर्मपत्नी के देहावसान के अनन्तर गुरुचरण सेवा में सपरिवार उपस्थित हो मंगल-पाठ श्रवण किया। **संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघ कार्याध्यक्ष श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत** आदि संघ के प्रमुख पदाधिकारियों ने आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में उपस्थित हो औषधोपचार एवं स्वास्थ्य-समाधि की जानकारी की। आवड़ी श्रीसंघ ने आतिथ्य-सेवा का अपूर्व लाभ लिया। आवड़ी की आत्मीयतापूर्ण आतिथ्य-सेवा की आगत श्रीसंघों और श्रद्धालुओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। पुन्नमल्ली क्षेत्र की भक्ति-भावना और आतिथ्य-सेवा अनुकरणीय रही। आचार्यप्रवर शीलव्रत के खंद की प्रभावी प्रेरणा करते हैं। आचार्यप्रवर की प्रेरणा से सैकड़ों दम्पतियों ने शीलव्रत के खंद किए। कुड़ी मूल के **श्रावकरत्न श्री नेमीचन्द जी कर्णावट** ने आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत का खंद किया, चातुर्मास में ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन के साथ सेवा का अपूर्व लाभ लिया। दृढ़धर्मी श्रावकरत्न को अंत समय संथारा आया। गुरुचरण सेवी श्रावकरत्न ने

मृत्यु को महोत्सव बनाया। आचार्यप्रवर की चरण सन्निधि से व्यक्ति-व्यक्ति के जीवन में परिवर्तन का अनुमान कर्नावट साहब के समाधिमरण से किया जा सकता है।

आचार्यप्रवर स्वास्थ्य की समीक्षा एवं विहार का समुचित आकलन कर फाल्गुनी चौमासी-अक्षय तृतीया विषयक जो भी भाव फरमायेंगे हम यथायोग्य सूचना करने का प्रयास करेंगे।

सम्पर्क सूत्र- १. श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल, 4/29, Shedy Road, Pallawaram, Chennai-600043(T.N.) फोन नं. ०४४-२२६४१५६९, २२६४१५५४(का.) फैक्स-२२६४१५६९, मो.-९४४४३-८८५६५, ९८४०१-१२३४६

२. श्री महेन्द्र जी कांकरिया, Mahendra Jewellers, 1000/1001, T.H. Road, Kalatipe, Chennai-600079(T.N.) फोन नं. ०४४-२५९९१३६३, २५९९४४६६, २५९९३६७१ मो.-९४४४०-५१३१३

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गम्भीर, प्रबल पुरुषार्थी, परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ खण्डप से सैवाली, करमावास आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए ११ फरवरी को समदड़ी पधारे, जहाँ सिवाना-जालोर की भाँति धर्म-ध्यान और स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा के प्रति श्रीसंघ का अच्छा उत्साह है। बालोतरा, पचपदरा, कल्याणपुर, कनाना के अलावा जोधपुर-जयपुर-पीपाड़ के श्रीसंघों व श्रद्धालुओं का उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा की भावना से आवागमन बराबर चल रहा है। गजेन्द्रनिधि के ट्रस्टी अनन्य गुरुभक्त श्रद्धाशील श्रावकरत्न श्री सरदारसिंह जी कर्नावट अपने पारिवारिक-परिजनों व इष्ट मित्रों के साथ उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण की भावना से उपस्थित हुए। कर्नावट साहब की धर्मपरायणा धर्मपत्नी का २४ जनवरी २००६ को स्वर्गगमन हो गया था, अतः कर्नावट साहब ने और उनके परिजनों ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से व्रत-नियम अंगीकार कर मांगलिक श्रवण की। इसके पूर्व तपसाधिका स्व. श्रीमती इचरजकंवर जी लुणावत के परिजन भी उपाध्यायप्रवर के दर्शन-वन्दन एवं मांगलिक श्रवण की भावना से उपस्थित हुए। समदड़ी में प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्न-चर्चा, प्रतिक्रमण जैसे दैनिक कार्यक्रम के साथ ज्ञान-ध्यान सीखने और आगत गुरुभ्राताओं की सेवा करने का भाव प्रेरणादायी है। संघाध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, कार्याध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, शासनसेवा समिति के सदस्य श्री हस्तीमल जी गोलेछा उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में उपस्थित हुए। सिवाना संघ के श्रद्धानिष्ठ

श्रावकरत्न श्री रिखबचन्द जी जिन्दानी सहित कुछ श्रद्धालु चातुर्मास की विनति हेतु पुनः पधारे। पीपाड़ संघ के भक्तों ने दो बार समदड़ी पहुँच कर उपाध्यायप्रवर की सेवा में चातुर्मास की विनति रखी। बालोतरा के श्री धर्मेश जी चौपड़ा, श्री मीठालाल जी मधुर, श्री माणक जी चौपड़ा समय-समय पर सेवा का लाभ ले रहे हैं। समदड़ी श्रीसंघ ने फाल्गुनी चौमासी की विनति उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में रखी है। समदड़ी से जेठन्तरी होते हुए दिनांक २८ फरवरी को उपाध्यायप्रवर का कनाना पदार्पण हुआ है।

सम्पर्क सूत्र- १. श्री मीठालाल जी मधुर, बालोतरा, फोन नं. ९४१४१-०८८४९

२. श्री धर्मेन्द्र जी चौपड़ा, बालोतरा, फोन नं. ९४१४१-०८१९१

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ४ सामायिक-स्वाध्याय भवन, साहुकार पेट विराज रहे थे तो वहाँ का दृश्य चातुर्मास सदृश लग रहा था। प्रवचन-श्रवण, दया-संवर और उपवास-पौषध की आराधना से क्षेत्र में उल्लास रहा। चिन्तादरीपेट में भी भक्ति-भावना का ऐसा ही नजारा देखने में आ रहा है।

महासती मण्डलों के विहार से धर्म-प्रभावना

卐 साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा ५ घोड़ों का चौक स्थानक, जोधपुर में सुख-शांति पूर्वक विराजमान हैं। साध्वीप्रमुखा के विराजने से शहर के मुख्य केन्द्र में प्रवचनादि कार्यक्रम सुव्यवस्थित चल रहे हैं। पर्व तिथियों पर दया-संवर की साधना में श्रावकों के अलावा श्राविका वर्ग में भी साध्वीप्रमुखा के विराजने से उत्साह बना है।

卐 सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का ब्यावर से २३ फरवरी को पुरानी ब्यावर विहार हुआ। पुरानी ब्यावर तीन-चार दिन विराजकर नागेलाव होते हुए पींसागन की ओर बढ़ें, ऐसी संभावना है।

卐 शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ पीपाड़ शहर में विराजमान हैं।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का मध्यप्रदेश के छन्नेरा, खिरकिया, हरदा, नेमावर, संदुलपुर, रेहती, औबेदुल्लागंज आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग संदेश का प्रचार करते मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में १२ फरवरी को पदार्पण हुआ। व्याख्यात्री महासतीजी की प्रेरणा से श्री मनोहरलाल जी कमलाबाई

विश्नोई-कानपुरा, रामसिंह जी भंवरीबाई राजपूत-खेरवाड़ा, नर्मदाप्रसाद जी मनराबाई-राला, नन्नुभाई-सोनाबाई, हरिसिंह-गंगाबाई और चन्द्रकान्त भाई-चन्द्रावती-भोपाल ने आजीवन शीलव्रत का खंद किया। महासती मण्डल के फाल्गुनी चातुर्मास तक भोपाल विराजने की संभावना है। जबलपुर सहित मध्यप्रदेश के अन्यान्य ग्राम-नगर महासती मण्डल के चातुर्मासार्थ प्रयास कर रहे हैं।

卐 तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ का विहार मदनगंज से अजमेर की ओर चल रहा है। महासती मण्डल साध्वीप्रमुखा की सेवा में जोधपुर पधारने की दृष्टि से विहार कर रहा है।

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ वेल्लूर विराजमान हैं। विदुषी महासती जी स्लिप डिस्क के कारण से वेल्लूर से विहार करने की स्थिति में नहीं हैं। वेल्लूर चातुर्मास पश्चात् सत्वाचारी, कृष्णनगर, काटपाड़ी जैसे समीपवर्ती क्षेत्र स्पर्श कर वेल्लूर में स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। वेल्लूर संघ की सेवा-भक्ति प्रशंसनीय है।

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ का विहार भरतपुर से आगरा की ओर चल रहा है। भरतपुर शहर चातुर्मास के पश्चात् पल्लीवाल क्षेत्र के करौली-हिण्डौन क्षेत्र पावन कर महासती-मण्डल आचार्यप्रवर के आदेशानुसार उत्तरप्रदेश के औद्योगिक शहर कानपुर की ओर अग्र विहार की भावना से विहार कर रहे हैं।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ११ ने पीपाड़शहर विराजित गुरुणी महाराज से मांगलिक श्रवण कर १० फरवरी को विहार किया। कोसाणा, मादलिया, रणसीगाँव क्षेत्रों को स्पर्श करते हुए व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ निम्बोल-जैतारण-निमाज-गिरी-नानणा को पावन करते हुए २५ फरवरी को ब्यावर पधारे, वहीं महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ५ रणसीगाँव से बोरून्दा कुरडायाँ, जसनगर, केकीन होते हुए गोविन्दगढ़ पधारे हैं। ब्यावर से व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ तथा गोविन्दगढ़ से महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा ५ थांवला-पीह पधार गये हैं जिनके अजमेर पधारने की संभावना है। अजमेर पश्चात् सवाईमाधोपुर-कोटा की ओर अग्र विहार संभावित है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का स्वास्थ्य संबंधी कारणों से पाड़ी चातुर्मास हुआ। चातुर्मास पश्चात् भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में पुन्नमल्ली-आवड़ी क्षेत्रों में धीरे-धीरे विहार का प्रयास रहा। महासती मण्डल अभी आवड़ी विराजित है। स्वास्थ्य सुधार पश्चात् वेल्लूर की ओर अग्र विहार की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ चित्रदुर्गा पधारने के पश्चात् होसपेट-बल्लारी क्षेत्र में धर्म प्रभावना कर रहे हैं।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ हरियाणा के पश्चात् राजस्थान के थली क्षेत्र में विचरण कर रहे हैं। रतनगढ़-सुजानगढ़-लाडनूँ आदि क्षेत्रों से १५ फरवरी को महासती मण्डल का बीदासर पधारना हुआ, जहाँ से अब बीकानेर की ओर विहार सुखशांति से चल रहा है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ गजेन्द्रगढ़ विराजमान हैं। विहार की स्थिति नहीं होने से आसपास के क्षेत्रों में विचरण चल रहा है।

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा ३ नासिक विराजमान हैं। सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. के नेत्र का ऑपरेशन ७ फरवरी को सफलतापूर्वक हो गया है।

उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर में इस वर्ष सन् २००६ में कक्षा ११, बी.ए. प्रथम वर्ष एवं एम.ए. पूर्वार्द्ध (संस्कृत/जैन दर्शन) में प्रवेशार्थी छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा। प्रवेशार्थी छात्रों का पूर्व कक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। प्रवेश से पूर्व विद्यार्थियों का सप्त दिवसीय संस्कार-निर्माण शिविर आयोजित किया जाएगा।

संस्थान में रहकर अध्ययन करने वाले छात्रों को भोजन-आवास-शिक्षण आदि की व्यवस्था निःशुल्क है। एम.ए. करने वाले विद्यार्थियों को ३००/- मासिक व पी-एच्.डी. करने वाले छात्रों को ५००/- मासिक छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है। पी-एच्.डी. के पश्चात् संघ में सेवा देने वाले के लिए व्याख्याता ग्रेड दिए जाने का भी प्रावधान है।

इच्छुक छात्र निम्नांकित पते पर ३० अप्रेल २००५ तक आवेदन पत्र प्रस्तुत करें, जिससे उन्हें अनुमति पत्र एवं शिविर तिथि की सूचना समय पर भेजी जा सकें।

(पूर्ण विवरण के लिए द्रष्टव्य जिनवाणी-फरवरी २००६) *सम्पर्क सूत्र-श्रीकान्त जैन, अधिष्ठाता-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर (राज.), दूरभाष-०१४१-२७१०९४६*

जैन पत्रकार सम्मेलन १८-१९ मार्च को

जैन एकता, प्रभाव एवं गरिमा पर अखिल भारतीय जैन पत्रकार सम्मेलन शनिवार-रविवार १८ और १९ मार्च २००६ को नई दिल्ली में सम्पन्न होगा। जैनों की प्रतिनिधि संस्था जैन महासभा दिल्ली के महासचिव प्रो. रतन जैन ने कहा कि समाज के समक्ष ज्वलंत मुद्दों पर देशभर से पधारे बुद्धिजीवी पत्रकार गंभीर विचार चर्चा कर, एक सकारात्मक कार्यक्रम समाज के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। इस सम्मेलन में जैन पत्रकारों के साथ समाज के विद्वत् जगत के प्रतिनिधि और विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत समाज के नेतागण भी भाग लेंगे। इस सम्मेलन में जैन सांसदों और जैन विधायकों को भी आमंत्रित किया जा रहा है। सम्मेलन में पधारने वाले पत्रकारों का आतिथ्य और रहने की व्यवस्था जैन महासभा कर रही है।

श्री प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति-साहित्य पुरस्कार हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, बीकानेर द्वारा स्व. प्रदीपकुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार वर्ष २००६ हेतु जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला एवं संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य, कथा, निबन्ध, संस्मरण एवं जीवनी आदि के संबंध में लिखित/मौलिक ग्रन्थ की ४ प्रतियाँ ३१.३.२००६ तक संघ के कार्यालय समता भवन, बीकानेर में आमन्त्रित हैं। आवेदन-पत्र कार्यालय के पते से मंगवाया जा सकता है। कृति हिन्दी भाषा में और १ जनवरी २००६ से पूर्व प्रकाशित नहीं होनी चाहिए।

-मदनलाल कटारिया, महामंत्री

पशुओं के प्रति भी करुणाभाव का व्यवहार हो

भगवान् महावीर अहिंसा प्रचार संघ, चेन्नई के तत्त्वावधान में २८ जनवरी को पशु कल्याण पखवाड़ा के अन्तर्गत अहिंसा रैली निकाली गई, जिसमें सैकड़ों स्कूली बच्चों ने भाग लिया और पशुओं पर अत्याचार नहीं करने का संदेश प्रचारित किया। बादलचन्द सायरचन्द चोरडिया जैन हायर सैकेण्डरी स्कूल से प्रारम्भ रैली साहुकारपेट से चेन्नई सेन्ट्रल होते हुए पुनः स्कूल पहुँच कर सभा में परिवर्तित हो गई। सभा की अध्यक्षता श्री गुलाबचन्द जी कोटड़िया ने की। संस्था के अध्यक्ष श्री केशरीचन्द जी

सेठिया ने प्रेम, सौहार्द व करुणा की भावना जागृत करने का आह्वान किया। छात्रों ने चमड़े से बनी वस्तुओं का प्रयोग नहीं करने का संकल्प लिया। संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी रांका एवं पूर्व अध्यक्ष श्री पी.एम. चोरडिया ने भी विचार व्यक्त किए।

-संतोषकुमार पुगलिया, मंत्री

बधाई/चुनाव

जलगाँव- जलगाँव के संघपति, समाजसेवी तथा महावीर सहकारी बैंक के संस्थापक अध्यक्ष दलुभाऊ जैन का सत्कार समारोह जैन हिल्स में १५ जनवरी २००६ को सेबी के भूतपूर्व चेयरमेन श्री डी.आर.मेहता और हजारों प्रेमी जनों की उपस्थिति में हुआ। भूतपूर्व न्यायमूर्ति श्री जसराज जी चौपड़ा ने दलुभाऊ जैन का गौरव करते हुए कहा कि आदमी खुद के लिए तो जीता है, किन्तु दलुभाऊ जैसे बहुत थोड़े व्यक्ति दूसरों के लिए अपना जीवन व्यतीत करते हैं। दूसरों के लिए जीनेवाला आदमी समाज की मूल्यवान संपत्ति होती है। दलुभाऊ ने विशेष काम यह किया कि टूटे हुए लोगों को पैरों पर खड़ा करने का प्रयास किया। श्री डी.आर.मेहता ने संबोधित करते हुए कहा कि सेवा, प्रेम और आदरभाव रखनेवाले दलुभाऊ सेवा की मूर्ति हैं। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जोधपुर- श्री ओसवाल सिंह सभा, जोधपुर के त्रैवार्षिक चुनावों में समाजसेवी श्री प्रसन्नचन्द मेहता-अध्यक्ष निर्वाचित हुए। श्री कानराज जी मोहनोत-उपाध्यक्ष, श्री सुरेन्द्रराज गेलड़ा-महामंत्री, श्री राजेश जी बागरेचा-संयुक्त महामंत्री एवं श्री शुभराज जी लुंकड़-कोषाध्यक्ष चुने गये। शिक्षण समिति के सचिव के रूप में श्री प्रदीप जी गांग, उच्च शिक्षा समिति के सचिव पद हेतु श्री सांवतराज जी भंसाली, ओसवाल छात्रावास सचिव श्री शैलेन्द्र जी भण्डारी, न्याति नोहरा संचिव- श्री गौतम जी सांड, मंडोर दादावाड़ी- श्री जसवन्तराज जी पारख, कैलाश समिति-श्री प्रेमचन्द जी मेहता एवं धर्मपुरा समिति के संयोजक श्री विजयमल जी मेहता निर्वाचित हुए। चुनाव अधिकारी श्री नरपतराज जी लोढ़ा की देखरेख में चुनाव सानन्द सम्पन्न हुए।

संक्षिप्त समाचार

देवलाली- नासिक रोड़ से तीन किलोमीटर दूर देवलाली की भूमि पर ''श्री लोगस्स सूत्र आराधना केन्द्र'' की स्थापना की जा चुकी है। यहाँ साधना एवं आराधना का क्रम निरन्तर चल रहा है। इस केन्द्र का विधिवत् उद्घाटन १२ मार्च २००६ को करने का निश्चय किया गया है। इस योजना की सूत्रधार साध्वी डॉ. दिव्यप्रभा जी हैं।

जयपुर-राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन योजना के अन्तर्गत दिगम्बर जैन मन्दिर ठोलियान, घी वालों का रास्ता, जयपुर में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें १८ व्यक्तियों ने पाण्डुलिपि संरक्षण विषयक प्रशिक्षण प्राप्त किया।

- डॉ. कमलचन्द सोगाणी

नागपुर- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के चुनावों में समाजसेवी श्री राजेन्द्रप्रसाद जी वैद अध्यक्ष एवं श्री दिलीप जी शाह महामंत्री चुने गये। संघ के उपाध्यक्ष, मंत्री और ट्रस्ट मण्डल के भी सर्व-सम्मति से चुनाव हुए।

पीह- श्रमणसंघीय वरिष्ठ प्रवर्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. 'रजत' उपप्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म.सा., उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' एवं विदुषी महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा., महासती श्री आदर्शज्योति जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु अभयकुमार जी चोरडिया की भागवती दीक्षा १० फरवरी को सानन्द सम्पन्न हुई। नवदीक्षित संत का नाम श्री विवेकमुनि जी रखा गया। *-नथमल दुग्गड़, मंत्री*

भकरी- उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी म.सा. के सुशिष्य नवदीक्षित श्री विवेकमुनि जी म.सा. की बड़ी दीक्षा १७ फरवरी को भकरी में उल्लासमय वातावरण में सम्पन्न हुई। श्री पारसमल जी मूथा एवं श्री प्रेमचन्द जी सुराणा ने शीलव्रत अंगीकार किया।

-गणपतराज सुराणा, मंत्री

श्रद्धाञ्जलि

जलगाँव- धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती बदामबबाई जी धर्मपत्नी सुश्रावक

श्री भँवरलाल जी चोरडिया का २६.१.०६ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थी। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में अग्रणी श्राविकारत्न के जीवन पर गुरु हस्ती- गुंरु हीरा-गुरु मान का विशेष प्रभाव रहा। सरलता-सादगी के साथ विनम्रता उनका विशिष्ट गुण था। वे अपने पीछे संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

निफाड़ (महा.)- अनन्य गुरुभक्त संघसेवी सुश्राविका श्रीमती उगमबाई जी धर्मपत्नी

सुश्रावक श्री हरकचन्द जी कर्णावट का ७ जनवरी २००६ को ८४ वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। वे सरलस्वभावी, मितभाषी और सेवाभावी श्राविका थीं। दीन-दुःखियों के प्रति करुणार्द्र श्राविकारत्न वात्सल्य सेवा का सुयोग पाकर हर्षित रहती थी। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न व्रत-प्रत्याख्यानों में सदा सक्रिय

रही। वे नित्यप्रति कम-से-कम दो सामायिक करती थी।

तिरुवन्नामलै- धर्मनिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री शांतिलाल जी पटवा (जैतारण) का

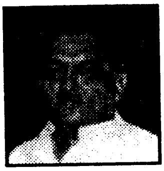

६८ वर्ष की आयु में २९.१२.०५ को स्वर्गगमन हो गया। नित्यप्रति सामायिक करने वाले श्रावकरत्न के रात्रि भोजन और जमीकन्द का त्याग था। वे तिरुवन्नामलै संघ के अध्यक्ष व श्री अखिल भारतीय सुधर्म जैन संस्कृति रक्षक संघ, तमिलनाडु शाखा के उपाध्यक्ष थे। शिक्षाप्रेमी श्रावकरत्न जरूरतमन्द बच्चों के शिक्षण में सहयोग करते थे। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।

फागणा (धुलिया)- दृढधर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती प्रमिलाबाई धर्मपत्नी श्री पुखराज जी बाफना का २.२.०६ को संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। ५३ वर्षीय श्राविका प्रतिदिन सामायिक-प्रतिक्रमण करती थीं और धर्म-साधना में विशेष भावना रखती थीं।

जयपुर- अनन्य गुरुभक्त श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी सुश्रावक श्री देवेन्द्रकुमार लुणावत सुपुत्र

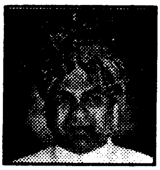

स्व. तप-साधिका श्रीमती इचरजबाई जी गुमानमल जी लुणावत का २८ जनवरी को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति अटूट/निष्ठावान श्रावंकरत्न का जीवन संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा में रचा-पचा हुआ था। तपसाधिका श्रीमती इचरजकंवर जी लुणावत ने अध्यात्मयोगी युगमनीषी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुखारविन्द से १६५ दिवसीय तप साधना की, उस श्राविकारत्न के संस्कारों की सौरभ लुणावत परिवार में आज भी देखी जा सकती है। परिवार का हर सदस्य सामायिक, स्वाध्याय और सेवा के प्रति समर्पित है। सुश्रावक श्री देवेन्द्रकुमार जी लुणावत अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।

भोपाल- दृढ़धर्मी सुश्राविका श्रीमती झणकार बाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री रोशनलाल जी खाब्या का ९५ वर्ष की आयु में १२.२.०६ को स्वर्गगमन हो गया।

चेन्नई- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती भँवरीदेवी धर्मपत्नी श्री अखेचन्द जी भिड़कचा (मंत्री श्री एस.एस. जैन संघ, साहुकारपेट) का ६.२.०६ को स्वर्गवास हो गया। सरलस्वभावी श्राविकारत्न की सहिष्णुता प्रेरणादायी थी। कैंसर जैसे असाध्य रोग में भी सहनशीलता के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उनकी सजगता अनुकरणीय थी। पिछले १५ वर्षों से नवकारसी के प्रत्याख्यान के साथ विगत २५ वर्षों से एक समय भोजन करने वाली श्राविका के जमीकन्द का त्याग था। वे श्रावण-भाद्रपद में एकान्तर

तप करती थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में रहने वाली श्राविकारत्न ने शीलव्रत का खंद भी कर रखा था।

जोधपुर- धर्मपरायण सुश्रावक श्री प्रकाशमल जी लुणावत मेहता (सुपुत्र स्व. श्री बहादुरमल जी मेहता) का ८० वर्ष की आयु में १.२.०६ को स्वर्गगमन हो गया। वे हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लि. नाशिक से सेवानिवृत्त हुए थे।

जयपुर- रत्नसंघीय सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती जतनदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री गप्पूलाल जी हीरावत का ६.२.०६ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति समर्पित श्राविकारत्न का जीवन सरलता, सादगी, कर्त्तव्यनिष्ठा और वात्सल्य से ओतप्रोत था। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

सोनाला (जामनेर)- दृढ़धर्मी समाजसेवी सुश्रावक श्री भीकमचन्द जी कालूराम जी पगारिया का ९.१.०६ को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ के समर्पित श्रावक थे। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के जलगाँव चातुर्मास में श्रावकरत्न ने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सेवा-भक्ति का लाभ लिया था।

जोधपुर- सुश्रावक श्री दिवानरूपचन्द जी भण्डारी का २० फरवरी २००६ को देहावसान हो गया। आप संघ के श्रद्धानिष्ठ सुश्रावक थे।

ब्यावर- धर्मानुरागी सुश्रावक श्री लालचन्द जी बोहरा का ६६ वर्ष की आयु में

२५.१.२००६ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे सरल स्वभावी, उदारमना, संघ-सेवी श्रावक थे। सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण उनका नित्यक्रम था। वे ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में तत्पर रहते थे। त्याग-तप के प्रति दृढ़ता के कारण श्रावकरत्न ने अपने परिजनों को नश्वर देह त्याग पश्चात् सामाजिक रुढ़ियों का आयोजन नहीं करने को कहकर अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया। वे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर- रत्नसंघ के समर्पित श्रावकरत्न श्री कंवलमल जी लोढ़ा का ८५ वर्ष की आयु

में २३ फरवरी को स्वर्गवास हो गया। वे जोधपुर मूल के सुश्रावक स्व. श्री किशोरमल जी लोढ़ा के पुत्र थे। कर्मठ, स्पष्ट वक्ता, स्वाभिमानी और सिद्धान्तप्रिय श्रावकरत्न ने व्यापार-व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने के साथ परोपकारी संस्थाओं को सहयोग करने

की सदा भावना रखी। मृत्यु पश्चात् शरीर का उपयोग हो इस भावना से सुश्रावक ने अपने परिजनों से मेडिकल कॉलेज में देहदान की इच्छा व्यक्त की थी, जिसका परिजनों ने पालन किया है।

उज्जैन- धर्मनिष्ठ सरल स्वभावी श्राविकारत्न श्रीमती सज्जनबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री मानमल जी मूथा का ९७ वर्ष की आयु में ५.२.०६ को स्वर्गवास हो गया। श्राविकारत्न के सुपुत्र श्री विमलचन्द जी प्रकाशचन्द जी मूथा प्रसिद्ध उद्योगपति हैं और समाज-सेवा में सक्रिय हैं। *-रामचन्द्र श्रीमाल*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म 2 नियम 8 देखिए)

१. प्रकाशन स्थान	:	जयपुर
२. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
३. मुद्रक का नाम	:	प्रेमचन्द जैन
४. प्रकाशक का नाम	:	प्रेमचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. १८२ के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-३०२००३ (राज.)
५. सम्पादक का नाम	:	डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	३ के २४-२५, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-३४२००५(राज.)
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है	:	सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल दुकान नं. १८२ के ऊपर, बापू बाजार जयपुर-३०२००३ (राज.)

मैं प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च २००६ **हस्ताक्षर-प्रेमचन्द जैन**

प्रकाशक

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०२९९ श्री विजयमल जी सुराणा, नागौर (राज.)
१०३०० Shri K. Shantilal Vijay Kumar Ji Patwa, Truvannamalai (T.N.)
१०३०१ श्री अंकित कुमार जी आनन्दराज जी जैन, जयपुर (राज.)
१०३०३ Shri Kuntal Devi Ji Patni, Jaipur (Raj.)
१०३०४ Shri M.S. Surana Ji, Jaykaypur, Rayagada (Orissa)
१०३०५ श्री संजय जी सागरमल जी कावड़िया, शेन्दूर्णी, जलगाँव (महा.)
१०३०६ श्रीमती सुनन्दा मोहनलाल जी खींचा, जामनेर-जलगाँव (महा.)
१०३०७ डॉ. कान्तिलाल जी ओस्तवाल, जामनेर, जलगाँव (महा.)
१०३०८ श्री सुनील जी आनन्द जी जैन, भुसावल, जलगाँव (महा.)
१०३०९ Shri Shantila B. Jain Ji, Bilimora (Gujrat)
१०३१० Shri Anil S. Bora Ji, Bilimora (Gujrat)
१०३११ Shri Sunil S. Bora, Bilimora (Gujrat)
१०३१२ Shri Rajendra Kumar Ji Suganlal Ji Bagmar, Fattepur (M.H.)
१०३१३ Shri Inderchand Ji Dhiraj Kumar Ji Lodha, Chandrapur(M.H.)
१०३१४ Shri S. Padam Kumar Ji Lodha, Chandrapur (M.H.)
१०३१५ Shri Mahaveer Chand Ji Chopra, Chitradurga (K.T.)
१०३१६ Shri Babulal Ji Talesara Jain Market, Chitradurga (K.T.)
१०३१७ श्री प्रकाशचन्द जी जैन, विज्ञाननगर, कोटा (राज.)
१०३१८ श्री भागचन्द जी अनिल कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
१०३१९ श्री सागरमल जी मनोज कुमार जी जुनीवाल, जयपुर (राज.)
१०३२० श्री माणक जी पारख, जयपुर (राज.)
१०३२१ श्री संतोष कुमार जी बम्ब, जयपुर (राज.)
१०३२२ श्री महेशचन्द जी जैन, अलवर (राज.)

श्री अमर पी. मुणोत, मुम्बई के सौजन्य से जिनवाणी पत्रिका के आजीवन सदस्य

१०३०२ Shri Rajesh Ji Lodha, Hinganghat (M.H.)

जिनवाणी हेतु साभार

११०००/-श्री अनिल कुमार जी जितेन्द्र कुमार जी लूणावत, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री देवेन्द्रकुमार जी लूणावत सुपुत्र स्व. श्री गुमानमल जी, श्रीमती इचरजबाई जी लूणावत की पुण्यस्मृति में भेंट।

११०००/-श्री सोहनलाल जी महावीरचन्द जी, जलगाँव, मैसर्स अर्पित एग्रो इण्डस्ट्रीज, जलगाँव के एक्सपोर्ट हाऊस बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१५००/- श्रीमती प्रतिभा नरेन्द्र जी मेहता, कोलकाता, सुपुत्र चि. अनुज संग मंजरी के २३.११.०५ को विवाह के उपलक्ष्य में।

११००/- श्री अनिल कुमार जी लूणावत, जयपुर, महासती श्री रतनकुंवर जी म.सा. के दर्शनलाभ लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री केवलचन्द जी कांकरिया, कोलकाता, अपनी सुपौत्री सौ. कां. रेनू सुपुत्री श्री गौतमचन्द जी कांकरिया का शुभविवाह दि. २ फरवरी २००६ को चि.विक्रम जी खींवसरा सुपुत्र श्री धनराज जी खींवसरा के संग सम्पन्न होने की खुशी में।

११००/- श्री डूंगरमल जी भुरट, जलगांव, श्री नरेश जी भूरट के द्वारा सी.ए. फाइनल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

११००/- श्री प्रकाशचन्द जी पंकज कुमार जी जैन, जलगांव, श्रीमती गुलाबबाई जी जैन धर्मपत्नी स्व. श्री फूलचन्द जी जैन, श्यामपुरा वालों के स्वर्ण सीढी आरोहण समारोह एवं श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जलगांव (प्राचार्य विद्यापीठ) के पौत्र किंशुक (सुपुत्र श्री पंकज जी जैन) के नामकरण महोत्सव के उपलक्ष्य में।

१०००/- श्री गुप्तदान, जयपुर की ओर से सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री नरेन्द्र जी मेहता, कोलकाता, अपनी सुपौत्री खुशी (सुपुत्री अमित-मन्नु मेहता) के १.२.२००६ को जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में।

५०१/- श्री महेन्द्रमल जी, सुरेन्द्रमल जी एवं दिनेश जी गांग, जोधपुर, स्व. श्री मनमोहनमल जी गांग की प्रथम पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

५०१/- श्री बंशीलाल जी इन्दरचन्द जी साहेबचन्द जी कर्णावट (खेडला वाले), वणी, स्व. माताश्री श्रीमती उगमबाई जी हरकचन्द जी कर्णावट की पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा (जोधपुर वाले), जयपुर, पूज्य पिताजी श्री सिरेहमल जी चौपड़ा की पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्री नेमीचन्द जी, नीलमचन्द जी, प्रकाशचन्द जी चोरडिया-जलगाँव, अपनी माताश्री श्रीमती बदामबाई जी चोरडिया का २६ जनवरी २००६ को स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

५००/- श्री धर्मचन्द जी खारीवाल, तिरूवल्लूर-चेन्नई, श्री शांतिलाल जी पटवा (जैतारण वाले) का स्वर्गवास दि. २९.१२.२००५ को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्री राजमल जी गौतमचन्द जी ओस्तवाल, बैंगलोर, श्री गौतमचन्द जी ओस्तवाल की सुपुत्री सौ. कां. सुमन के शुभविवाह के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री सम्पतराज प्रकाशचन्द जी खारीवाल, तिरूवल्लूर-चेन्नई द्वारा सप्रेम भेंट।

५००/- गजियाबाई जी श्रीश्रीमाल, पाली, अपने पतिदेव के संथारे के साथ स्वर्गगमन के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्रीमती सुन्दरबाई जी सांखला, दुर्ग, स्व. श्रीमती हुलासीदेवी जी सांखला की पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री दिनेश कुमार जी विजयचन्द जी, बजरिया-सवाईमाधोपुर, पूज्य पिताजी श्री राजूलाल जी (अध्यापक) का स्वर्गवास दि. १८.१.२००५ को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन (चकेरी वाले), मानसरोवर-जयपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. भावना का शुभविवाह डॉ. दिनेश जी जैन के साथ १५ फरवरी २००६ को सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

२५१/- श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल, जलगांव, अपने सुपौत्र चि. नरेश (सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द जी हुण्डीवाल) संग सौ. नीता सुपुत्री श्री माणकचन्द शंकरलाल जी बुरड, धुलिया की २ फरवरी २००६ को शादी की खुशी में।

२५१/- श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल, जलगांव, कु. सीमा द्वारा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की ११वीं कक्षा में प्रथम स्थान एवं कक्षा १२वीं में ९८.५ प्रतिशत अंक प्राप्त करने एवं उत्तराध्ययन सूत्र, दुर्ग की परीक्षा में १९९ अंक प्राप्त करने की खुशी में।

२५०/- श्री राहुल कुमार जी जैन सुपुत्र श्री शीतलप्रसाद जी जैन, करौली, विदुषी व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवतील जी म.सा. आदि ठाणा ४ के करौली में सपरिवार दर्शन तथा स्वयं के २९वें जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री बाबूलाल जी ज्ञानचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री सूरजमल जी धर्मचन्द जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्री रामप्रह्लाद जी बाबूलाल जी जैन-सुमेरगंजमण्डी, श्री दिनेशकुमार जी सरूपचन्द जी संचेती-शिराजगाँव, श्री उमेशकुमार जी श्रीमती प्रभा जी जैन-कोटा, श्री कमलेश कुमार जी चन्दनकुमार जी जैन-सवाईमाधोपुर, श्रीमती सुन्दरबाई जी सांखला-दुर्ग, श्री देवेन्द्रनाथ जी जी श्रीमती कमला जी मोदी एवं श्री लोकेन्द्रनाथ मोदी, जोधपुर।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार

११०००/- श्री चुन्नीलाल जी जतनराज जी बाघमार, चेन्नई, श्रीमती लताकंवर धर्मपत्नी विजयराज जी बाघमार (पुत्रवधू श्री चुन्नीलाल जी बाघमार) के मासखमण के उपलक्ष्य में।

५०००/- श्रीमान मोहनलाल जी बोहरा, तिरुवन्नामल्लै, संरक्षक सदस्यता।

२१००/- श्री अनिल कुमार जी जितेन्द्र कुमार जी लुणावत, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री देवेन्द्रकुमार जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री गुमानमल जी, श्रीमती इचरजबाई जी लुणावत की पुण्यस्मृति में भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

५०१/- श्री संचालाल जी उत्तमचन्द जी सांखला श्री नन्दलाल जी दलीचन्द जी चोरडिया, निफाड़, श्री विजयकुमार जी कपूरचन्द जी कोचर, कुन्देवाड़ी, स्व. श्रीमती उगमबाई जी हरकचन्द जी कर्णावट की पुण्यस्मृति में भेंट।

जीवदया हेतु साभार

११०००/- श्री सोहनलाल जी महावीरचन्द जी बोथरा, जलगाँव, अर्पित एग्रो इण्डस्ट्रीज प्रा. लि. जलगाँव के एक्सपोर्ट हाऊस बनने की खुशी में सप्रेम भेंट।

१०००/- श्री प्रेमचन्द जी कोठारी, बून्दी, अपने सुपौत्र श्री नितिन जी सुपुत्र श्री ओमप्रकाश जी कोठारी के सी.ए. की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री संचालाल जी उत्तमचन्द जी सांखला, श्री नंदलाल जी दलीचन्द जी चोरडिया, निफाड़। श्री विजयकुमार जी कपूरचन्द जी कोचर, कुन्देवाड़ी, स्व. श्रीमती उगमबाई

जी हरकचन्द जी कर्णावट की पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री शाह झंबरलाल जी नवीनचन्द जी भंसाली (ढीडस वाला), पाली-मारवाड़ की तरफ से स्व. पूज्य पिताजी श्री भीकमचन्द जी भंसाली की पुण्य स्मृति में भेंट।

५००/- श्रीमती कंचनबाई जी आसानी, नागपुर, स्व. भंवरलाल जी आसानी की पुण्यस्मृति में भेंट।

४००/- श्रीमती सुन्दरबाई जी सांखला, दुर्ग, स्व. श्रीमती हुलासीदेवी जी सांखला की पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री बंशीलाल जी इन्दरचन्द जी साहेबचन्द जी कर्णावट (खेडला वाले), वणी, स्व. माताजी स्व. श्रीमती उगमबाई जी हरकचन्द जी कर्णावट का दि. ७ जनवरी २००६ को स्वर्गवास हो जाने पर पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री राजेन्द्रप्रसाद जी जैन (चकेरी वाले), मानसरोवर-जयपुर, अपनी सुपुत्री सौ. कां. भावना का शुभविवाह डॉ. दिनेश जी जैन के साथ दि. १५ फरवरी २००६ को होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

श्राविका मण्डल, जयपुर हेतु साभार

२१००/- श्री अनिल कुमार जी जितेन्द्र कुमार जी लुणावत, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री देवेन्द्रकुमार जी लुणावत सुपुत्र स्व. श्री गुमानमल जी, श्रीमती इचरजबाई जी लुणावत की पुण्यस्मृति में भेंट।

आगामी पर्व

चैत्र कृष्णा ८	गुरुवार,२३.०३.२००६	अष्टमी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का ६८वाँ जन्म-दिवस
चैत्र कृष्णा १४	मंगलवार, २८.०३.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला ८	बुधवार, ०५.०४.२००६	अष्टमी, आयंबिल ओली प्रारम्भ
चैत्र शुक्ला १३	मंगलवार, ११.०४.२००६	भगवान महावीर जन्म-कल्याणक
चैत्र शुक्ला १४	बुधवार, १२.०४.२००६	चतुर्दशी, पक्खी
चैत्र शुक्ला १५	गुरुवार, १३.०४.२००६	आयंबिल ओली पूर्ण

गुण न हो तो रूप व्यर्थ है, नम्रता न हो तो शिक्षा व्यर्थ है।
सदुपयोग न हो तो धन व्यर्थ है, होश न हो तो जोश व्यर्थ है।
भूख न हो तो भोजन व्यर्थ है, साहस न हो तो शस्त्र व्यर्थ है।
बुद्धि न हो तो बल व्यर्थ है, करुणा न हो तो जीवन व्यर्थ है।
सम्यग्ज्ञान न हो तो मानव भव व्यर्थ है।।

आचार्य हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८
श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'

पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता में भाग लीजिए

प्रथम पुरस्कार- १ लाख रुपये

अन्य विविध पुरस्कार

द्वितीय -३१,०००/-, तृतीय- २१,०००/-, चतुर्थ-१५,०००/-

पंचम-११,०००/-, षष्ठ-७,०००/-, सप्तम-५,०००/-अष्टम-३,०००/,

नवम-२,०००/-, दशम- १०० प्रतियोगियों में प्रत्येक को १,०००/-

शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार रुपये ५०/-प्रत्येक

सौजन्य :

श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत की स्मृति में श्री मोफतराज मुणोत परिवार, मुम्बई

प्रतियोगिता की उपयोगिता-

अपने जीवन का निर्माण, आत्मशक्ति एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, आदर्श साधु-जीवन का बोध, जीवन की वैयक्तिक-पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव।

प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि	**- ६ सितम्बर २००६**
शीघ्र प्रतियोगियों हेतु अन्तिम तिथि	**- ५ नवम्बर २००६**
उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि	**- २ जनवरी २००७**
परिणाम घोषणा	**- २९ अप्रेल २००७**

प्रतियोगिता हेतु ९५० पृष्ठ का विशाल ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं २५०/- के स्थान पर मात्र १००/- में तथा प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तरपुस्तिका- ३०/- में उपलब्ध।

प्रश्नपुस्तिका में लगभग ६०० प्रश्न हैं। प्रश्नपुस्तिका दो भागों में विभक्त है। प्रथम खण्ड, पंचम खण्ड एवं आवरण पृष्ठ आदि के प्रश्न प्रथम भाग में तथा द्वितीय,

तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड के प्रश्न द्वितीय भाग में हैं।

डाक अथवा कोरियर से मंगवाने पर-

ग्रन्थ-१००/-+ डाक व्यय ६०/-= कुल १६०/-

प्रश्न पुस्तिका ३०/- + डाक व्यय १०/- = कुल ४०/-

ग्रन्थ एवं प्रश्न-पुस्तिका मंगवाने का पता-

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.)

फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६२४८९१, २६४१४४५, फैक्स-२६३६७६३

विशेष-

- जयपुर, जोधपुर, मुम्बई, चेन्नई, दिल्ली, बैंगलोर, इन्दौर, दुर्ग, अहमदाबाद, जलगाँव, नागपुर, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन सिटी, अजमेर, ब्यावर, उज्जैन, मंडी डबवाली, सिमोगा, हैदराबाद, अलवर, उदयपुर, किशनगढ़, कोटा, पाली, पीपाड़, भरतपुर, बालोतरा, बीकानेर, मेड़ता, हिण्डौन, इचलकरंजी, धुलिया, पुना, जबलपुर, उज्जैन, कानपुर, सूरत, मैसूर, कोलकाता आदि विभिन्न शहरों में यह ग्रन्थ प्रश्नपुस्तिका सहित उपलब्ध कराने की व्यवस्था की जा रही है।
- सकल जैन समाज के आबाल-वृद्ध सभी सदस्य प्रतियोगिता में भाग लें।
- प्रतियोगिता हेतु संरक्षक- मार्गदर्शक मण्डल एवं निर्णायक मण्डल का गठन किया गया है, जिसमें अनेक प्रतिष्ठित महानुभाव सम्मिलित हैं।
- समय-समय पर इस प्रतियोगिता के विषय में जानकारी प्रकाशित की जाएगी।

विशिष्ट नियम-

१. ५५० से कम अंक प्राप्त करने वालों को वरीयता सूची में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

२. शीघ्र प्रतियोगी का पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रतियोगी को ५०० से अधिक अंक लाना अनिवार्य है।

विशेष जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र

संयोजक	उप-संयोजक	महामंत्री
चंचलमल चोरडिया	**डॉ. धर्मचन्द जैन**	**नवरतन डागा**
☎0291-2621454 94141-34606	☎0291-2730081	☎0291-2654427 98280-32215

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079 (T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	**044-28553185, 52145478**
BANGALORE	:	**080-22103267, 22103268**
HYDERABAD	:	**040-23414333, 23414777**
GOA	:	**0832-2420675, 2231190**

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD **NAVARATHAN KAVAD**

RAVINDRA KAVAD **ASHOK KAVAD**

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

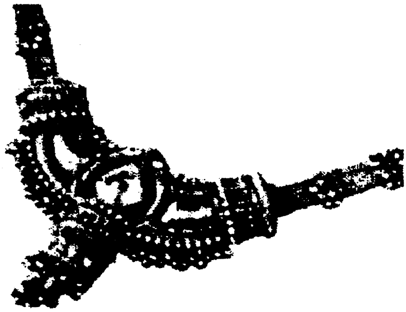

Best Compliments from

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916.KDM)

22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

No.4, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272609, 55666555.

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान॥

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272906, 55689588.

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO., LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,	Tel	:	237-8051, 237-8052
12th Floor, Suite 160-161,			234-7648
Suriwongse Road,	Fax	:	(662) 237-6110
BANGKOK 10500, Thailand	Res	:	437-0910
G.P.O. Box No. 2088	Mobile	:	01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz.,
HSD / CTD Bars, MS Rounds
Structurals Like Flats, Channels
Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

Jai Guru Hasti Jai Guru Heera Jai Guru Man

विश्व को आज शस्त्रधारी सैनिकों की नहीं अपितु शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।

आचार्य श्री हस्ती

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliment From :

NARENDRA HIRAWAT

Flat No. 1, Building No. 2
Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg,
Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office	: 022-56669707, 24370713
Opera House Office	: 022-23884282
Mobile	: 98210-40899

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

आचार्य श्री हस्तीमलजी.म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस,
एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन,
बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।